राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क–१५९

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग ६

(अलवर–संग्रह)

सम्पादक

डॉ० रामकिशन जाटव

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

प्रथमावृत्ति 500

मूल्य रु. 38.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान–सम्पादक
डॉ० पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १५९

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग ९

(अलवर–संग्रह)

सम्पादक
डॉ० रामकिशन जाटव

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
1989

प्रथमावृत्ति 500 मूल्य रु. 38.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान–सम्पादक

डॉ० पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क १५६

सम्पादक

डॉ० रामकिशन जाटव

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुद्रक

पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर

वि. सं. 2046 ई. सन् 1989

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

विविध विषयों और भाषाओं से संबंधित दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों की अद्यावधि जानकारी सहृदय विद्वानों और शोधार्थियों को उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रतिष्ठान में संग्रह किये गये ग्रंथों के सूचीपत्रों के प्रकाशन का सिलसिला उस अविकल सरित्प्रवाह की तरह अन्यान्य ग्रंथों के मिलते रहने तक बना रहेगा। इसी परम्परा में हमारे अलवर-संग्रह के हिन्दी-राजस्थानी ग्रंथों का प्रथम सूचीपत्र विद्वद्जगत् के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

वैसे अलवर-संग्रह में कुल ग्रथ संख्या लगभग 6711 है। लगभग का उल्लेख इसलिये कि नवीन ग्रंथ प्राप्त करने के प्रयास अंशतः ही क्यों न हो, अवश्य ही सफल होते रहते हैं। इनमें से संस्कृत ग्रंथों का सूचीपत्र पूर्व में ही प्रकाशित किया जा चुका है। प्रस्तुत सूचीपत्र में अधिग्रहण सं. 4266 से 6293 में उपलब्ध हिन्दी-राजस्थानी के 992 ग्रन्थों का विवरण उपलब्ध होगा। इनमें कुछ ग्रन्थ पूर्व अलवर राज्य के स्थानान्तरित संग्रह के हैं, वहीं पर भेंट में प्राप्त ग्रन्थों का विवरण भी इनमें समाविष्ट किया गया है। इनमें सर्वश्री पूरणमल शर्मा, लक्ष्मीकांत वैद्य, रामदत्त शर्मा, पीताम्बरदत्त, नन्दनलाल मिश्र, रमेशचंद्र भार्गव, शिवदत्त वैद्य, छिद्दूसिंह, शंकरलाल सक्सेना, प्यारेलाल शास्त्री तथा अमरनाथ सारस्वत का नामोल्लेख न केवल इसलिये आवश्यक है कि उन्होंने ग्रंथ दिये वल्कि इसलिये भी कि ग्रथ-सुरक्षा की उनकी पवित्र भावना के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

सूचीपत्र में आये हुए ग्रंथों के विषय में और विशेषकर उनकी गुणवत्ता के बारे में यदि कुछ कहना है तो पहले यह स्पष्ट करना होगा कि ग्रंथों में डिंगल का स्पर्श नहीं के बराबर हुआ है। कवियों की वाणी राधा-माधव के विलास-वर्णन में जैसे स्फुरित हुई इन ग्रंथो में मिलती है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। एक बात और, अलवर के शासकों में महाराजा विनयसिंह और बख्तावरसिंह के विद्याप्रेम और रचनाशील प्रवृत्ति ने इस परम्परा को मानो पल्लवित करने का कार्य किया। इस प्रकार समृद्ध हुई इस वाग्विलास-परम्परा में भोगीलाल कृत बख्तविलास (715/4795) और साहित्य सुधाकर (758/4812), हरनाथ का विनयविलास (224/4987) अथवा स्वयं विनयसिंह द्वारा लिखी गयी भाषाभूषण की टीका (724/4754) कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनका मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन के इतिहास में अपना महत्त्व है। इनके तथा इसी प्रकार के कुछ अन्य ग्रंथ के आद्यन्त परिशिष्ट-1 में देकर सूचीपत्र को अधिक उपयोगी

बनाने का प्रयत्न किया है। ग्रन्थकार और टीकाकारों की नामावली का युगपत् प्रत्यक्ष परिशिष्ट 3 में होगा।

मानवमात्र की अपूर्णता के लिये किसी प्रमाण की क्या आवश्यकता ? त्रुटि चाहे संकलन में ही रह गयी हो या प्रूफ-शोधक की दृष्टि से ओझल हो गई हो, तो सहृदय से उसके शुद्धीकरण की अपेक्षा की जाती है, वही बात यहाँ पर भी है।

अपनी बात को समाप्त करते हुए यह कहना चाहूंगा कि संकलन-कर्त्ता डॉ० रामकिशन जाटव का यह प्रथम प्रयास एवं शोध के प्रति उनकी सच्ची लगन सर्वथा प्रशंसनीय है। विभागीय कार्यकर्त्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच, प्रूफ-शोधन के लिये तथा पंकज प्रिण्टर्स मुद्रण-संपन्न कराने के लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

पद्मधर पाठक
निदेशक

विषय-तालिका

संकेत

1.	र० का०	रचनाकाल
2.	र० स्था०	रचना-स्थान
3.	टी०	टीका; टीकाकार
4.	स० क०	संकलनकर्त्ता
5.	सं० का०	संकलन-काल
6.	लि० क०	लिपिकर्त्ता
7.	लि० स्था०	लिपिस्थान
8.	वि० सं०	विक्रमी संवत्
9.	श०	शताब्दी
10.	मू०	मूल
11.	गु०	गुटका [अनेक रचनाओं का संकलन]
12.	गो०	गोस्वामी
13.	म०	महाराजा, महात्मा
14.	पृ०	पृष्ठ
15	प०	परिशिष्ट [परिशिष्ट-1 में 'प' चिह्नित ग्रन्थों के आदि-अंत दिये हैं]
16.	सम्पा०	सम्पादक

———

शुद्धि-पत्र

(विवरण—तालिका)

क्रमांक	पृ.सं	कोष्ठक सं.	अशुद्ध	शुद्ध
6	3	5	1641	1631
18	5	2	224	424
19	5	1	33	28
39	9	5		र का. 1832
44	9	1	128	12.8
45	9	1	156	15.6
47	9	5	धमरेडे	धमेरेडे
47	9	5	गोन्विददास शिष्य कृपाराम	कृपाराम शिष्य गोविंददास
51	11	5	—	लि. स्था. लकाणी
59	11	5	—	र. का. 1883
64	13	1	118	11.8
67	13	4	नन्ददास	—
68	13	4	—	नन्ददास
87	17	5	164	16.4
95	17	5	—	नि. स्था. लवाण
104	19	5	—	नि. स्था. बावल
150	27	1	145	14.5
176	30	2	4769	4767
177	30	2	4767	4768
183	32	4	केशवदास	रसिक
193	33	5	228	22.8
210	37	5	—	र. का. 1700 वि.
215	36	3	रुक्मिरिए भंगण	रुक्मिणि मंगल
232	40	4	भा.	मा.
233	41	1	61	16

1	2	3	4	5
246	42	2	4748	4784
248	42	1	प 248	248
249	42	1	249	प 249
258	44	3	सग्रह	संग्रह
259–61	44	4	जगन्नाथ रत्नाकर	रचनाकार का नाम नहीं है
263	45	2	38	39
269	44	4	काल	कालू
277	46	4	—	कर्त्ता-प्राणनाथसोंती
309	53	5	1877	1807
358	60	2	4897	4877
361	60	1	561	361
443	74	2	4675	4676
474	81	1	—	18; 17
493	83	5	1981	1781
499	85	1	21; 13	13; 20
515	86	2	5098 (2)	5098 (3)
529	89	1	27	27 × 35.5
558	93	1	8 × 12.5	8 × 12.2
559	92	2	5023 (3)	5023 (27)
577	94	1	577	567
570	94	3	भागवततग	भागवतगत
572	95	5	चेतननाथ	—
573	95	5	—	चेतननाथ
583	96	4	रामलास	रामलाल
583	97	5	विजयसिह	विनयसिह
650	109	1	155	15.5
669	111	5	भाणा	थाणा
672	111	5	—	जीर्ण
696	115	4	1958	1858
701	117	5	1686	1886
703	117	1	22.4	21.4

1	2	3	4	5
709	116	2	4000	4800
714	119	1	15.8	15
749	125	2	पृ 16	16
755	125	1	125	12.5
816	137	1	16 5	15.6
825	136	2	4735 (1)	4935 (1)
850	141	1	155	15.5
853	141	1	2; 26	7; 26
890	147	4	0	20
891	146	4	गोला	गोपाल
896	149	4	1769	1969
917	151	1	—	8; 16
945	157	1	27.5	27.3
970	161	1	113	11.3
982	163	1	155	15.3

परिशिष्ट—1

पंक्ति	पृ.सं.	शब्द	अशुद्ध	शुद्ध
13	171	4	याह	यांह
17	171	2	500	5001
5	174	3	कुलोदथि	कुलोदधि
18	175	5	लसि	लखि
8	179	3	अकल	सकल
14	181	5	सदा	मद
14	184	1	पुष्पिका	अंत
6	186	5	किरति	कीरती
20	186	4	प्रघठ	प्रघट
8	188	5	सक्किय	रुक्किय
15	199	2	सरस	दरस
6	200	6	इलह	दूलह

1	2	3	4	5
13	212	2	5047	6047
17	214	9	1	11
21	230	8	पय	पथ
22	230	8	गय	गथ
16	231	1	सारण	मारण
18	233	6	नाठटा	नाष्टा
9	241	1	इरम	दूरम

परिशिष्ट–2

23	246	2	4703	4703 (11)
14	247	8	47–48	46–47
15	247	8	46–46	47–48
5	248	6	68-91	68; 91
15	250	2	4709	4709 (8)
17	251	2	5023	5023 (24)
1	252	2	4675	4676
14	257	2	6017	6017 (10)
1	258	2	6017	6017 (13)
13	260	4	140–47	140–141
2	261	5	292–93	202–203
5	263	2	6050	6050 (1)
17	263	2	5995	5995(3)
1	264	2	6124	6124(2)
21	264	2	4678	4678(1)
15	269	5	182–118	182–83
24	269	4	190–9	190–92

राजस्थानी हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग ६

(अलवर-संग्रह)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राज.)

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1. दर्शन 1	5045	अद्वैतानन्दशतक-भाषा	
2	5738 (3)	अध्यात्मप्रकाश	सुखदेव
3	5738 (2)	अष्टावक्रगीता-भाषा	
4	4703 (3)	काया-मूल-ब्रह्मज्ञान	धरमदास
5	4704 (3)	"	"
प 6	4692 (2)	ज्ञानदीपिका	तुलसीदास
7	4696 (2)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास
8	5623	त्रिपदाग्रन्थ (त्रिधापद-निर्णय)	
प 9	6019 (1)	निगमसार	शीतलदास
10	4694 (1)	पंचेन्द्रिय-विचार	सुन्दरदास
11	5995 (1)	पंचोपनिषद्-भाषा	चरणदास शिष्य सुखदेव
12	4700 (3)	योगवासिष्ठ-भाषा	
13	4707 (1)	" (प्रथम-प्रकरण)	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11.3×20.3 9; 25	12	पूर्ण	20 वीं श.	
16×23.5 18; 18	18–30	„	1916	लि. क. माखनदास वैष्णव लि. स्था. रामगढ़
16×23.5 18; 18	18	„	20 वीं श.	
18.5×22.5 13; 20	12–18	„	1948	लि. क. पन्नालाल
17×20.7 15; 22	9–13	„	1948	
15×21.5 20; 17	1–23	„	1856	र. का .वि. सं. 1641
7.8×13 9; 21	70–117	„	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
9×15 6; 14	57	अपूर्ण	20 वीं श.	अन्त अपूर्ण; जीर्ण-शीर्ण
11.5×17.5 7; 18	19	पूर्ण	1894	
7.2×10 8; 13	42	„	20 वीं श.	
13×12 10; 12	38	„	19 वीं श.	
9.3×14.5 11; 27	129-214	„	1812	तदनन्तर पत्र सं.249 तक फुटकर पद व कुछ पत्र अन्य लिपि में लिखे हैं।
19×33 6; 28	228	„	1942	लि. क तनसुख

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1. दर्शन 14	4707 (2)	योगवासिष्ठ-भाषा (द्वितीय-प्रकरण)	
15	4707 (3)	,, (षष्ठ निर्वाण-प्रकरण-उत्तरार्द्ध)	
16	4707 (4)	,, (तृतीय उत्पत्ति-प्रकरण)	
17	4707 (5)	,, (चतुर्थ स्थिति-प्रकरण)	
18	4707 (6)	,, (पंचम उपशम प्रकरण)	
19	4707 (7)	,, ,, (उत्तरार्द्ध)	
20	4707 (8)	,, (उत्पत्ति-प्रकरण)	
21	4707 (9)	,, (निर्वाण-प्रकरण-पूर्वार्द्ध)	
22	5023 (15)	विचार-माला	अनाथदास
23	5024 (15)	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19×33 6;28	137	पूर्ण	1942	लि. क. तनसुख
19×33 6;28	237	अपूर्ण	1944	लि. क. रामचन्द्र; प्रारम्भ में पत्र 1-24 निर्माण-प्रकरण (पूर्वार्द्ध) के अतिरिक्त जुड़े हुए हैं।
19×33 6;28	406	,,	1942	लि. क. तनसुख इस जिल्द में प्रकरण पूरा नहीं है। ग्रन्थांक 4707/8 में इससे आगे का विवरण है।
19×33 6;28	441	पूर्ण	,,	लि. क. तनसुख
19×33 6;28	224	अपूर्ण	1944	लि. क. रामचन्द्र; दो जिल्दों में पूर्ण प्रकरण है।
19×33 6;33	425–735	पूर्ण	,,	,, ,,
19×33.5 6;19	407–55; 479–541	अपूर्ण	20 वीं श.	खण्डित प्रति
19×35 19;19	25–102	,,	1944	1-24 तक के पत्र (दो सर्ग) ग्रन्थांक 4707/3 के साथ जुड़े हुए हैं। 13 'पत्र उपशम प्रकरण' के भी हैं। लि. स्था. अलवर महाराजा मंगलसिंह राज्ये।
10×16 5;12	120–127	पूर्ण	1933	लि क. गंगाधर मिश्र र. का. 1726 वि. सं.
12.5×16.5 8;15	63–67	,,	20 वीं श.	र. का. 1726 वि. सं.

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1. दर्शन 24	4700 (4)	विचारमाला	अनाथदास
25	5995 (2)	वेदान्त-ग्रन्थ	जुगतानन्द
26	4700 (2)	वैराग्यप्रकरण-भाषा	नानक
27	5015	सतमत-निरूपण	
28	4935 (2)	संदेहसागर	चरणदास शिष्य सुखदेव
2. धर्मशास्त्र प 29	5025 (1)	आह्निककर्म	गिरधर
30	5057	तीयारा फूलबीणवारी विधि	
31	5025 (2)	नवग्रह-जपविधि	हरिराय
प 32	4969	परमधर्मनिर्णय-ग्रन्थ	विश्वनाथ देवजू
33	5056	पुत्तलविधि	
34	5174	प्रायश्चित्तविधि	
35	5354	फेरां की पोथी (विवाहविधि)	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
9.3×14.5 10; 21	250–271	पूर्ण	20 वीं श.	र. का. 1726 वि. साथ में पत्रांक 280 तक स्फुट बातें हैं ।
13×12 10; 12	38–45	,,	19 वीं श.	
9.3×14.5 9; 27	2–224	,,	1812	पत्रांक 225-37 व 242-243 तक कुछ विवरण गुरुमुखी लिपि में है। पत्र 237-41, 244-49 तक स्फुट पद हिन्दी में हैं ।
18×18.8 11; 14	380	अपूर्ण	20 वीं श.	
13×17.25 11; 10	25	पूर्ण	19 वीं श.	
14.2×17.7 8; 19	1–5	,,	1950	लि. क. रामलाल
10×15.8 6; 15	1–5	,,	1957	लि. क. आसकरण ओझा लि. स्था. शरवर
14.2×17.7 8; 19	6-36	,,	1950	लि. क. रामलाल
17.5×26.5 24; 21	236+66 =302	,,	19 वीं श.	
11×17.5 7; 19	12	,,	1951	
11.3×20.3 8; 28	4	,,	1955	लि. क. रामनारायण पुरोहित
10.5×15.5 6; 11	59	,,	1885	मन्त्र संस्कृत में हैं ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
2. धर्मशास्त्र			
36	4970 (1)	मनुस्मृति-भाषा	
37	5219	शिवरात्रि पूजा; तुलादान आदि संक्षिप्त-विधि	
3. पुराण			
38	4951	अनन्तव्रत की कथा	
39	4923 (2)	इतिहाससार-समुच्चय (भाषा महाभारत)	जुगतानन्द शिष्य चरणदास
40	5344	,,	लालदास
41	4896 (3)	एकादशीव्रत-कथा	कल्याण पुत्र धरम
42	4962 (2)	एकादशी-कथा-भाषा	धर्मराय
43	4957 (1)	एकादशी-माहात्म्य	
44	4960 (1)	,,	
45	4961 (1)	,, भाषा	
46	5961	,,	भगवंतदास
47	4952	कार्तिकमाहात्म्य-भाषा-टीका (पद्मपुराणगत)	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.2×20 17;20	85	अपूर्ण	1894	
14×31 20;45	2	पूर्ण	20 वीं श.	
10.3×15.1 8.14	11	,,	20 वीं श.	
15.5×20.3 16;16	249	,,	19 वीं श.	
10×29.5 10;40	13	अपूर्ण	20 वीं श.	
11×12.5 10;9	1-22	पूर्ण	1840	लि.क. गंगाविशन
15.6×19.4 13×12	1-61	,,	1936	पौष से कातिक मास तक की एकादशी कथाएं हैं।
15.5×19.9 11;13	1-84	,,	1939	लि.क. शिवजी वेदपाठी
12 8×18.1 13;11	1-88	,,	1910	
15 6×19.4 13;12	1-11	,,	1936	मार्गशीर्ष 'एकादशी माहात्म्य' है।
13×16.5 17;21	7-18	अपूर्ण	19 वीं श.	पद्मपुराण भाषा पद्य में है। साथ में कुछ पत्र पहाड़े व शीघ्रबोध के भी हैं। पौष शुक्ल एकादशी से श्रावण कृष्ण एकादशी तक पूर्ण है। आदि व अन्त अपूर्ण।
16×25.1 15;35	77	पूर्ण	1823	लि.क. गोविन्ददास शिष्य कृपाराम; लि. स्था. धमरेड़े

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3. पुराण			
48	5192	कार्तिकशुक्ल एकादशी-कथा	
49	4962 (1)	गणेश-कथा	रिसाल
50	6024 (4)	गणेशचौथ की कथा	
51	6042 (1)	गणेशजी की कथा	उदयभान कायस्थ
52	4896 (9)	गीता-भाषा (1-5 अध्याय)	
53	5738 (1)	गीता-भाषा	
54	4896 (12)	गीता माहात्म्य-भाषा (अठारहवाँ अध्याय)	
55	4959	गीता-माहात्म्य	भगवानदास निरंजनी
56	6131	,,	
57	5964 (2)	गंगाजी की कथा	लालादास
58	6049	ग्यारस जागरण माहात्म्य	चरणदास शिष्य सुखदेव
59	6059 (1)	चित्रगुप्तजी की कथा-भाषा	आईदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×22.7 12; 32	5	पूर्ण	20 वीं श.	
7.5×10.6 6; 11	45	,,	20 वीं श.	
15×21.5 13; 16	15–17	,,	19 वीं श.	अंत में 'युग प्रमाण' भी दिये हैं।
12×10 12; 14	25	,,	1844	लि. क. मोजीराम कायस्थ,
11×12.5 10; 9	1–41	अपूर्ण	1840	लि. क. गंगाविशन
16×23.5 18; 18	59	पूर्ण	1913	पत्र 1-31 प्रारम्भ में तथा बीच में अन्य कृतियों के बाद 31 से 59 तक हैं।
11×12.5 10; 9	46–54	,,	1840	लि. क. गंगाविशन
11.1×21.1 7; 22	85	,,	1951	र.का. 1744 वि०; पद्मपुराणगत लि. क. लक्ष्मीनारायण शर्मा
16.5×14 11; 16	4–64	अपूर्ण	19 वीं श.	आदि और अन्त अपूर्ण; पद्मपुराण गत।
22×14 16; 11	4–7	पूर्ण	20 वीं श.	
11×15 11; 17	12	,,	19 वीं श.	अंत में स्फुट कविताएं भी हैं।
10×14 9; 19	1–16	,,	1870	पद्मपुराणगत, लि. क. सीताराम कायस्थ, लि. स्था. लवाण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3. पुराण			
60	5068 (3)	चोथमातारी कथा (चंद उगाली री)	
61	5242 (2)	जन्माष्टमी रो कथा	
62	4954	जैमनीय अश्वमेध-भाषा	
63	5488	धर्मकथा-भाषा	
64	5124 (1)	नासकेत-कथा (पद्यानुवाद)	चरणदास शिष्य सुखदेव
65	4949 (1)	नासकेतजीरो कथा (गद्य में)	
66	5068 (7)	”	
67	5241 (1)	”	नन्ददास
68	4948	नासकेत महापुराण-भाषा (गद्य में)	
69	5107	पुराणसंख्या-वर्णन	
70	4907	पूरणमासी-वार्ता	
71	4686	भगवद्गीता-भाषा टीका (परमानन्द प्रबोध टीका) (गद्य-पद्य में)	टी० नाजर आनन्दराम
72	4687	”	”

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×11.5 8; 14	36–50	पूर्ण	1905	पत्र सं. 51-55 पर नरसो मेहता री हुण्डी, कक्का बत्तीसी, हरिजस आदि के प्रारम्भ मात्र हैं।
11.5×25 8.23	5	,,	20 वीं श.	
14.5×20.1 19; 15	169	अपूर्ण	,,	
11.3×15 10; 16	20	पूर्ण	19 वी श.	
11 8×15 12; 12	47–86	अपूर्ण	1844	लि. क. चेतननाथ; कीटभक्षित
14.5×16.1 7; 10	66	पूर्ण	1921	लि. स्था. रत्नपुरी
17.5×11.5 9; 16	86–87	अपूर्ण	1905	
12×25.6 7.26	1–25	,,	1917	18 वाँ पत्र अप्राप्त; लि. क. ठा. खुशाल; जीर्ण
9.6×12.8 7; 10	147	पूर्ण	1839	लि. क. दौलतराम नागल
18×27 10; 36	6	,,	19 वीं श.	भागवतपुराणगत
15.2×21.3 11; 13	पृ० 133	,,	20 वीं श.	
15.5×19.5 17; 15	203	,,	1862	र. का. 1761 वि.; लि. क. नानगराम
15.5×19.5 17; 15	214	,,	1863	,,

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3. पुराण			
73	4688	भगवद्गीता-भाषा टीका (परमानन्द प्रबोध टीका) (गद्य-पद्य में)	टी. नाजर आनन्दराम
74	4689	भगवद्गीता-टीका (सुबोधिनी व भाषा टीका)	
75	4690 (1)	भगवद्गीता-टीका (वचनिका टीका)	
76	4885 (5)	भगवद्गीता (भावार्थ-दीपिका टीका गद्य में)	आनन्दघन
77	4942	भागवत (दशम-स्कन्ध) भाषा	नागरीदास
78	4943	,,	
79	4944	,,	सनेही रामदास
80	4945	,, (एकादश-स्कन्ध) (अध्याय 1–4 तक)	चतुरदास ,,
81	6099	,,	
82	4940	महाभारत-भाषा	सींहण
83	4941	,,	,,
84	4956 (1)	राधा कुण्ड, स्याम कुण्ड-उत्पत्ति	कृष्णदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×21 21; 14	186	पूर्ण	1863	र.का. 1761 वि.; लि. क. देवा माली; लि. स्था. राजगढ़
15.3×31 13; 49	69	अपूर्ण	19 वीं श.	
16×19.8 11; 24	1–51	पूर्ण	20 वीं श.	
13.3×21 9; 21	246	,,	1907	र. का. 1898 वि.; र.स्था. तिजारा, म. बलवंतसिंह राज्ये ।
19.2×27.3 25; 20	219	,,	1833	लि. क. श्रीमाली दवे. लि. स्था. जोधपुर
17.5×30.3 14; 39	218	अपूर्ण	19 वीं श.	
15.2×18.2 13; 16	65	पूर्ण	1930	
15.5×20.9 19; 13	24	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1692 वि.;
15×33 6; 25	288	पूर्ण	1890	र.का. 1692 वि.; लि. क. बलदेव पुजारी; र. स्था. अलवर, म. विनयसिंह राज्ये ।
20.3×30.4 33; 21	302	,,	19 वीं श.	सजिल्द; लि. क. देवा माली, लि. स्था. माचाड़ी ।
20×29.9 29; 21	311	,,	1833	
13.7×27.5 10; 40	1–4	अपूर्ण	1875	लि. क. कूना मिश्र

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3. पुराण			
85	4699	रामगीता-भाषा	
86	4892 (15)	रासपंचाध्यायी	नन्ददास
87	4902	"	आत्माराम
88	4957 (2)	लक्ष्मी-गीता	
89	4960 (2)	"	
90	4691 (3)	"	
91	4698	विज्ञानगीता-भाषा	केशव
92	4949 (2)	शनिश्चर की कथा	
93	4958	"	रामानन्द
94	5099 (2)	"	पीतम माथुर
95	6059 (2)	"	
96	6071 (9)	"	
97	6129 (2)	"	रामानन्द

नाप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12.4×22.4 8; 24	137	पूर्ण	20 वीं श.	
9.6×14.5 6; 20	1–28	"	19 वीं श.	
16 4×22.2 19; 28	2–31	अपूर्ण	1891	लि.क. शिवलाल दुबे; प्रथम पत्र अप्राप्त ।
15.5×19.9 11; 13	84–145	पूर्ण	1939	लि.क. शिवजी वेदपाठी शर्मा; प्रारम्भिक 15 पत्रों में होली के पद आदि हैं ।
12.8×18.1 13; 11	85–156	"	1910	
15.6×19.4 13; 12	1–55	"	1936	
18×24 18; 18	82	"	1912	लि.क. रामगोपाल
14.5×16.1 12; 10	39	"	1921	र.का. 1820 वि. लि. स्था. रतनपुरी
10.4×15.5 8; 18	45	"	1911	
6.8×11.5 6; 10	87	"	1871	
10×14 9; 19	17–49	"	1870	र.का. 1820 वि.; लि.क. सीताराम कायस्थ
12×17 10; 13	11	"	1797	
14.5×20 10; 20	33	"	1932	र.का. 1820 वि.; र. स्था. नीदड़, लि.क. हरदेव मिश्र; लि. स्था. सीमलो

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
3. पुराण			
98	5068 (1)	शनिश्चर की कथा	
99	5068 (4)	,,	
100	4950	शिवरात्रि-कथा	
101	5023 (27)	सप्तश्लोकी-गीता-भाषा	
102	5024 (27)	,,	
103	4604 (19)	सारगीता-भाषा	
प 104	5379	सूर्यपुराण-भाषा	तुलसीदास
4. इतिहास			
प 105	6285	अलवर नरेशों का वंश-वर्णन	
106	4982	कछवाहों की वंशावली	
107	6026 (2)	कामां के राजा की वंशावली	
108	4832 (4)	खांडू महाराज को मरसियो	ठा. फतेसिंह
109	4890 (3)	जसवंतसिंह की वंशावली	
110	4832 (4)	नीसाणी महाराजा बलवंतसिंह की	दुर्गादत्त बारहठ

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×11.5 8; 18	1–24	पूर्ण	1905	
17.5×11.5 11; 18	56–62	अपूर्ण	1890	प्रारम्भिक अंश अप्राप्त है।
10.2×15.4 9; 17	15	पूर्ण	20 वीं श.	
10×16 5; 12	235–37	”	1933	लि.क. गंगाधर मिश्र
12.5×16.5 8; 15	23–25	”	20 वीं श.	
15×20 11; 13	8	”	1935	
13×17 9×17	29	”	1916	लि.क. जीवणराम
18.5×30 21; 16	1–25	अपूर्ण	20 वीं श.	लि. स्था. अलवर; नवीन कागज की कापी पर प्रतिलिपि है, अन्तिमांश अपूर्ण।
16.6×22.7 15; 18	105	पूर्ण	20 वीं श.	
15×21 14; 17	22	पूर्ण	19 वीं श.	
21.5×18 12; 20	59–60	अपूर्ण	1835	
15×21.5 15; 12	1–3	पूर्ण	19 वीं श.	
21.5×18 12; 21	146–153	”	1913	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
4. इतिहास 111	4986	नृपवंश-वर्णन	
112	4832 (4)	महाराजा बलवंतसिंह (उदयपुर) के वंश की सूची	
113	5004 (3)	राजा जैसिंह की वार्ता	
114	4983	राणाओं की वंशावली	
115	5000	वंशावली (श्री गोवर्धननाथजी की)	
116	5186 (2)	वंशावली	
5(1) ऐ.का. 117	4830	पृथ्वीराज-रासो (1–3, 5–8, 17–23, अध्याय पूर्ण) (9 वां अपूर्ण)	चन्दवरदायी
118	4979	पृथ्वीराज-रासो (23 खण्ड पूर्ण)	चन्दवरदायी
119	4980	,, (दो अध्याय)	,,
120	4988 (1)	प्रताप-रासो	जाचक जीवण
121	4989	,, (लछमनगढ़-रासो)	खुशाल

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×22.4 11;28	13	पूर्ण	20 वीं श.	
21.5×18 12;19	83–84	"	1888	
15.5×21.5 14;14	132–155	अपूर्ण	19 वीं श.	साथ में फुटकर कवितादि भी है।
15.9×22.6 11;31	14	पूर्ण	20 वी श.	
16.5×19.5 20;20	4	"	20 वीं श.	
11.4×17 12;18	3–5	"	1758	सूर्यवंशी राजाओं तथा जैनियों की वंशावली है।
17.5×29 33;23	254	अपूर्ण	1803	र.का. 1138 वि.; लि.क. सक्त-चन्द उपाध्याय; लि. स्था. अलवर;
23.8×32 25;20	154	"	19 वीं श.	र. का. 1138 वि०
21.5×28.5 19;22	133	"	1717	लि.क. महात्मा दयाल
17.8×11.6 7;24	17	"	19 वीं श.	सभी पत्र कटे हुए व जीर्ण-शीर्ण; लि.काल. अस्पष्ट।
12.2×18.5 14;10	21	"	1873	र.का. 1834 वि०

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(1)ऐ.का. 122	4990	प्रतापरासो	जाचक जीवरण
123	4991	,, (लछमरणगढ़-रासो)	खुशाल
124	5032	लावायुद्ध (जयपुराधीश जगतसिंह और जोधपुर नरेश मानसिंह का युद्ध वर्णन)	गुपालदान
प 125	5001	वनरूपविहारीजी को विलास	बेजान कवि
प 126	4981 (1)	विनयसिंहजी विजय संग्राम-वर्णन	खुशाल
127	4977	सूरजप्रकाश	कविया करणीदान
128	4978	,,	,,
5(2)काव्य 129	4831	अवतार-चरित्र	नरहरिदास बारहट
130	4886	,,	,,
131	4887	,,	,,
132	4888	,,	,,
133	4760	अष्टजाम	देवकवि (देवदत्त देव)

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×26 20;26	45	पूर्ण	20 वीं श.	
20.5×15.5 13;20	13	"	1967	र.का. 1834 वि.; लि.क. गोविन्दसिंह वर्मा
22.3×34 20;20	79	"	1962	लि.क. कृष्णसिंह देव वर्मा; लि. स्था. खवर गांव; अन्त में दो पत्रों में चन्द कवि कृत 'रय्यणसी राज समयो' भी है।
16.5×23.5 11;23	23	"	20 वीं श.	ग्रन्थ में वर्णन बिनयसिंहजी की बात के रूप में है।
15×20.9 14;16	22	"	1881	र.का. 1881 वि.; लि.क भगवान।
19.3×30 26;26	168	"	1869	स्वर्णिम सीमाङ्कन एवं विराम विभिन्न वर्णों की स्याही में; शोभन प्रति।
18.8×26.5 23;20	191	"	1869	लि.क. नानकराम
21.8×31 27;26	418	"	19 वीं श.	र.का. 1733; वि.; लि.क. लाल व्यास, (कवि व्यास)
28×39 21;28	497	"	19 वीं श.	र.का. 1733; वि.
35.5×25 27;29	319	"	1867	र.का. 1733 वि. लि.क. भूरामल
36.9×28 27;25	343	"	1853	र.का. 1733 वि.; लि.क. हरिवंश; लि. स्था. मौजपुर।
16.5×20.2 14;17	22	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य 134	4761 (1)	अष्टजाम	देवकवि (देवदत्त देव)
135	4762	"	"
136	4796 (2)	"	"
137	5733 (1)	"	"
138	4656 (1)	अलवर-महिमा	हनुमद्दास
139	4796 (3)	आखेट-वर्णन	प्रेमरासि
140	4832 (1)	उद्धवपचीसी	ग्वाल कवि
141	4895 (5)	कलिजुग-रासो	गोविन्द रसिक
142	4872	कवितावली	तुलसीदास गो०
143	4873	"	"
144	4884 (1)	कृष्ण-चरित्र	देव
145	4903	गीतगोविन्द-टीका	मू. जयदेव; टी. अज्ञात
146	4716 (3)	गीतगोविन्द भाषा-टीका	" "

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16.5×21 19; 18	12	अपूर्ण	1903	
15×21.5 19; 19	15	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण
10.2×15.4 11; 21	21	,,	19 वीं श.	
11.6×16.5 9; 18	24–40	अपूर्ण	1860	1–23 तक पत्र अप्राप्त
12×20 7; 26	4	पूर्ण	1947	
10.2×15.4 7; 20	10	,,	1863	
21.5×18 12×23	6	,,	1935	
13.3×10.5 6; 14	6–18	,,	1924	
15×20.3 13; 18	57	,,	1877	लि.क. बखतराम; लि.स्था. अलवर
14.6×19.3 9; 21	90	,,	1891	लि.क. खान जादव, लि.स्था. बहादरपुर
14.5×21.5 15; 12	48	,,	1857	
13.2×22.8 9; 31	2-67	अपूर्ण	1751	लि.स्था. कुन्तलपुर प्रथम पत्र अप्राप्त।
15.8×23 13; 13	30–160	पूर्ण	1918	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
5(2) काव्य 147	4885 (6)	गीतगोविन्द-भाषा	मू० जयदेव भा० आनन्दघन
148	6020	गीतगोविन्द-भाषा	भा० वैष्णवदास
149	4876	गोविन्दानन्दघन	गोविन्द
150	4884 (2)	चित्तचिन्ताहरस	देव
151	4927	जानकी-मंगल	तुलसीदास
152	5023 (7)	"	"
153	5024 (7)	"	"
154	5742 (2)	"	"
155	6017 (14)	"	"
156	6050 (9)	"	"
157	4823	जुगल-विलास	जुगलदास
158	6121 (2)	दीक्षा-मंगल	प्रेम
159	4946	दुर्गाभक्ति-चन्द्रिका	कुलपति मिश्र

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13.3×21 9;21	123	पूर्ण	1900	लि.क. जुगल
16×21 15;15	48	,,	19 वीं श.	र.का. 1814 वि.
19.5×27.5 23;26	150	,,	20 वीं श.	र.का. 1858 वि.; लक्षण ग्रन्थ।
14 5×21.5 15;12	72	,,	1857	
12.8×17.3 4;9	49	,,	20 वीं श.	साथ में 7 पत्र "कमल नैन की बाराखड़ी" के हैं जो सूक्ष्माक्षरों में हैं।
10×16 5;12	57–72	,,	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र
12.5×16.5 8;15	31–38	,,	20 वी श.	
11.3×34.3 9;14	20–26	,,	19 वीं श.	
14×21 13;13	4	,,	19 वीं श.	
10×15 7;20	67-68	अपूर्ण	1870	अन्तिमांश अपूर्ण।
17×22 7;18	20	पूर्ण	1945	
18×13,5 10;21	6	,,	1977	
15.6×22.2 12;22	76	,,	1851	र.का. 1749 वि.; लि.क. गंगाविसन ब्राह्मण; लि. स्था. अलवर

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2) काव्य			
160	4947	दुर्गाभक्ति-चन्द्रिका	कुलपति मिश्र
161	4996	नलोपाख्यान-भाषा	
162	5046	नाथचन्द्रिका	उत्तमचन्द भण्डारी
163	4724 (1)	नीतिमंजरी (भतृहरि नीति शतक भाषा)	सवाई प्रतापसिंह
164	4725 (1)	"	"
165	5802 (1)	"	"
166	5017 (4)	पंच सहेली का दूहा	छीहल
167	4809 (1)	प्रतापपचीसी	शिवचन्द
168	4759 (1)	प्रेमतरंगिणी	देव कवि
169	4890 (2)	"	मुरलीधर
170	6124 (3)	प्रेमपरीक्षा	उदय
171	5734 (1)	बिहारी सतसई	बिहारी

माप से. मी. में; पक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.4×21.3 17; 18	64	पूर्ण	1779	र.का. स. 1749 वि. 9 फुटकर पत्र भी हैं जिनमें ऊधोराम के कवित्त हैं ।
8.5×31.5 6; 14	88	"	20 वीं श.	र.का. 1793 वि.
14.8×23 21; 13	15	"	20 वीं श.	साथ में स्फुट 'दूहा कवित्त' भी हैं।
15×19 9; 13	31	"	1888	लि.क. भगवान ब्राह्मण र.का. 1852
10.8×16 13; 11	1–28	"	20 वीं श.	र.का. 1852
20×21 16; 23	1–10	"	1884	लि.क. रामलाल मिश्र लि.स्था. आभानेरी
10.8×13 11; 16	156–163	"	1749	र.का. 1575 वि.; लि.क. विद्याविनोद; साथ में स्फुट कवित्त आदि के जीर्ण पत्र भी हैं ।
17.2×24.8 19; 16	1–7	"	1912	
16×21.5 18; 13	48	"	1858	लि.क. नानगराम
15×21.5 19; 16	1–22	"	19 वीं श.	र.का. 1886 वि.
12.5×18 10; 21	16	"	1973	
15.2×22 9; 21	46	"	1883	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य			
172	4763	बिहारी सतसई-सटीक (टीका-अनवरचन्द्रिका)	मू० बिहारीदास टी० नवाब अनवर खां
173	4764	,,	,,
174	4765	,,	,,
175	4766	,, (टीका-अमरचन्द्रिका)	मू० बिहारीदास टी० सूरति मिश्र
176	4769	बिहारी सतसई-टीका	मू० बिहारीदास टी० कृष्ण
177	4767	,, (कवित्त बद्ध सहित)	,,
178	5737	,,	,,
179	4877 (4)	बुद्धिविचार	
180	6043	मनीराम-पचीसी	मनीराम
181	6011 (1)	मीतचरित	
182	6027	मूर्खशत-वचनिका	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×17.7 18; 20	88	पूर्ण	1901	र.का. 1771 वि०; लि.क. भगवान; नवाब अनवरखां द्वारा कारित; शुभकरण द्वारा रचित
20×14.7 20; 21	88	"	20 वीं श.	र.का. 1771 वि०; नवाब अनवर खां द्वारा कारित; शुभकरण द्वारा रचित ।
20×14.7 15; 14	110	"	1877	र.का. 1771; नवाब अनवर खां द्वारा कारित; शुभकरण द्वारा रचित
16.5×13 15; 16	168	"	1884	र.का. 1794 वि०; लि.क. रामदयाल, लि.स्था. जोधपुर; टीका अमरसिंह की आज्ञा से बनाई गई ।
15×21 20; 21	156	"	1852	लि.क. हरिवंश
16×22.5 19; 18	156	"	1867	
17.5×23.5 20; 20	3–179	अपूर्ण	1864	र.का. 1782; र.स्था. मधुपुरी
16.6×14 10; 13	50–67	पूर्ण	1840	लि.क. दौलतराम मिश्र
11×16 8; 17	13	"	19 वीं श.	
13×17 12; 10	7	"	20 वीं श.	र.का. 1700 वि०
11×16 9; 11	15	"	1891	लि.क. बलदेवसिंह

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य 183	4832 (2)	रसिक-पच्चीसी	केशवदास
184	4819 (1)	रामचन्द्रिका	,,
185	4820 (1)	,,	,,
186	4878	,,	,,
187	4879	,,	,,
188	4880	,,	,,
189	5732	,,	,,
190	6098	,,	,,
191	4869	रामचरित-मानस	तुलसीदास
192	4871	,,	,,
193	5034	,, (सातों काण्ड)	,,
194	5984 (1)	,, (बालकाण्ड)	,,
195	4984 (2)	,, (अयोध्याकाण्ड)	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21.5×18 12; 13	7-12	पूर्ण	1935	
19.8×24.8 16; 23	105	अपूर्ण	20 वीं श.	
21×29 27; 25	70	पूर्ण	1907	लि. स्था. अलवर
16.9×22.3 15; 17	157	,,	1883	
15×20.3 20; 17	164	,,	1855	
22.9×30.4 13; 15	241	,,	1887	
16×20. 16; 16	200	,,	1897	
17.5×32 13; 36	105	,,	1890	
13.8×29.5 11; 34	391	,,	1885	लि. क. सीसराम ब्राह्मण लि. स्था. अलवर
32×23.5 21; 22	328	,,	1885	लि. क. भगवान लि. स्था. अलवर
16.8×22.8 19; 19	509	,,	1882	लि.क. मिश्र जीवनराम, बलदेव लि. स्था. किशनगढ़
14×30 11; 33	131	,,	1862	लि. क. गंगाधर लि. स्था. किशनगढ़
14×30 11; 33	85	,,	,,	,,

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य 196	5984 (3)	रामचरित मानस (अरण्य-काण्ड)	तुलसीदास
197	5984 (4)	,, (किष्किधा-काण्ड)	,,
198	5984 (5)	,, (सुन्दर-काण्ड)	,,
199	5984 (6)	,, (लंका-काण्ड)	,,
200	5984 (7)	,, (उत्तर-काण्ड)	,,
201	5568	,, (अरण्य-काण्ड)	,,
202	5567	,, (किष्किन्धा-काण्ड)	,,
203	5566	,, (सुन्दर-काण्ड)	,,
204	5569	,, (लंका-काण्ड)	,,
205	5570	,, (उतर-काण्ड)	,,
206	6017 (12)	रामजी की बधाई	अग्रदास
207	6068	राममंगल	तुलसीदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×30 11;33	29	पूर्ण	1862	लि.क. गंगाधर, लि.स्था.किशनगढ़
14×30 10;37	12	"	1841	लि.क. रामसनेही
14×30 10;40	22	"	1841	
14×30 11;33	60	"	1862	लि.क. गंगाधर; लि.स्था.किशनगढ़
14×30 11;33	62	"	1862	" "
17×26.5 13;37	23	अपूर्ण	1917	अंतिम पत्र का त्रुटित
17×25.7 13;34	4	"	1917	जीर्ण-शीर्ण; 3-15 कुछ फटे पत्रों के टुकड़े भी साथ हैं; पत्र 1-2 व 16-17 ही प्राप्त हैं, बीच के फटे हुए हैं।
17×26 13;33	19	पूर्ण	1917	लि. क. मोहनलाल लि. स्था. अखैगढ़
14×30 11;40	66	"	1916	
13.5×30 11;41	52	"	1916	
14×21 14;14	20-27	"	19 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
15.5×11 7;13	5	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य			
प 208	4824	रामरास	रूपदेवो
प 209	4870	रामायण	विश्वनाथसिंह
प 210	6040 (5)	,,	कपूरचन्द्र
211	6021	रामाश्वमेध	तुलसीदास
212	4897	रासरसमंजरी	आनंदकृष्ण
213	4889	रुक्मिणि-परिणय	रघुराजसिंह
214	4926	रुक्मिणी-ब्याहलो	पदमैया
215	4925	रुक्मिणी-मंगल	,,
प 216	5709	वनरावरूपक	चण्डीदान
217	4884 (4)	वाणीविलास (अपरनाम 'भवानीविलास')	देव
218	5802 (4)	विक्रमविलास	गंगापति (गंगेशमिश्र)
219	4867	विनयपत्रिका	तुलसीदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×20.3 10; 14	60	पूर्ण	20 वीं श.	र.का. 1918 वि.
17.3×32.5 9; 33	759	,,	1889	लि. स्था. रीयां
10×16 11; 15	29	,,	1843	
16.5×22 12; 24	41	,,	1884	लि.क. शिवलाल भट्ट
15.5×21.6 17; 18	18	,,	19 वीं श.	र.का. 1877 वि.
33.8×26.2 17; 15	157	,,	1908	
15×20 19; 13	72	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; एक पत्र 'एकादशी' कथा का।
20.2×31 12; 31	79	पूर्ण	1934	लि.क. वन्नालाल; लि.स्था. माधोपुर
22×34.5 37; 27	69	,,	20 वीं श.	कार्यालय द्वारा प्रतिलिपि करवाकर रखी गई है। मूल ग्रन्थ श्री किशनसिंह बारहट के पास है।
14.5×21.5 15; 12	82	,,	1857	लि. स्था. अलवर
20×21 16; 23	31–110	,,	1884	लि.क. रामलाल मिश्र
12×15.5 11; 15	213	,,	1882	लि.क. धनराज मिश्र, अलवर। सुनहरा सीमांकन तथा मुख पृष्ठ की बेलबूंटी दर्शनीय।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य 220	4868	विनयपत्रिका	तुलसीदास
221	4955 (2)	,,	,,
222	6250	,,	,,
223	5035 (2)	विनयमुक्तावली	रेवतसिंह
प 224	4987 (1)	विनयविलास (राजश्री दूषण-भूषण वर्णन)	हरनाथ
प 225	4993	विवाहविनोद (विनयसिंह-विवाहोत्सव)	रामलाल
226	4709 (9)	वृन्दसतसई	वृन्दकवि
227	4722	,,	,,
228	4723	,,	,,
229	4730	,,	,, ,,
230	4829	,,	,,
231	5738 (4)	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.5×31 22;23	69	पूर्ण	1913	लि.क. लक्ष्मण; लि.स्था. मोजपुर
15.9×21.5 20;18	5	अपूर्ण	20 वीं श.	12 पद मात्र
32×12.5 12;49	57	पूर्ण	19 वीं श.	
11×17.5 8;21	11–13	,,	20 वीं श.	
17×24 21;18	14	,,	1875	र.का. 1875 वि.
16×22.5 17;12	36	अपूर्ण	20 वीं श.	अन्तिमांश नहीं।
16.2×19.5 13×16	72	पूर्ण	1935	र.का. 1761 वि. र. स्था. ढाकाशहर
18.4×24 14;16	57	,,	1911	र.का. 1761 वि.; र. स्था. ढाकाशहर; लि.क. शिवराम
17×22.5 17;19	41	,,	1873	र.का. 1761 वि. र. स्था. ढाकाशहर।
14.3×20 13;14	61	,,	1904	र.का. 1761 वि.; र.स्था. ढाका-शहर; लि.क. भवानाबकस, लि. स्था. आभानेरी।
17×21.5 13;15	56	,,	20 वीं श.	र.का. 1761 वि.
16×23.5 18;18	50	अपूर्ण	20 वीं. श.	अंत अपूर्ण; र.का. 1761, र. स्था. ढाकाशहर।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2) काव्य 232	4724 (3)	वैराग्यमंजरी (भर्तृहरि वैराग्यशतक-भाषा)	भा० सवाई प्रतापसिंह
233	4725 (3)	,,	,,
234	5802 (3)	,,	,,
235	4691	वैराग्यशतक	देवदत्त 'देव'
236	4692 (1)	,,	,,
प 237	5033	शिवदान-पचीसी	जगन्नाथ
238	4818 (1)	शिवदान-प्रकाश	इन्द्रकंवर
प 239	4827	शिवदान-विनोद (माधवीवसंत)	चन्द्रशेखर वाजपेयी
प 240	4821	शिवरूपमंगल	रूपमंगल
241	4790	शृंगार तरंगिनी	मुरलीधर
242	4724 (2)	शृंगारमंजरी (भर्तृहरि-शृंगार शतक भाषा)	भा. सवाई प्रतापसिंह
243	4725 (2)	,, ,,	,,
244	5802 (2)	,, ,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×19 9; 13	59–91	पूर्ण	1888	र.का. 1852 वि.
10.8×61 13; 11	51–76	"	20 वीं श.	र.का. 1852 वि.
20×21 16; 23	18–29	"	1884	र.का. 1852 वि. लि.क. रामलाल मिश्र
20.7×16 17; 12	27	"	1856	लि. क. देवमाली; लि. स्था. माचाड़ी; काली भूमि पर सफेद अक्षर हैं ।
15×21.5 17; 13	1–24	"	1856	
17×23 16; 28	3	"	21 वीं श.	
10.7×17 6; 17	2–7	अपूर्ण	20 वीं श.	लि.क. लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्रथम व अंतिम पत्र अप्राप्त ।
28.2×20 19; 19	60	पूर्ण	20 वी श.	
15.5×20.5 9; 13	47	"	1948	
15.2×20.2 13; 15	99	"	19 वीं श.	
15×19 9; 13	32–58	"	1888	
10.8×16 13; 11	28–50	"	20 वीं श.	
20×21 16; 23	10–18	"	1884	लि.क. रामलाल मिश्र ।

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)काव्य 245	4759 (2)	शृंगार-विलासिनी (शृंगारविनोद)	देव कवि
प 246	4748 (1)	सभाप्रकाश	चित्तप्रकाश (रूपरसिक)
247	4955 (1)	समरविलास	चंद कवि
प 248	5111 (8)	सीता-स्वयंवर	
249	6011 (2)	सुशीलाकल्कि-वर्णन	
250	5742 (3)	स्याम-सगाई	नंददास
5(3)स्फु. काव्य 251	4832 (7)	अक्षरार्थमंजरी	रूपदास
252	5035 (4)	अन्योक्ति व्यंग्यावली	रेवतसिंह
253	4832 (16)	अभिलाख-पचीसी	
254	6289	कवित्त (दो)	तेजदान बारहठ
255	6015	कवित्त-दूहा-संग्रह	"
256	4788	कवित्त-सवैया	घनानन्द

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×21.5 18; 13	10	पूर्ण	1858	
16.5×20.8 7; 21	19	,,	1967	यह भक्ति की रचना है। इसमें लेखक का रूपरसिक भी नाम मिलता है।
15.9×21.5 20; 18	1–47	अपूर्ण	1882	लि.क.. बेजान मिश्र; म. विनयसिंह राज्ये; पत्र सं. 15-45 तक अप्राप्त।
11.5×15.8 11; 17	17–22	पूर्ण	1845	लि.क. उदैराम; साथ में दो-तीन आरतियाँ भी हैं।
13×17 12; 10	11	अपूर्ण	20 वीं श.	अंत अपूर्ण। अंतिम दो पत्रों में फुटकर वर्णन भी है।
11.3×34.3 9; 14	27–36	पूर्ण	19 वीं श.	
21.5×18 12; 23	177–185	,,	1935	र.का. 1895 वि०; लि.क. मोतीराम; लि.स्था. रत्नपुर
11×17.5 8; 21	16–24	अपूर्ण	20 वीं श.	
21.5×18 12; 23	250–252	पूर्ण	1935	लि.क. मोतीराम लि.स्था. रत्नपुर
33.5×21 20; 16	1	,,	21 वीं श.	आधुनिक कागज की कापी के एक पत्र पर दो कवित्त हैं, जिनमें अलवरनरेश श्रीतेजसिंह के पौत्र के जन्म का वर्णन है।
14×15 8; 18	43	,,	1894	लि.क. जगन्नाथ; लि.स्था. अलवर
18.5×25 17; 16	84	,,	20 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2)स्फु. का. 257	4787	कवित्त-सवैया-फुटकर	शेख आलम
258	6045	कवित्त-सग्रह	जगन्नाथ रत्नाकर
259	4680	गजल-संग्रह	,,
260	5181 (2)	गुढ़ा	,,
261	6054 (3)	चारों दिशामा कवित्त, प्रतीत-परीक्षादि	,,
262	5035 (3)	चीरहरणलीला एवं स्फुट कवित्त	रैवतसिंह
प 263	5027 (2)	जयविलास-प्रहेलिकात्रिशती	
264	5010 (2)	,,	
265	4709 (8)	ढोलामारू-प्रेमवर्णन	,,
266	4726	तर्जुमां गुलिस्ताँ	मू. शेखसादी
267	5023 (6)	तुलसी के दोहे	गो॰ तुलसीदास
268	5024 (6)	,,	,,
269	4697 (1)	दूहासार	काल, पूरनदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.4×24.8 17; 23	41	पूर्ण	1905	
11×15 6; 14	51	"	1885	
16×20.3 13; 13	29	"	20 वीं श.	
11.5×16 12; 10	9	"	1883	अंत में 3 पत्र 'पितृ-संहिता' के भी हैं।
10×15 9; 13	19	अपूर्ण	1854	
11×17.5 8; 21	14–16	पूर्ण	20 वीं श.	
15.8×20.5 11; 15	13-49+2 =38	"	20 वीं श.	दो पत्र स्फुट प्रहेलिकाओं के हैं। यह ग्रन्थ म० जयसिंह की आज्ञा से बनाया गया है।
15.7×19.8 11; 17	13–47 +2=37	"	20 वीं श.	" "
16.2×19.5 13; 12	2–4	अपूर्ण	1935	यह रचना 4709(8) के परिशिष्ट क्रमाङ्क 2 की है।
17.2×20.5 12; 20	185	पूर्ण	20 वीं श.	
10×16 5; 12	38–56	"	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र
12.5×16.5 8; 15	21–30	"	20 वीं श.	
14×21 20; 19	1–6	"	1818	लि. क. दिलाराम कायस्थ लि. स्था. कोलनगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)स्फु. का. 270	5023 (9)	दोहे (राग जंगलो)	रंग कवि
271	4713 (3)	दोहे	तुलसी, बिहारी
272	4714 (2)	नवरतन	
273	6067	नवरत्न छप्पय	
274	4832 (11)	नवरत्न बिधा	
275	4710	नवरत्न-भाषा	
276	5010 (1)	पहेली-शतक	प्राणनाथ सोंती
प 277	5027 (1)	,,	
278	5008	पहेली-संग्रह	नवाब अमीर, अमीर खुसरो, मीरनिमोल
279	5009	,,	अमीर खुसरो, बीरबल आदि
280	5011	,,	
281	5474	पुष्पचिन्तामणि	
प 282	5751	पुष्प-मंजरी	परसोत्तम

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×16 5; 12	95–104	पूर्ण	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र
15×21.3 13; 14	10–15	,,	20 वीं. श.	
16×21 12; 15	25–28	,,	1877	
9.5×14 6; 18	6	,,	19 वीं. श.	र. का. 1895 वि.
21.5×18 12; 23	240-242	,,	1935	लि. क. मोतीराम लि. स्था. रतनपुर
9.5×16.5 5; 15	8	,,	20 वीं श.	स्वर्णिम सीमांकन।
15.7×19.8 11; 17	1–12	,,	20 वीं. श.	
15.8×20.5 11; 15	1–13	,,	20 वीं. श.	
9.2×12.2 5; 13	2–15	,,	20 वीं. श.	पत्र 1, 7–10 अप्राप्त
10×15.7 6; 17	10	,,	20 वीं. श.	
10.5×15.3 10; 10	5	,,	20 वीं. श.	
21.5×65 31; 14	1	,,	1937	खरड़ा।
12.5×16.9 14; 15	6	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)स्फु का. 283	4895 (6)	प्रेम-बारखड़ी	
284	4602 (16)	फाग आदि स्फुट छन्द	रसिक प्रवीन
285	4883 (2)	फुटकर-कवित्त	बेनी, देव, दूलह, कालिदास, हरिकेस, मंसाराम
286	6024 (2)	,,	बिहारी आदि
287	6024 (6)	,,	रसखान, अभैराम
288	6026 (1)	,,	
289	6035 (1)	,,	
290	6040 (1)	,,	नरहरि
291	6053 (4)	,,	जसवंत, रसखान, गोविन्ददास, देव, ठाकुर, पद्माकर
292	4832 (20)	फुटकर कवित्त, दोहादि तथा श्लोक	बिहारी, तुलसी, सुन्दरदास, कबीर. स्वरूपदास, भास्कराचार्य, शंकराचार्य, लालकवि
293	4896 (8)	फुटकर कवित्त-दोहा	देवीदास, तुलसीदास
294	6012 (3)	फुटकर कवित्त-दोहादि	बिहारी, गिरधर अन्य अज्ञात

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13.3×10.5 6; 14	19–28	पूर्ण	1924	
11×16 11; 11	3	,,	1917	
15.5×21 19; 20	10	,,	1868	
15×21.5 13; 16	2–11	,,	19 वीं श.	
15×21.5 13; 16	20–22	,,	19 वीं. श.	
15×21 10; 18	3	,,	19 वीं. श.	
10×15 10; 13	1–5	,,	1864	लि. क. रघुनाथ लि. स्था. कामवन
10×16 11; 15	3	,,	19 वीं. श.	
10×15 9; 17	3-37+14 +7=(56)	,,	1885	
21.5×18 12; 23	275-416	,,	1935	लि. क. मोतीराम लि. स्था. रत्नपुर
		,,		
11×12.5 10; 9	17–20	,,	1840	लि. क. गंगाविशन
12×19 20; 15	5+3=8	,,	1731	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)स्फु. का. 295	6054 (1)	फुटकर कवित्त दोहादि	आलम, अन्य अज्ञात
296	6058 (2)	,,	देव, तुलसीदास, गंग, बिहारी आदि।
297	4703 (11)	फुटकर गजलें	गालिब, मोहम्मद, औलिया, मौला, अनलहक मंसूर
298	4704 (11)	फुटकर छन्द (वेत 1-2)	गालिब, मोहम्मद औलिया, मौला
299	4828	फुटकर दोहे एवं पद	विष्णुदास
300	4789 (5)	फुटकर सवैया आदि	
301	4832 (4)	फुटकर संग्रह	चरणसिंह कोठारी, लक्ष्मणसिंह बारहठ, बांकीदास, जयदेव आदि
302	4833	फुटकर संग्रह (हनुमानजी की बारखड़ी)	
303	4896 (5)	बारखड़ी	नन्दराम
304	4975	बारखड़ी (लिपिज्ञान की)	
305	4976	बारखड़ी (लिपिज्ञान की)	
प 306	4832 (12)	बारहमास	केशवदास
307	4641 (6)	बारहमासा हरनाम	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×15 9; 13	1-12+27 वां=13	पूर्ण	1854	लि. स्था. अलवर
11×15 6; 21	3-24	,,	1880	
18.5 ×22 13; 20	45-56	,,	1948	
17×20.7 15; 22	67-72	,,	1948	लि.क. गोविन्दसिंह वर्मा
13.4×21.5 9; 23	40	,,	20 वीं श.	प्रकीर्ण पत्र 40 हैं, क्रमाङ्क अस्तव्यस्त हैं।
10.4×15.5 12; 13	41	,,	20 वीं श.	
21.5×18 12×23	31-165	,,	1935	सभी कवियों का विषय वार-विवरण परिशिष्ट में है।
13.5×16 8; 11	14	अपूर्ण	19 वीं श.	परिग्रहण पञ्जिका में व पुस्तक पर 'हनुमानजी की बारहखड़ी' नाम गलत प्रतीत होता है।
11×12.5 10; 9	5-9	पूर्ण	1840	लि. क. गंगाविशन
14×19 11; 13	7	,,	20 वीं श.	
15×24.5 9; 10	11	,,	20 वीं श.	सुनहरी बोर्डर।
21.5×18 12; 23	242-245	,,	1935	लि.क. मोतीराम लि. स्था. रत्नपुर
10×14 10; 7	1-13	,,	1943	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)स्फु. का. 308	6040 (3)	बारहमासी	
309	5068 (10)	बारामासा	
310	6053 (3)	बारामासी	भवानीदास
311	6054 (2)	,,	
प 312	4832 (5)	भैर-बावनी	म० बलवंतसिंह
313	4810	रसखान के कवित्त (राधा-वर्णन)	रसखान
314	6039 (2)	राममंगल	गो० तुलसीदास
315	5953 (3)	रासलीला	गंगाधर
316	6050 (10)	वंशीलावनी	
प 317	4731	वसन्तबहार (गुलिस्ताँ-भाषा)	वसन्त-मृगेश
318	4832 (3)	विवेकवारता	गाडण केशोदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×16 11; 15	11	अपूर्ण	19 वीं. श.	
17.5×11.5 8; 14	108-111	पूर्ण	20 वीं श.	सं० 1877 वि. की प्रति से प्रतिलिपि की गई प्रतित होती है। 112–114 पर शकुनावली, स्फुट सवैया आदि हैं।
10×15 9; 13	1–3	,,	1885	लि.क. विशनलाल लि. स्था. कामा
10×15 9; 13	8	,,	1854	
21.5×18 12; 23	165-169	,,	1935	र.का. 1899 वि०
13.8×19.3 17; 15	3	अपूर्ण	20 वीं. श.	
11×16 9; 12	4	पूर्ण	19 वीं. श.	
13×8 6; 14	74–80	,,	1930	
10×15 7; 20	68–71	,,	1870	
16.5×24.1 23; 17	201	,,	20 वीं. श.	र.का. 1910 वि०; महाराजा मृगेश की आज्ञा से निर्मित। वसंत कवि का अपरनाम ऋतुराज भी है।
21.5×18 12; 13	12–30	,,	1935	र.का. 1935 वि०; शुरू में एक पद रसखान कृत तथा कुछ अन्य के हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(3)स्फु. का. 319	4602 (12)	शिवमहिमा-छप्पय	अमरजा
320	4832 (6)	सारासार-पच्चीसी	
321	4789 (4)	स्फुट कवित्त	घनानन्द
322	4963 (3)	स्यामकवि के सवैये	स्याम-कवि
323	5023 (8)	"होरेकेसो" (लोकगीत-केसोजी)	
6 नी.शा. 324	4714 (1)	चाणक्यनीति (राजनीति) भाषा	उम्मेदराम बारंठ
325	6056	,, ,,	,,
326	4701	तत्वबोध-भाषा(नृपभूषण)	चिरंजीलाल
327	4713 (2)	रत्न	भोगीलाल
328	4714 (3)	रतन (राजनीति)	
प 329	4711 (2)	राजनीति (आईने अकबरी) (गद्य में)	अकबर

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति.	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×16 11;11	7–8	पूर्ण	1917	
21.5×18 12;23	170-177	,,	1935	र.का. 1922 वि०; लि. क. मोतीराम; लि. स्था. रत्नपुर। म० शिवबकसजी के पठनार्थं।
10.4×15.5 11;10	63	,,	1800	लि.क. हेमराज लि. स्था. रूपनगर
15.5×18.5 14;19	39–45	अपूर्ण	19 वीं श.	अंत के कुछ पत्र फटे हुए व चिपकाये हुए हैं।
10×16 5;12	73–95	पूर्ण	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र
16×21 12;15	1–25	,,	1878	
10.5×15.5 9;18	59	,,	19 वीं. श.	र. का. 1873 वि. लि. स्था. अलवर
12×14.7 10;10	11	अपूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण; र. स्था. कोलनगर; प्रथम पृष्ठ में 3 श्लोक मात्र मूल नृप भूषण के हैं। कौने फटे हुए।
15×21.3 13;14	1–9	पूर्ण	20 वीं श.	
16×21 12;15	28–36	,,	1877	
12.5×19 11;12	6–14	,,	20 वीं श.	आइने अकबरी के कुछ अंश को लेकर ही यह ग्रन्थ रचा गया है।

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
6 नी.शा.			
330	4713 (4)	राजनीति (आईने अकबरी) (गद्य में)	अकबर
331	4714 (7)	,,	,,
332	4832 (18)	राजनीति प्रश्नोत्तर वारता	
333	4712	राजनीति-भाषा	उम्मेदराम बारैठ
334	4713 (1)	,,	,,
335	4714 (5)	,,	,,
336	4715	,,	,,
337	4716 (1)	,,	,,
338	4716 (2)	,,	,,
339	4884 (3)	राजनीति-वर्णन	देव
340	4714 (4)	सतउपदेस	उम्मेदराम बारैठ
341	4717	सभासार-नाटक	रघुराम

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×21.3 13; 14	15-21	पूर्ण	20 वीं श.	आइने अकबरी के कुछ अंश को लेकर ही यह ग्रन्थ रचा गया है।
16×21 12; 15	48-55	,,	1877	,,
21.5×18 12; 23	255-263	,,	1935	लि.क. मोतीराम लि.स्था. रतनपुर
15.5×20.5 15; 14	6	,,	20 वीं श.	
15×21.3 13; 14	21-28	,,	20 वीं श.	
16×21 12; 13	36-43	,,	1877	
10.5×15.8 8; 21	67	,,	1872	
15.8×23 13; 13	1-23	,,	1918	
15.8×23 13; 13	24-29	,,	1918	
14.5×21.5 15; 12	27	,,	1857	
16×21 12; 15	43-48	,,	1877	
16.5×21 18; 20	37	,,	1850	र.का. 1757 वि.; लि.क. लक्ष्मीनाथ प्रश्नोरा; साथ में तीन फुटकर पत्रों में कविताएं हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
6 नी.शा. 342	4711 (1)	लुकमान हकीम की नसीहत (गद्य में)	लुकमान हकीम
243	4729 (2)	,,	,,
344	4832 (8)	,,	,,
345	6055	,,	,,
7 भ.मा. 346	5804 (6)	अखैराम की वाणी (शब्द)	अखैराम
347	5804 (2)	अखैसार	,,
348	4914 (2)	अन्नकूट की लीला	कल्याण
349	4832 (17)	अवधूत-पचीसी	
प 350	5183	अम्बु-सागर	जगजीवन
351	6017 (6)	असीस-वर्णन	
352	4919	अष्टाक्षरी-भाषाटीका	मू० विट्ठलदास
353	4920	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12.5×19 11; 12	1–6	पूर्ण	20 वीं श.	
15.5×21 13; 11	6	,,	1937	लि. क. पीताम्बर दशोरा
21.5×18 12; 13	185-188	,,	1935	लि.क. मोतीराम लि. स्था. रत्नपुर
11×16 9; 13	8	,,	19 वीं श.	
16×22 19; 15	85–101	,,	20 वी श.	र.का. 1933 वि; यह ग्रन्थ अखैरामजी के शिष्य जीवन मिश्र द्वारा सकलित किया गया है।
16×22 19; 15	11–19	,,	20 वीं श.	र.का. 1808 वि.
13.5×17 12; 12	15	,,	20 वीं श.	
21.5×18 12; 23	252-254	,,	1935	लि.क. मोतीराम लि. स्था. रत्नपुर
18×22.5 18; 17	85	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; आद्यन्त अपूर्ण; पत्राङ्कन अव्यवस्थित हैं।
14×21 14; 16	11–12	पूर्ण	19 वीं. श.	
18×22.5 12; 14	28	,,	1949	लि. क. धन्नालाल
13.5×16.5 16; 16	19	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 354	5811	आरती पद सरसविहारी	सरस माधुरी
355	4918 (4)	आश्रय के पद	कृष्णादास, सूरदास, रसिक
356	4705	कबीरदासजी की वाणी	कबीर
357	4706	"	"
358	4897 (7)	"	"
359	5182	कबीरदासजी की साखी	कबीर
प 360	6127 (1)	करुणावेलि	वृन्दावनदास
361	4896 (4)	कृष्ण-नामावली	दयाराम
362	4892 (2)	कृष्णाश्रय-भाषाटीका	मू॰ वल्लभाचार्य
363	5024 (8)	केशव-भजन (हरिकेसो)	
364	5804 (5)	क्षेत्रलीला	अखैराम शिष्य चरणदास
365	6017 (8)	खिचड़ी	सुन्दरदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×14 15; 19	7	पूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण
14.5×15.5 11; 16	43–50	,,	20 वीं श.	
16.5×21.5 11; 17	162	अपूर्ण	20 वीं. श.	
16×20 9; 14	22	,,	20 वीं श.	
16.6×14 13; 10	12	,,	1840	
18×26 9; 19	101	,,	20 वीं श.	
21×16.5 10; 23	1–9	पूर्ण	20 वीं श.	चैतन्यचरितामृतम आदि के अंतिम नवें पत्र में स्फुट श्लोक-भजन हैं । र.का. 1804 वि; लि. क. गंगाविशन ।
11×12.5 10; 9	1–5	,,	1840	
9.6×14.5 8; 26	18–64	,,	19 वीं श.	मूल ग्रन्थ के श्लोक भी हैं।
12.5×16.5 8; 15	39–50	,,	20 वीं श.	
16×22 19; 15	68–85	,,	20 वीं श.	र. का. 1812 वि०
14×21 14; 16	15–16	,,	19 वीं श.	जीर्ण-जीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 366	4934 (1)	गर्भावली	गोरखनाथ
प 367	6128 (2)	गीतामृतगंगा	वृन्दावनदास
368	5123	गुणसागर-भाषा (दौलतरामजी महाराज री वांणी)	दौलतराम
369	5993	गुरुमहिमा	जीवन, रैदास, कबीर
370	5028	गुसांईजी की वार्ता	
371	4875	गोकुलचन्द्रमाजी के घर की उत्सवमालिका	
372	4924	गोकुलनाथजी के चोवीस वचनामृत	गोकुलनाथ
373	4885 (2)	गोपीगीत-सभाषाटीका	मू० वेद व्यास टी० अज्ञात
374	4936 (3)	गोरख-वोध	
375	5124 (3)	गोरख-वाणी	गोरखनाथ
376	4921	गोवर्द्धन-बावीसी	चतुर्भुज
377	5098	गोवर्द्धनलीला	नंददास
378	4956 (4)	गोवर्धनयात्रा	कृष्णदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10.6×16.4 6; 17	9	पूर्ण	20 वीं श.	
18×28 14; 14	184	,,	1974	
13×16.5 13; 19	9	,,	1919	गद्य में ही 'गुरु-शिष्य का संवाद' है।
10×14 8; 17	2–5	अपूर्ण	1903	प्रथम पत्र अप्राप्त
14.5×18 15; 10	42	,,	20 वीं श.	
15.8×19.8 12; 18	112	पूर्ण	20 वीं श.	
16×18.5 14×15	45	,,	20 वीं श.	
13.3×21 8; 46	5–8	,,	1900	हिन्दी पद्यानुवाद सहित।
16.3×21.5 18; 22	21–33	,,	20 वीं श.	इस ग्रन्थ में गोरख-मत्स्येन्द्र एवं गोरख-शिव-संवाद हैं।
11.8×15 12; 12	127-134	,,	1844	कीट भक्षित; लि.क. चेतननाथ
16.8×20.5 14; 19	3	,,	20 वीं. श.	
13.8×18 15; 11	29–40	,,	19 वीं श.	
13.7×27.5 10; 40	6–7	,,	1875	लि.क. कूना मिश्र

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा.			
379	4832 (14)	ग्यानोदीपन-पचीसी	
380	4693 (5)	ग्रहवैराग्य-बोध	सुन्दरदास
381	5068 (9)	चितावणी	रामचरण
382	4702	चिन्तावणी	खुस्यालीराम शिष्य भानुदास
383	5068 (11)	चीरलीला	
384	4792	चौरासी	हितहरिवंश
385	6066	चौरासी वैष्णव-कथा	,,
386	5699 (6)	छव्यष्टक	ललितकिशोरी
387	4960 (3)	छीतमजी की कडी	छीतमजी
388	4961 (4)	,,	,,
389	4933	जमुनाजी के पद	रसिकप्रीतम, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास आदि
390	4885 (3)	जुगलगीत (भागवतगत)	
391	5699 (4)	जुगलविहार शतक	ललितकिशोरी

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21.5×18 12;23	246-248	पूर्ण	1935	लि.क. मोतीराम लि. स्था. रत्नपुर
13.5×20.5 18;19	2	,,	20 वीं श.	जीर्ण
17.5×11.5 8;14	102-103	अपूर्ण	20 वीं. श.	पत्राङ्क 104-106 पर स्फुट कवित्त हैं।
8.1×12 4;5	85	पूर्ण	20 वीं. श.	आगे कुछ प्रकीर्ण पदों के पत्र भी हैं।
17.5×11.5 9;18	114-118	,,	1905	अंत में स्फुट कवित्त भी हैं।
17.4×24.8 17;19	26	,,	19 वीं. श.	लि. क. रामनाथ
8×13 6;13	98	,,	19 वीं. श.	
18.7×27.3 17;33	37-38पृष्ठ	,,	20 वीं. श.	
12.8×18.1 13;11	157-160	,,	1910	
15.6×19.4 13;13	55-58	,,	1936	
12.9×17 9;20	14	,,	20 वीं. श.	
13.3×21 8;46	9-14	,,	1900	
18.7×27.3 15;35	24-31	,,	20 वीं. श.	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 392	5699 (5)	जुगलविहार-शतक	ललितकिशोरी
393	5697 (2)	जुगलशत	जैश्री भट्ट
394	5704 (2)	जुगलशतपद-भूषण	,,
395	4934 (2)	ज्ञानतिलक	गोरखनाथ
396	5123 (2)	ज्ञानमंगल	दौलतराम
397	4960 (4)	ज्ञानलीला	रामानन्द
398	4961 (5)	,,	,,
399	4709 (1)	ज्ञान-समुद्र	सुन्दरदास
400	5804 (3)	ज्ञानसमूह-ग्रन्थ	अखैराम
401	4693 (3)	तरक-चिन्तामणि	सुन्दरदास
402	4892 (5)	त्रिविध-नामावली	वल्लभाचार्य
403	6053 (2)	दधिलीला	परमानंददास
404	4696 (1)	दादूजी की वाणी	दादूजी

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.7×27.3 17; 35	31–37	पूर्ण	20 वीं. श.	
12×15.5 14; 18	37	,,	1968	
18×25 20; 13	11	,,	20 वीं श.	
10.6×16.4 6; 17	58	,,	20 वीं श.	
13×16.5 13; 19	10–20	,,	19 वीं श.	साथ में 'बधावा' एवं स्फुट पद्य भी हैं।
12.8×18.1 13; 11	160-162	,,	1910	लि. क. रामजीवन लि. स्था. किशनगढ़;
15.6×19.4 13×12	58–59	,,	1936	
16.2×19.5 13; 16	1–50	,,	1935	
16×22 19; 15	19–39	,,	20 वीं श.	
13.5×20.5 18; 19	3	,,	20 वीं श.	
9.6×14.5 8; 26	161-171	,,	19 वीं श.	
10×15 9; 13	9–14	,,	1885	लि.क. विसनलाल कायस्थ लि. स्था. कामा
7.8×13.5 9; 21	1–69	,,	18 वीं श.	जीर्ण-शीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 405	4695	दादूजी की साखी	दादूजी
•406	4659 (2)	दानलीला	कृष्णदास
प 407	4822 (1)	,,	बख्तावरसिंह (अलवरनरेश)
408	4892 (13)	,,	माधुरीदास
409	4893	,,	म० बख्तावरसिंह
410	4894	,,	,,
411	4895 (2)	,,	अलिभगत
412	5111 (6)	,,	जिणवाल्लभ
413	6035 (2)	,,	रामकृष्ण
414	6035 (3)	,,	किशनदास
415	6050 (2)	,,	
416	6053 (1)	,,	
417	5029	धोल	माधवदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.5×24 18;19	492	पूर्ण	1903	लि.क. भगवान
14×16 12;16	5	,,	1893	लि. क. नानूदास
15×21 19;17	20	,,	1907	र.का. 1854 वि०
9.6×14.5 8;26	179-185	,,	19 वीं. श.	
13.5×19 16;15	29	,,	19 वीं. श.	र.का. 1854 वि० लि. स्था. अलवर
14×26.4 13;35	1–14	,,	1854	,, ,,
13.3×10.5 6;14	13–21	,,	20 वीं. श.	
11.5×15.8 11;17	13–14	,,	1845	लि. क. उदैराम
10×15 10;13.	5–15	,,	1864	लि. क. रघुनाथ लि. स्था. कामवन
10×15 10;13	15–18	,,	1864	,, ,,
10×15 7;20	15–17	अपूर्ण	19 वीं श.	
10×15 9;13	1–9	पूर्ण	1885	लि.क. विशनलाल
9×15.8 6;15	15	,,	1937	लि.क. मथुरालाल चौवे

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 418	4675	धोलसंग्रह	केशवदास
419	5704 (3)	ध्यानलीला	ध्यान (दास) ?
420	4822 (2)	ध्रुवचरित्र	जनगुपाल
421	4877 (5)	,,	,,
422	5273	,,	,,
423	4838 (3)	ध्रुवलीला	मुरली कवि
424	4678 (5)	नरसीजी को भात	बसंत
425	4678 (3)	नरसीजी को माहेरो	
426	4913	,,	
427	5809	,,	
428	6033 (1)	नरसी मेहता को ब्यावलो	शिवजीराम
429	4912	नरसी मेहता को मामेरो	तन्नालाल
430	5068 (8)	नरसी मेहता री हुण्डी	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×20.8 17;14	72+9 =81	पूर्ण	20 वीं. श.	जीर्ण-शीर्ण
18×25 20;13	4	,,	20 वीं श.	
15×21 19;17	20	,,	1907	
16.6×14 10;13	68–101	,,	1840	लि.क. मिश्र दौलतराम
14×16.5 12;24	1–40	अपूर्ण	20 वीं. श.	4–6 पत्र अप्राप्त; जीर्ण-शीर्ण ।
15.5×21.5 20;15	7	पूर्ण	1818	
16×23 23;15	151–154	,,	19 वीं. श.	
16×23 22;15	96–100	अपूर्ण	19 वीं. श.	जीर्ण-शीर्ण
16×23 9;23	74	पूर्ण	1934	लि.क. तन्नालाल लि. स्था. माधोपुर
8×17 6;22	15	,,	1914	लि.क. स्योलाल ब्राह्मण लि, स्था. अखैगढ़
12×15 11;13	2–12	,,	1845	
17.5×21.5 21;22	8	,,	ई. सन् 1947	लि.क. पुरुषोत्तम; बीच के पत्र त्रुटित हैं ।
17.5×11.5 9;16	88–100	,,	1905	पत्र 101 पर भी नरसी मेहता की हुण्डी का प्रारम्भ किया गया है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 431	4818 (2)	नागलीला	गंगाधर
432	4908	नाममाला-चिन्तवणि	द्वारकेश गो०
433	6017 (5)	नामावली	
434	5698 (2)	निकुञ्जविलास	
435	4932	नितलीला	हरिराय
436	4673	नित्य के पद व बधाई आदि	कृष्णदास, नंददास, सूरदास, परमानंददास, चतुर्भुजदास, गोविन्ददास, कुम्भनदास, रामदास, गदाधर आदि।
437	5018 (1)	निरोधलक्षण-भाषा टीका	मू० बल्लभाचार्य टी० हरिराय
438	6017 (3)	नंदरायजी की वंशावली	हितहरिवंश
439	6017 (4)	,,	किशोरीदास
440	5024 (25)	पद आदि स्फुट	कबीर, पीपा
441	5024 (29)	पद-सोरठा आदि	मीरा, कबीर, रूपदास
442	5023 (29)	पद-सोरठा आदि फुटकर	,, ,, ,,

नाप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10.7×17 6; 17	35–37	अपूर्ण	20 वीं. श.	जीर्ण; लि.क. लक्ष्मीनारायण शर्मा; आद्य पत्र अप्राप्त ।
17.4×26.7 19; 14	79	पूर्ण	1793	
14×21 14; 16	9–11	"	19 वीं. श.	जीर्ण एवं फटे पत्र
14.3×21 16; 13	13+3 =16	अपूर्ण	20 वीं. श.	साथ में स्फुट राग-रागनियाँ भी हैं ।
14.6×20.4 7; 10	26	पूर्ण	20 वीं. श.	
15×18 13; 14	22	"	20 वीं. श.	
15×18 13; 15	97	"	1858	
14×21 14; 16	4–5	"	19 वीं. श	
14×21 14; 16	5–8	"	19 वीं. श.	
12.5×16.5 8; 15	21–22	"	20 वीं. श.	
12.5×16.5 8; 15	25–34	"	1916	
10×16 5; 12	239-255	"	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 443	4675	पद-संग्रह	सूरदास, कुम्भनदास, परमानंददास किशोरीदास, नन्ददास, कृष्णदास, गरीबदास, चतुर्भुजदास, गोबिन्दस्वामी, तुलसीदास, माधोदास आदि ।
444	4696 (4)	,,	दादू, कबीर, सुन्दरदास, रामादेवी, मीरां ।
445	4696 (6)	,,	सुन्दरदास, गरीबदास, जनगोपाल, तुरछीदास आदि ।
446	5808 (1)	,,	सूर, तुलसी, ईश्वरदास ।
447	6017 (10)	,, (राधा-कृष्ण बधाई आदि)	कृष्णदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, हरिदास ।
448	6017 (13)	पद-संग्रह	हितहरिवंश, बिहारीदास, श्रीभट, विट्ठल, बल्लभरसिक, सूरदास, गदाधर, चत्रभुजदास, सुन्दरदास आदि ।
449	6057	,,	सूरदास, परमानंददास, नन्ददास, चतुर्भुज, ब्रजनिधि, बैजूबावरो, तानसेन, आनदघन, श्रीव्यास, छीतस्वामी, दामोदर, नागरीदास, कृष्णजीवन, सेवादास, गोविन्द, तुलसीदास, हरिदास ।

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×20 17;21	127	पूर्ण	1903	लि.क. नीलकंठ व्यास
7.8×13 9;21	279-347	"	20 वीं. श.	
7.8×13 9;21	351–55	"	18 वीं. श.	जीर्ण-शीर्ण ।
14×18 13;15	4	"	20 वीं. श.	जीर्ण; कुल 11 पद हैं ।
14×21 14;14	19–26; 1–6	"	19 वीं. श.	जीर्ण
14×21 14;14	27–235	"	19 वीं. श.	
15×24 15;13	20+2 =22	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.ना. प 450	5708	परशुराम-सागर	परशुराम
451	6083 (3)	पार्वत्प्रसंग (बिहारी)	बिहारी
452	4678 (2)	पालनू के पद	मथुरादास, परमानंद, सूरदास, आसकरन, जगन्नाथ, चतुर्भुज, नन्ददास, लछीराम ।
453	6025 (4)	पींपाजी की परचई	
454	4703 (2)	पीरमुरीदाष्टक	सुन्दरदास
455	4704 (2)	"	"
456	4877 (3)	प्रह्लाद-चरित्र	जनगोपाल
457	6025 (3)	"	"
458	4709 (4)	प्रेम-प्रकाश	सवाई प्रतापसिंह
459	5301	प्रेमभक्ति-चन्द्रिका	नरोत्तमदास
460	4709 (3)	फाग-ग्रन्थ	सवाई प्रतापसिंह
461	4892 (4)	फाग डोल-उत्सव आदि के पद	माधव

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21.5×34 15;21	151	पूर्ण	1973	लि.क. कृष्णदास लि. स्था. वृन्दावन
11×9 5;18	10–30	"	19 वीं श.	
16×23 18;17	27–31	"	20 वीं श.	
		"		
16×17 16;19	55	"	1843	
18.5×22.5 13;20	11–12	"	1988	
17×20.7 15;22	8–9	"	1948	
16.6×14 10;13	22–50	"	1840	लि.क. दौलतराम मिश्र
16×17 16;19	14	"	1843	
16.2×19.5 13;16	31–37	"	1935	
13.5×23.2 11;31	10	"	20 वीं श.	
16.2×19.5 13;16	21–30	"	1935	
9.6×14.5 8;26	89–160	"	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 462	4896 (14)	फुटकर कवित्त आदि	केशोदास, सुन्दरदास, तुलसीदास
463	5002 (3)	,,	देवीदास, देव, ताज कवि
464	4709 (8)	फुटकर कवित्त दोहा	घनानंद लालदास, सूरदास, सोनादास, कबीर, कुंभनदास।
465	6050 (1)	,,	रसखान, पदमाकर, सूर, कबीर।
466	6065 (1)	फुटकर कवित्त दोहा आदि	तुलसी अन्य अज्ञात
467	4789 (1)	फुटकर कवित्त सवैया (राधा-कृष्ण सम्बन्धी)	विट्ठल, अन्य अज्ञात
468	5024 (9)	फुटकर दोहा	तुलसीदास, अकबर, कबीर
469	5023 (25)	फुटकर पद	कबीर, पीपा
470	5995 (3)	फुटकर भजन	जुगतानन्द, चरणदास, मीरांबाई।
471	6124 (2)	,,	कृष्णदास, परमानन्ददास, चतुर्भुज, नन्ददास, रूपलाल, रसिकबिहारी, हरिदास, सूरदास।
472	6017 (11)	फूलमहल के पद	
473	4696 (5)	बखनाजी को ब्याहलो	दामोदर शिष्य दादूदयाल

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×12.5 10;9	64–76	पूर्ण	1840	लि.क. गंगाविशन
15.2×21.4 14;13	4	,,	1867	लि.स्था. राजगढ़
16.2×19.5 13;16	11	,,	1935	
10×15 7;20	1–14	,,	1870	
8.5×9.5 8;17	1–6	,,	1917	छठे पत्र में कुछ ब्रज सम्बन्धी संस्कृत में श्लोक भी हैं।
10.4×15.5 11;10	20	,,	18 वीं. श.	
12.5×16.5 8;15	51–54	,,	20 वीं श.	
10×16 5;12	231-232	,,	1933	लि. क. गंगाधर मिश्र
13×12 10;15	1–2, 46–57	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण
12.5×18 10;15	21	पूर्ण	20 वीं श.	
14×21 13;13	6–19	,,	19 वीं श.	जीर्ण
7.8×13 9;21	348-350	,,	18 वीं श.	अति जीर्ण

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 474	4678 (1)	बधाई व शृंगार आदि के पदादि	हितहरिवंश, गरीबदास, मानदास, सूरदास, रामराय, चतुर्भुजदास, परमानंददास, आनंदघन, अग्रदास, जनगोबिंद, माधोदास, दिव्यगुपाल, कृष्णदास, हरिनारायण, नंददास, तुलसी, मुरारीदास, किशोरीदास, ब्रह्मदास, गंगाराम।
475	4896 (15)	बलि-चरित्र	रामदास सतवादी
476	5699 (8)	बाराखड़ी	ललितकिशोरी
477	5699 (9)	,,	,,
478	5699 (10)	बारामासी	,,
479	5699 (11)	,,	,,
480	6024 (1)	,,	नंददास
481	6039 (1)	,,	,,
482	6048	बिरह की बाराखड़ी	
483	5698 (1)	बैरागसार	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×23	1–27, 31–96, 100–115 116–145 146–150, 168–186, 190–192,	पूर्ण	19 वीं. श.	जीर्ण-शीर्ण साथ में 146 वें पृष्ठ पर जयदेवकृत कुछ श्लोक भी हैं। इन पदों के साथ बीच-बीच में अन्य कृतियां भी हैं।
11×12.5 10;9	76–84	"	1840	लि.क. गंगाविशन
18.7×27.3 18;31	पृ०39–41	"	20 वीं. श.	
18.7×27.3 17;36	पृ०41–43	"	20 वीं श.	
18.7×27.3 17;38	पृ०43–44	"	20 वीं श.	
18.7×27.3 17;34	पृ०45–50	"	20 वीं श.	
15×21.5 13;16	1–2	"	19 वीं. श.	
16×11 9;12	4	"	19 वीं. श.	
11×15.5 6;23	6	"	1881	
14.3×21 16;12	71	अपूर्ण	20 वीं श.	साथ में स्फुट पद भी हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 484	4681	ब्रह्मानन्द-भजन-माला	ब्रह्मानंद
प 485	4915	भक्त-उपदेशिनी	शिवानन्द
486	4910	भक्तपक्ष के पद	अग्रदास
487	6024 (3)	भगतमाल	नवलदास
488	4874	भक्तमाल-सटीक (टीका-सुबोधिनी)	मू. नाभादास; टी॰ प्रियादास
489	4930	,,	नाभाजू (नारायणदास)
490	5805	,,	,,
491	6016	भक्तमाल	
492	4923 (1)	भक्ति-प्रबोध	जुगतानन्द
493	4928	भक्ति-सागर	चरणदास
494	4708	भरतरी सुलतानी रो सतसंग मंडन	गिरधर गणेश
495	4832 (19)	भरमविहंडन	

नाप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×17.8 10; 10	160	अपूर्ण	20 वीं. श.	
10.5×17 7; 20	16	,,	20 वीं श.	अंकनानुसार पत्र पूर्ण हैं, परन्तु छन्दों में 26वें के बाद 31 तक अप्राप्त हैं। र.का. 1871 वि.
15.9×25.2 16; 12	26	पूर्ण	20 वीं. श.	
15×21.5 13; 16	11–15	,,	19 वीं. श.	
15.5×21.3 14; 15	204	,,	1881	लि.क. भगवान टीका र.का. 1769 वि.
13.5×20.5 21; 15	192	,,	1825	लि.क. केसोराम
15.5×15.5 12; 20	1–27 24–236	अपूर्ण	1827	
11×18 6; 14	28	पूर्ण	20 वीं. श.	नाभाजू कृत भक्तमाल के भक्तों की सूची मात्र।
15.5×20.3 16; 16	200	,,	19 वीं. श.	जीर्ण; र.का. 1824 वि.
20.5×32 21; 21	218	,,	1942	र.का. 1981 वि.
21×31.8 17; 13	48	,,	20 वीं. श.	लि.क. रेवती बाई लि.स्था. मथुरा
21.5×18 12; 23	263–275	,,	1935	लि.क. मोतीराम लि.स्था. रतनपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 496	5018 (2)	भावना	मू. वल्लभाचार्य टी. अज्ञात
497	4696 (7)	भीषजनजी की बावनी	भीखजन शिष्य संतदास
498	4789 (3)	भोरलीला	नागरीदास
499	4703 (7)	भ्रमतोड़	संतदास
500	4704 (6)	"	"
501	4885 (4)	भ्रमर-गीत (भागवतगत)	
502	5742 (1)	भ्रमर-गीत (स्नेहलीला)	जनमोहन
503	6050 (8)	"	"
504	4914 (3)	मदनमोहनलाल नी सांझ तथा पदादि	कल्याण
505	4703 (9)	मनको अंग	सुन्दरदास
506	4704 (8)	"	"
507	5695	महावाणी अष्टकाल सेवासुख	हरि व्यास देवजू
508	5696	महावाणी-सिद्धांतसुख	"

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×18 11;12	98–103	पूर्ण	1858	
7.8×13 9;21	356-368	,,	18 वीं. श.	अतिजीर्ण; र.का. 1683 वि०
10.4×15.5 11;10	7	,,	1799	लि.क. नानगराम
18.5×22.5 21;13	21	,,	1948	लि.क. धन्नालाल
17×20.7 15;22	46–55	,,	1948	लि क. गोविन्दसिंह
13.3×21 8; 6	15–17	,,	1900	
11 3×34.3 9;14	19	,,	19 वीं. श.	
10×15 7;20	51–67	,,	1870	लि.क. विसनलाल श्रीवास्तव लि. स्था. अलवर
14 5×17.5 14;12	16–30	,,	20 वीं श.	
18.5×22.5 13;12	24–34	,,	1948	
17×20.7 15;22	57–61	,,	1948	लि.क. गोविन्दसिंह
10×15.5 15;14	70	,,	20 वीं. श.	साथ में स्फुट पद भी हैं ।
10×15.5 15;13	51	,,	1984	लि.क. गंगाबकस; लि. स्था. राजगढ़

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 509	5699 (7)	माधुरी-अष्टक	ललितकिशोरी
510	4892 (14)	मान-माधुरी-लीला	माधुरीदास
511	4895 (1)	मानलीला	ध्रुवदास
512	4709 (6)	मुरलीविहार	सवाईप्रतापसिंह
513	4918 (2)	मूलपुरुष (श्रीवल्लभाचार्य का वंशवर्णन)	
514	5111 (1)	मोरध्वज-लीला	
515	5098 (2)	मोरध्वज-लीला एवं फुटकर धमाल आदि	
516	5002 (2)	मोहमरद की कथा	जगन्नाथ
517	6025 (2)	"	
प 518	5707	युगलानंद-समुद्रलहरि	कृष्णदास
519	5068 (5)	रणलीला (रासलीला)	
520	5697 (1)	रतनमाला	हरिदास, हितहरिवंश
521	4674	राग-भैरवी सरगम	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.7×27.3 17;34	पृ.39–39	पूर्ण	20 वीं श.	
9.6×14.5 8;26	185-192	,,	19 वीं श.	
13.3×10.5 6;14	12	,,	20 वीं श.	
16 2×19.5 13;16	43–46	,,	1935	
14.5×15.5 11;16	21–29	,,	20 वीं श.	श्रीवल्लभाचार्यजो के जन्म का दोहा भी है जिसमें वि.स. 1535 माधोमास कृष्णा 11 का उल्लेख है । लि.क. उदैराम; आदि अपूर्ण
11.5×15.8 11;17	4–7	अपूर्ण	1845	
13.8×18 15;11	27	पूर्ण	19 वीं. श.	
15.2×21.4 19;15	74–85	,,	1863	
16×17 17;19	22–28	,,	1843	लि.क. मथुरादास ब्राह्मण
18×27.5 14;18	324	,,	1977	र.का. 1852-53 वि०
17.5×11.5 9;16	63–68	,,	1880	पत्र 67-71 पर अंत में स. 1845 के लिखे स्फुट कवित्त, भलु आदि है ।
12×15.5 12;24	7	,,	1968	
15.7×19.8 15;17	42	,,	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 522	5702 (3)	राधाजी की स्तुति	सूरदास
523	5803	राधाविहारीजी के विनय के पद	सरसमाधुरी
524	4896 (13)	रामचरित्र	सुन्दरदास
525	5023 (19)	,,	,,
526	5024 (19)	,,	,,
527	5490	,,	,,
528	6017 (12)	रामजी की बधाई	अग्रदास
529	4917 (2)	राधा-बालविनोद	सुन्दर
530	4917 (1)	राधा-मंगलप्रिया	,,
531	4963	रासपंचाध्यायी	नन्ददास
532	5744	रासपंचाध्यायी-भाषा	,,
533	6033 (2)	रासपंचाध्यायी	,,
534	5068 (14)	रासलीला	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.3×22 10; 25	2	पूर्ण	1966	लि.क. शिवनारायण लि.स्था. अलवर
18.5×23.5 13; 18	52	"	19 वीं. श.	
11×12.5 10; 9	54–64	"	1840	लि.क. गंगाविशन
10×16 5; 12	183-202	"	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर
12.5×16.5 8; 15	95–106	"	20 वीं. श.	
11×14.5 7; 14	12	"	20 वीं. श.	
14×21 14; 14	20–26	"	19 वीं. श	
2 ⁄ 24; 32	9–24	"	20 वीं. श	24वां पत्र फटा हुआ ।
27×35.5 24; 32	1–8	"	20 वीं श.	र.क. 1910 वि०
15.5×18.5 14; 19	24–39	"	19 वीं. श.	
11.5×16.3 13; 11	31	"	1902	लि.क. हरदेव कायस्थ लि.स्था. अलवर
12×15 11; 13	29	"	1845	
17.5×11.5 10; 18	128-132	"	1905	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 535	4809 (2)	रूपमंजरी	नंददास
536	4703 (8)	रेखता	संतदास
537	4704 (7)	,,	,,
538	4891	,,	रतनलाल
539	6017 (2)	लाडलीजी की बधाई	नागरीदास
540	6013	लालदासजी के नुकते	हरखचंद भगत
541	6017 (9)	वंशावली श्रीराधाजू	किशोरीदास
542	4895 (4)	वंशीलीला	सूरदास
543	4918 (1)	वल्लभ-आख्यान	गोपालदास
544	4727 (1)	वल्लभरसिक की वाणी	वल्लभ रसिक
545	4677	वल्लभाचार्यवंश-वर्णन	
546	4892 (3)	वसन्तभावना	हरिराय
547	5804 (4)	विचार-चरित्र	अखैराम

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17.2×24.8 19; 16	7–29	पूर्ण	20 वीं. श.	पत्र सं. 28 के बाद 27 व 30 के बाद 29 लगे हुए हैं।
18.5×22.5 13; 20	21–24	"	1948	
17×20.7 15; 22	55–56	"	1948	लि.क. गोविन्दसिंह
9×14.4 4; 12	1–59	"	20 वीं श.	
14×21 22; 19	1–4	"	19 वीं श.	जीर्ण
13×12 7; 9	145	"	1840	
14×21 13; 13	17–18	"	19 वीं श.	जीर्ण
13.3×10.5 6; 14	1–5	"	20 वीं श.	
14.5×15.5 11; 16	1–21	"	20 वी श.	
10.2×14 5 8; 14	1–20	"	19 वीं. श.	
11.6×17.9 9; 21	8	"	20 वीं श.	
9.6×14.5 8; 26	64–89	"	19 वीं. श.	
16×22 19; 15	39–67	"	20 वीं. श.	र.क. 1810 वि०

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा			
548	6070 (2)	विट्ठुल विपुलजी की वाणी	विट्ठुल विपुल
549	5699 (12)	विनय के पद	ललितकिशोरी
550	5699 (1)	विनयशृंगार-शतक	,,
551	5699 (13)	विनयशृंगार	,,
552	4832 (3)	विमेकवार री निसाणी	केशोदास गाडण
553	4703 (1)	विपर्यय को अंग-सटीक	सुन्दरदास
554	4704 (1)	,,	,,
555	4809 (3)	विरहमंजरी	नन्ददास
556	4693 (4)	विवेकचिन्तामणि	सुन्दरदास
557	4694 (3)	,,	,,
558	5022 (3)	,,	
559	5023 (3)	,,	सुन्दरदास
560	5024 (27)	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
7.5×10 5;12	121–157	पूर्ण	1859	र. स्था. वृन्दावन यमुना किनारे
18.7×27.3 19;31	50–80	"	20 वीं श.	बीच-बीच में खाली पत्र हैं।
18.7×27.3 12;30	पृ. 9	"	20 वीं श.	
18.7×27.3 18;24	8	"	20 वीं श.	अत में कुछ पत्र खाली है।
21.5×18 12;23	13–31	"	1935	
22.5×18.5 13;20	1–10	"	1948	
17×20.7 15;22	1–8	"	1948	
17.2×24.8 19;16	29–35	"	1912	
13.5×20.5 18;19	3	"	20 वीं श.	जीर्ण
7.2×10 8;12	49–59	"	20 वी श.	
8×12.5 6;8	19	"	19 वीं. श.	
10×16 5;12	137–149	"	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर
12.5×16.5 8;15	72–78	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 561	4929 (2)	वृन्दावनविहारी-विलास (राधा-मेला)	
562	5501	वृन्दावन-महिमा	नंददास
563	4728	वृन्दावनशत	ध्रुवदास
564	4901	,,	चतुरदास
565	5098 (1)	,,	ध्रुवदास
566	5699 (2)	,,	ललितकिशोरी
577	5699 (3)	,,	,,
568	6050 (5)	,,	ध्रुवदास
569	6052	,,	,,
570	4885 (1)	वेणुगीता-सटीक (भागवततग)	मू. वेदव्यास
571	5186 (3)	वैराग्य के पद	
572	4727 (2)	व्यासजू की वाणी	व्यासजू
573	5124 (2)	व्रज-चरित्र	चरणदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10.5×16 7; 14	8–126	पूर्ण	1872	लि.क. देवा बागवान माली लि. स्था. अलवर
10×15 10; 15	6	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण
8.3×10.5 6; 12	28	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1686 वि०
12×18.3 9; 26	38	,,	18 वीं श.	र.का. 1707 वि०
13.8×18 15; 11	23	अपूर्ण	19 वीं श.	र.क. 1686 वि० साथ में 5 पत्र हनुमानजी की स्तुति व देवाधि-देव स्तोत्र के हैं।
18.7×27.3 15; 33	पृ. 9–17	पूर्ण	20 वीं श.	
18.7×27.3 15; 33	पृ. 17–24	,,	20 वीं श.	
10×15 7; 20	28–45	,,	19 वीं. श.	र.का. 1686 वि०
10×14 7; 13	21	,,	1892	र.का. 1686 वि०
13.3×21 8; 46	5	,,	1900	
11.4×17 12; 18	6–8	,,	1758	
10.2×14.5 8; 14	102	,,	19 वीं श.	लि.क. चेतननाथ
11.8×15 12; 12	87–106	,,	1844	जीर्ण एवं कीट भक्षित;

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 574	4604 (7)	व्रज-चौरासी कोस यात्रा-वर्णन	
575	4602 (11)	व्रजधाम यात्रा-वर्णन	
576	4914 (1)	व्रजनाथजी नी कविता आदि	कल्याण
577	4900	व्रजयात्रा	
578	4703 (9)	शत्रु-संहार	सेवादास
579	4704 (9)	,,	,,
580	4877 (1)	शबद	कबीरदास
581	4922 (4)	,,	सहजोबाई
582	4931	शिक्षापत्र	हरिराय
प 583	4953	शिवभक्तिसागर (शिवपुराण-भाषा)	रामलास
584	4909	श्री गुसाँईजी के सेव्यस्वरूप	रमणलाल
585	6017 (1)	श्रीभट्ट के पद	श्रीभट्ट
586	4713 (5)	सत उपदेश ग्रन्थ	उम्मेदराम बारैठ

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×20 11; 13	12–18	पूर्ण	1936	
11×16 11; 11	1–7	,,	1917	
14.5×17.5 14; 12	1–15	,,	20 वीं. श.	
13.7×21.1 12; 12	98	,,	1886	
18.5×22.5 13; 20	35–45	,,	1948	
17×20.7 15; 22	61–66	,,	1948	लि.क. गोविन्दसिंह वर्मा
16.6×14 10; 13	6	,,	1840	लि.क. मिश्र दौलतराम
11×17.5 13; 13	68–91	,,	1981	र.का. 1800 वि०; स्था. दिल्ली परिक्षितपुरा; लि.क. रामसहाय
14.5×23 20; 18	52	,,	1983	लि.क. बीधाराम; लि.स्था. राधा-कुण्ड; पत्राङ्क 47 वां अप्राप्त ।
20.5×28.9 17; 15	66	अपूर्ण	20 वीं श.	4 पत्र अतिरक्त; म. विजयसिंह राज्ये, अलवर में निर्मित्त; कवि भरतपुर निवासी ।
16.2×19.3 15; 18	22	पूर्ण	19 वीं. श.	
14×21 16; 16	3	,,	19 वीं. श.	साथ में सूरदास की 'वंशीलीला' भी है ।
15×21.3 13; 14	28–33	अपूर्ण	20 वीं श.	प्रारम्भ में पत्रांक 28-30 तक फुटकर छंद है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 587	4832 (15)	सर्वमत्तसुचन-पचीसी	
588	4693 (1)	सवैया-संग्रह	सुन्दरदास
589	4709 (2)	,,	,,
590	4703 (4)	सहजप्रकाश	सहजोबाई
591	4704 (4)	,,	,,
592	4922 (1)	,,	,,
593	5806 (1)	,,	,,
594	5806 (4)	सहजोबाई की वाणी (शब्द)	,,
595	4703 (6)	सातवार-निर्णय	,,
596	4704 (6)	,,	,,
597	4922 (3)	,,	,,
598	5806 (3)	,,	,,
599	6017 (7)	साथिये सवासिनी	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21.5×18 12; 23	248–250	पूर्ण	1935	लि.क. मोतीराम; लि.स्था. रतनपुर
13.1×20.3 18; 19	1–90	,,	20 वीं. श.	
16.2×19.5 13; 16	1–20	,,	1935	अंत में कुछ सूर के पद भी हैं।
18.5×22.5 13; 20	1–37	,,	1948	लि.क. धन्नालाल
17×20.7 15; 22	13–41	,,	1948	
11×17.5 13; 13	1–59	,,	1981	र.का. 1800 वि.; र.स्था. दिल्ली परीक्षितपुरा; लि.क. रामसहाय
13 5×17.5 16; 14	1–46	,,	1942	र.का. 1800 वि.; लि.क. रामसहाय शर्मा; लि.स्था. उमरेण
13.5×17.5 16; 14	53–71	,,	1942	लि.क. रामसहाय शर्मा; लि.स्था. उमरेण
18 5×22.5 13; 20	5–7	,,	1948	लि.क. धन्नालाल
17×20.7 15; 22	44–45	,,	1948	लि.क. गोबिंदसिंह
11×17.5 13; 13	65–67	,,	1981	र.का. 1800 वि.; लि.स्था. परीक्षितपुरा। लि.क. रामसहाय;
13.5×17.5 16; 14	51–53	,,	1942	लि.क. रामसहाय शर्मा; लि.स्था. उमरेण।
14×21 14; 16	12–15	,,	19 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 600	5705	सार-संग्रह (उत्सवमालिका)	रसिक मण्डली
601	4832 (13)	सिद्धान्तसतकसार	
602	4832 (18)	,,	लाडूनाथजी सिधराज
603	4678 (6)	सीया-रघुवीर-विवाह	तुलसीदास
604	6025 (1)	सुख-समाद	सुखप्रताप
605	5068 (2)	सुदामा-चरित्र	
606	4696 (3)	सुन्दरदासजी के सवैये	सुन्दरदास
607	6125	सूरशतक	सम्पादक बालकृष्ण
608	4881 (1)	सूरसागर	सूरदास
609	4881 (2)	,,	,,
610	4890 (1)	सूरसागर के पद	,,
611	6022	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×26.5 16; 15	82	पूर्ण	20 वीं श.	प्रारम्भ के दो पत्रों में आचार्यों के प्रादुर्भाव-तिथियों का विवरण है।
21.5×18 12; 23	245–246	अपूर्ण	1935	लि.क. मोतीराम लि.स्था. रत्नपुर
21.5×18 12; 23	254–255	;;	1935	र.का. 1871 वि.; लि.क. मोतीराम; लि.स्था. रत्नपुर।
16×23 19; 15	155-69 186–87	पूर्ण	1847	लि.क. पोहकरराम; लि.स्था. तातारपुर (अलवर) पत्राङ्क 168-169 तक तुलसीकृत "रामवनरो" वर्णन भी है।
16×17 17; 19	21	"	1843	
17.5×11.5 8; 18	26–35	"	1905	
7.8×13 9; 21	118–279	"	18 वीं. श.	अतिजीर्ण
17×21 15; 22	47	"	1971	
14.9×22.8 18; 17	625	"	1875	
18.9×29.1 19; 17	566	अपूर्ण	19 वीं श.	पत्र संख्या गलत लगी हुई है।
15×21.5 14; 11	1–24	"	19 वीं श.	
16×21 13; 15	83	"	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 612	5277	सेवकजी की वाणी	सेवक
613	6030	सेवा की बाराखड़ी	सेवा
614	4697 (2)	सोरठा एवं पद-संग्रह	
615	4703 (5)	सोलह तिथि-निर्णय	सहजोबाई
616	4704 (5)	,,	,,
617	4922 (2)	,,	,,
618	5806 (2)	,,	,,
619	6050 (4)	संतदासजी की बाराखड़ी	संतदास
620	4659 (1)	स्नेह-लीला	रसिकराय
621	4877 (2)	,,	,,
622	4892 (16)	,,	,,
623	4895 (3)	,,	मोहनलाल
624	4899	स्नेह-लीला कवित्त आदि (उद्धव-गोपीसंवाद)	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12.2×17 11;21	16	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; 8 पत्र कीटभक्षित हैं।
15.5×11.5 13;13	2–8	अपूर्ण	19 वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त, अंतिमांश नहीं।
14×21 18;13	6–10	पूर्ण	1818	लि.क. दिलाराम कायस्थ लि.स्था. कोलनगर
18.5×22 5 13;20	1–4, 38वां	,,	1948	लि.क. धन्नालाल; 'सहजप्रकाश' के 38वें पत्र से प्रारम्भ है। कुल पत्र 5।
17×20.7 15;22	41–43	,,	1948	
11×17.5 13;13	60–64	,,	1981	र.का. 1800 वि.; र.स्था. परीक्षितपुरा। लि.क. रामसहाय;
13.5×17.5 16;14	46–51	,,	1942	लि.क. रामसहाय शर्मा; लि.स्था. उमरेण।
10×15 7;20	23–27	,,	19 वीं. श.	
14×16 12;16	1–13	,,	1893	लि.क. नानूदास लि.स्था. वैष्णवनगर
16.6×14 10;13	6–21	,,	1840	लि.क. मिश्र दौलतराम
9.6×14.5 7;21	29–43	,,	19 वीं श.	
13.3×10.5 6;14	22–55	,,	20 वीं. श.	
15.6×21.2 13;17	36	अपूर्ण	1944	आदि और अन्त अपूर्ण।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 625	4911	स्नेह-लीला	हरिराय
626	4916	,, (दान-लीला)	म. बखतावरसिंह
627	4918 (3)	,,	हरिराय
628	5022 (1)	,,	विष्णुदास
629	5023 (28)	,,	,,
630	5024 (28)	,,	,,
631	5068 (6)	,,	जनमोहन
632	5326	,,	रसिकराय
633	5367 (3)	,,	,,
634	4709 (5)	स्नेह-विहार	सवाई प्रतापसिंह
635	4709 (7)	स्नेह-संग्राम	,,
636	6284	स्फुट-भजन	नंदराम, समनी, तुलसी, मीरां, सूरदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13.8×17.2 10; 19	11	पूर्ण	19 वीं श.	
15.5×20.7 13; 15	29+22 =51	,,	1912	र.का. 1854 वि.; अन्त में 22 पत्रों में फुटकर भजन ।
14.5×15.5 11; 16	29–43	,,	20 वीं श.	
8×12.2 6; 13	41	अपूर्ण	1856	पत्राङ्क 1-5 तक अप्राप्त ।
10×16 5; 12	149–182	पूर्ण	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर
12.5×16.5 8; 15	78–95	,,	20 वीं श.	
17.5×11.5 11; 9	72–85	,,	1861	अंत में फुटकर छन्द हैं ।
11.8×17.7 7; 17	5–18	अपूर्ण	1948	जीर्ण; लि.क. चेतनदास लि. स्था. भूतेड़ा गांव पत्र 1-4 तक अप्राप्त, अन्त लिखते छोड़ा ।
8×12 6; 9	266-277	,,	19 वी श.	
16.2×19.5 13; 16	37–42	पूर्ण	1935	
16.2×19.5 13; 16	46–54	,,	1935	
20.5×14.5 12; 12	1–23	अपूर्ण	20 वीं. श.	जीर्ण; लि.स्था. अलवर अन्त अपूर्ण तथा लिपि अस्पष्ट है

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 637	6293	स्फुट-भजन	कबीर; अन्य अज्ञात
638	6070 (1)	स्वामी हरिदासजी के पद (वाणी)	हरिदास
639	5804 (1)	षट्रूप मुक्ति (गुरु-चेला की गोष्टी)	अखैराम
640	5068 (12)	हरजस, कलजुग री नीसाणी, किशनलीला, पद-संग्रह आदि	
641	5068 (15)	हरजस	
642	5105	हरिजन सांकटा री संवाद	
643	5104	हरिजस (गोपीचन्द)	
644	4692 (3)	हरिनाम-महिमा	दामोदर, हरिदास
645	4693 (3)	हरि बोल चिन्तामणि	सुन्दरदास
646	4694 (2)	,,	,,
647	4896 (6)	,,	,,
648	5023 (16)	,,	,,
649	5024 (16)	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×10 6; 14	1–7	अपूर्ण	20 वी श.	
7.5×10 5; 12	1–120	पूर्ण	1859	र.स्था. वृन्दावन, यमुना किनारे
16×22 19; 15	1–11	,,	20 वीं. श.	
17.5×11.5 8; 16	119-125	,,	20 वीं. श.	'बड़ा ग्यारह रा पट्टी पावड़ा' भी है
17.5×11.5 9; 16	133–137	अपूर्ण	20 वीं. श.	पत्राङ्क 136 वां अप्राप्त। अन्त में फुटकर कवित भी हैं।
14×25.2 10; 32	2	पूर्ण	19 वीं. श	
14×25.3 13; 34	3	,,	19 वीं. श.	
15×21.5 18; 17	24–29	,,	1856	
13.5×20.5 18; 19	2	,,	20 वीं. श.	
7.2×10 8; 12	43–48	,,	20 वीं श.	
11×12.5 10; 9	9–13	,,	1840	लि.क. गंगाविशन
10×16 5; 12	128–136	,,	1933	
12.5×16.5 8; 15	67–72	,,	20 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भ.सा. 650	4838 (4)	हरिरस	
651	5017 (2)	,,	बारहट ईसरदास
652	4652	हरिरायजी के शिक्षा पत्र की टीका	टी. गोपेश्वरजी
653	5699 (14)	हिंडोरा के पद आदि	ललितकिशोरी
654	4679	होली वडाडां रोपणी आदि के पद	सगुनदास, माधोदास, परमानन्ददास, सूरदास, गोविन्द, छीत स्वामी, मुरारीदास आदि
8 क.वा. 655	5012	अकलनामा	
656	6130	,,	
657	4729 (1)	अचलदास खीचीं री बात	
658	5181 (1)	,,	
प 659	6047	आला-ऊदल री बात	
660	5004 (2)	काग घु-घु री वारता	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×21.5 23; 13	9–21	पूर्ण	1819	पत्राङ्क 9 पर चौघड़िया तथा पत्र21 पर राग-रागिनी विचार है।
10.8×13 11; 16	32–56	,,	1749	लि.क. म. विद्याविनोद
20×29 25; 19	200	,,	1926	लि.क. चुन्नीलाल लि.स्था. डीडवाणा
18.7×27.3 16; 17	32	,,	20 वीं. श.	
16.8×21 12; 24	32	,,	1950	लि.क. धन्नालाल
15×21.4 15; 13	51	,,	20 वीं. श.	
16×21 16; 12	76	,,	1914	जीर्ण; कोने फटे हुए हैं।
21×15.5 13; 11	28	अपूर्ण	1937	लि.क. पीताम्बर दशोरा
11.5×16 12; 10	26	पूर्ण	1883	लि.क. पं. फनीराम
12×16.5 11; 17	18	,,	1873	साथ में चक्रवर्तीराज के लवाजमा की सख्या आदि भी है और अन्त में "वाला-वादल की वात' नाम ही है।
15.5×21.5 14; 14	128–132	अपूर्ण	19 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
8 क.वा. 661	6040 (4)	कुसलावकस-सीलराय का किस्सा	
662	4992	कैवाट सरवहिया री बात (अनन्तराय सांखला री बात)	
663	4832 (10)	गोगाजी रो रूपग	आढ़ा पहाड़खान
664	4985	चित्र मुकुट की कथा	
665	6040 (2)	,,	
666	4997	ढोलामारू री बात	
667	4998	ढोलामारू री वार्त्ता	
668	4825	पन्ना-वीरमदे री वार्त्ता	
669	4994	,,	
670	5736	,,	
671	5173 (3)	फूलजी-फूलमती री बात	सूद
672	5243	पख्यावाडा री बात आदि कथा-संग्रह	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सम्वत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×16 11;15	8	अपूर्ण	19 वीं श.	
16.5×23.6 27;25	38	पूर्ण	1865	लि.क. मोहकम सागर लि.स्था, खरवा
21.5×18 12;23	207-239	,,	1853	लि.क. मोतीराम लि.स्था. रतनपुर
13.3×17.2 9;19	43	,,	1874	लि. स्था. अलवर फुटकर पत्र 20 हैं।
10×16 11;15	33	अपूर्ण	19 वीं श.	अन्तिमांश अपूर्ण।
17.4×27 16;18	121	पूर्ण	1945	
15×22 14;20	147	अपूर्ण	20 वीं श.	अति जीर्ण; खण्डित प्रति; दो लिपियों में।
20.5×14.5 21;16	16	,,	19 वीं. श.	जीर्ण; एक पत्र छन्द 'तरंगिणी' का भी है।
15.5×20 16;15	60	पूर्ण	1886	लि.क. तीजाराम; लि.स्था. भाणा; साथ में खाली पत्र भी हैं।
19.8×14.7 18;18	6-33	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; पत्र 1-5 अप्राप्त; अन्त अपूर्ण।
16×23.5 26;25	4था	,,	1924	
11.5×26.5 14;35	4	पूर्ण	20 वीं. श.	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
8 क.वा. 673	5990	बकसीराम हीराँ की बात	
674	4770	मधु-मालती रो कथा	चतुर्भुज
675	6060	,,	,,
676	5625	माधवानल-कामकंदला चउपई कथा	(शेख) आलम
677	5003	रतना-हमीर री वार्त्ता	कवियण
678	4999	राहिब-साहिब बहलीमां की वार्त्ता	
679	4984	विक्रमविलास (वेताल-पचीसी)	गंगेश कवि (गंगाधर)
680	4987 (2)	,,	,,
681	6014 (1)	वेताल-पचोसी-भाषा	
682	4995	सदैवच्छ सावलिंगा री बात	
683	5002 (1)	सिंहासन बत्तीसी भाषा	जयदेव
684	6014 (2)	,,	,,
685	5004 (1)	सुवा-बहुत्तरी-भाषा	मू. देवदत्त भट्ट

आप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×10.5 8; 15	129	पूर्ण	1970	
16.8×22.4 18; 14	84	,,	1852	लि. स्था. अलवर
14×22 16; 10	114	,,	1895	
10.8×16.5 11; 23	49	,,	18 वीं. श.	
19×31.2 22; 15	31	,,	1934	लि.क. फुन्दनलाल
11×15.7 6; 18	181	,,	1882	लि.क. मिश्र सुखदेव
15×20 16; 14	140	,,	1865	
17×24 18; 16	114	,,	1875	
15.5×20.5 14; 14	147	,,	1893	
15×21.5 14; 13	152	अपूर्ण	20 वीं श.	अतिजीर्ण; प्रथम तथा अन्त के कुछ पत्र फटे हुये हैं।
15.2×21.4 19; 15	1–74	पूर्ण	1863	लि.क. हीगनखां; लि.स्था. अलवर किला मध्ये।
15.5×20.5 14; 14	76	,,	1893	
15.5×21.5 14; 14	127	,,	1863	लि.क. हीगनखां

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
8 क.वा. प 686	4718	हितोपदेश-भाषा (पद्य में)	द्वारकानाथ सरस्वती भट्ट आत्मज सुकवि कलानिधि
687	4719	हितोपदेश-भाषा	
688	4720	,,	
689	4721	,,	
690	6075	,,	
9 नाटक प 691	5022 (2)	करुणाभरण-नाटक (श्रीकृष्ण-जीवन)	लच्छीराम
692	4771 (3)	देवमाया-प्रपंच	देवदत्त 'देव'
10 का.शा. 693	4802	अलङ्कार-कर्णाभरण	
694	4789 (2)	अलङ्कार-माला	सूरति मिश्र
695	4812 (2)	कण्ठाभरण	दूलह कवि
696	4758 (1)	कण्ठाभरण एवं वचनिका	मू. दूलह

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×20.5 19; 15	138	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1828 वि० (?) लि.क. गोपी यह ग्रन्थ म. पृथ्वीसिंह की आज्ञा से रचा गया।
16.5×26.5 18; 21	90	"	1880	लि.क. भगवान
18.4×26 17; 22	80	"	1909	
21.5×15.7 14; 25	38	अपूर्ण	19 वीं श.	अन्त अपूर्ण, प्रारम्भ का एक पत्र फटा हुआ है।
16×22 19; 17	94	पूर्ण	19 वीं श.	
8×12.2 6; 13	41–133	"	1856	लि.क. जोशी शंभुराम
16×22 15; 12	79	"	1853	'प्रबोधचद्रोदय' के 6 अंकों का अनुवाद।
18×25 21; 17	14	अपूर्ण	20 वीं श.	अन्त अपूर्ण; 'अलङ्कार-कर्णाभरण' नाम ग्रन्थ के आदि में है तथा अन्त में 'अलङ्कार कुल कण्ठाभरण' दिया है।
10.4×15.5 11; 10	27	पूर्ण	18 वीं श.	र का. 1766 वि० लि.स्था. आगरा
15.8×21.2 17; 19	15	"	1862	
14.8×20.5 20; 13	31+13 =44	"	1958	लि.क. नानगराम

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा. 697	4769 (2)	कविप्रिया	केशवदास
698	4811	,,	,,
699	4819 (2)	कविवल्लभ	हरिचरणदास
700	4820 (2)	,,	,,
701	4804	काव्यकुतूहल	चतुरसाल राठौर
702	4756 (2)	काव्यरसायन	देव कवि
703	4777	,,	,,
प. 704	4803	कृष्णसाहित्य-सिन्धु (अलङ्कार-निर्णय)	अमीरदास
705	4805	छन्दलता	चिन्तामणि
706	5047	छन्दसुधा	कविचन्द
707	6029	जगत-विनोद	पद्माकर
708	4799	नखशिख-टीका (शृंगार-तिलक)	मू० बलभद्र; टी० मनीराम
709	4000	,,	,, ,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×20.5 15;15	137	पूर्ण	1868	लि.क. नानगराम
13.5×21.5 18;13	116	,,	1735	पत्रांक 54 वां दो बार है।
19.8×24.8 16;23	10	अपूर्ण	20 वीं श.	अन्त अपूर्ण।
21×29 25;27	5	,,	20 वीं. श.	दो पत्र फुटकर और हैं; अन्त अपूर्ण।
18×25 16;18	33	पूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1686 वि०
8.5×17 5;14	77–515	,,	1853	
15.8×22.4 19;17	77	,,	1869	
19×33 12;36	127	,,	1891	र.का. 1890 वि.; लि.क आसाराम; लि.स्था. सेवाकुञ्ज वृन्दावन।
12.8×24 7;25	52	,,	1912	यह ग्रन्थ मकरशाह की आज्ञा से रचा गया है।
16.3×25.5 22;15	45	,,	20 वीं श.	जीर्ण; प्रारम्भ के सात पत्र किसी दूसरी प्रति के हैं।
12×14 8;15	217	,,	1875	लि.क. हीरामनि ब्राह्मण लि.स्था. भरतपुर
17.5×24.6 20;18	41	,,	1912	र.का. 1842 वि.
14.5×20.2 13;16	67	,,	1877	,, टीका लि.क. भैरू शेखावत

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा. 710	4806 (2)	पद्म-सारोद्गार	चतुरसाल
711	4797 (3)	पिंगल प्राकृत-भाषा	नंदराम
712	4798	पिंगल-शास्त्र	सुखदेव मिश्र
713	4793 (1)	बखत-विलास	भोगीलाल
714	4794	,,	,,
प 715	4795	,,	,,
716	4771 (2)	भाव-विलास	देवदत्त 'देव'
717	4685 (2)	भाषा-भूषण	म. जसवंतसिंह
718	4753	,,	,,
719	4755	,,	,,
720	4756 (1)	,,	,,
721	4761 (2)	,,	
722	4797 (2)	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×24 19; 19	13–24	पूर्ण	20 वीं. श.	
14.5×29 21; 42	65–72	,,	19 वीं. श.	
17.6×24.5 18; 18	36	,,	1912	लि.क. रामगोपाल लि.स्था. मौजपुर
14.8×20.8 18; 16	95	,,	1857	र.का. 1856 वि.; अलवर राज्ये म. बख्तावरसिंह के आनन्द के लिये निर्मित :
15.8×20.4 16; 13	81	,,	1861	,, ,,
14×20.2 17; 11	92		1857	,, ,,
16×22 15; 12	74–165	,,	1853	र.का. 1746 वि.
16.2×22 13; 22	15–28	,,	20 वीं. श.	र.का. 1777 वि.
12.5×19.7 16; 12	24	,,	20 वीं श.	,, स्वर्णिम सीमांकन
13.5×18.3 13; 14	25	,,	1880	र.का. 1777 वि.; लि.क. भववान; लि.स्था. जयपुर
8.5×17 5; 14	76	,,	1853	र.का. 1777 वि.
16.5×21 19; 18	14	,,	1903	,,
14.5×29 19; 42	60–65	,,	19 वीं श.	,,

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा.			
723	4973 (2)	भाषा-भूषण	म. जसवन्तसिंह
724	4754	भाषा-भूषण-सटीक	मू० म. जसवन्तसिंह टी० विनयसिंह (अलवर नरेश)
725	4757	भाषा-भूषण-टीका (चमत्कार चन्द्रिका)	मू० म. जसवन्तसिंह टी० हरिचरणदास
726	4758 (2)	,,	,,
प 727	4816	भूषण साहित्य-रस (विनयसिंह-विलास)	हरिनाथ कवि
प 728	4772 (1)	रसआवाज-विनोद	दुखभंजन (कामावासी)
729	4775 (1)	रसचन्द्रोदय	उदयनाथ कवीन्द्र
730	4808	रसतरंगिणी	मिश्र शंभुनाथ
731	4772 (2)	रसदर्पण	नागर कवि

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×21.3 20; 15	12	पूर्ण	1881	जीर्ण; र.का. 1777 वि.; लि.क. नारायण प्रश्नोर; निवासी राजगढ़
18×22.4 15; 20	121	,,	1890	मूषकभक्षित्त; र.का. 1777 वि.
15×20.5 17; 18	59	,,	1906	,, टीका र.का. 1834 वि.; आद्यन्त पत्र फटे हुए हैं।
14.8×20.8 20; 13	66	,,	1858	र.का. 1777 वि.; लि क. नानगराम
14.8×19.8 14; 18	28	,,	1892	र.का 1891 वि.; लि.क. भगवान; रचनाकालीन प्रति।
15.3×22 13; 26	28	,,	20 वीं श.	र.का. 1821 वि.; र स्था. कामा; लि.क. प्रोहित मोहकम चितेरो; आवाजरामनृपाज्ञया।
17×24.6 17; 11	68	,,	1869	र.का. 1804 वि.
17.5×25 20; 17	27	,,	1912	र.का. 1886 वि.
22×15.3 13; 26	29–77	,,	20 वीं. श.	र.का. 1821 वि.; र.स्था. कामा लि.क. मोतीराम पुरोहित; राजा आवाजराम की आज्ञा से रचित।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा. 732	4797 (1)	रसपीयुष-निधि	सोमनाथ
733	4773	रसरहस्य	कुलपति मिश्र
734	5700	रसराज	मतिराम
735	6034	,,	,,
736	6061	रसवर्णन	
737	4774	रसविलास	देवदत्त 'देव'
738	5948	,,	,,
739	4776	रसशिरोमणि	रामसिंह
740	4769 (1)	रसिकप्रिया	केशवदास
741	6012 (1)	,,	,,
742	4801	रसिक-रंजनी (रसिक-मंजरी)	चतुरसाल
743	4883 (1)	रामचन्द्राभरण	गोपकवि

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14.5×29 21; 42	59	पूर्ण	1861	र.का. 1794 वि.; लि.क. गु. भावसिंह; लि.स्था. राधाकुण्ड
11×18.3 20; 14	113	"	1822	लि.क. उत्तमचन्द
15×20.8 20; 15	41	"	19 वीं. श.	
16×31 12; 11	106	"	1890	
16×21 13; 14	15	"	20 वीं. श.	
10×14 14; 11	92	"	1821	लि.क. गंगाराम; लि.स्था. वृन्दावन
11×17 12; 17	3–70	"	1817	
18×24.4 18; 20	42	"	1912	र.का. 1829 वि०; लि.क. रामगोपाल; लि.स्था. मौजपुर
15×20.5 15; 15	100	"	1868	र.का. 1608 वि०; लि.क. नानगराम; म. इन्द्रजीतसिंह की आज्ञा से रचित।
12×19 20; 15	1–59	अपूर्ण	1731	"; अन्त अपूर्ण।
18×25 16; 17	27	पूर्ण	19 वीं. श.	र.का. 1877 वि०
15.5×21 19; 20	22	"	1868	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा. 744	4775 (2)	ललितललाम	मतिराम
745	4815	वनवृत्ति-विलास	जयकृष्ण ज्योतिर्विद्
746	4796 (1)	वाणी-भूषण	उम्मेदराम
747	4779	विनयप्रकाश	हरिनाथ कवि
748	4814	वृतबोधिनी	चतुरसाल
749	4813	वृतरत्नावली	"
750	4806 (1)	वृत्तालङ्कारमंजरी-भाषा	मू० दत्त वर्मा भा० चतुरसाल
751	4807	व्यंग्यार्थ-कौमुदी	प्रतापसाहि
752	4791	शिवदान-चन्द्रिका	मान कवि
753	5016	शिवराज-भूषण	भूषण
754	4783	सभा-प्रकाश	हरिचरणदास
755	4785	"	चित्तप्रकाश (रूपरसिक)
756	4786	"	हरिचरणदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×24.6 17;11	65	पूर्ण	1870	
18.5×26.5 6;20	58	,,	20 वीं श.	र.का. 1715 वि.
10.2×15.4 10;18	24	,,	19 वीं. श.	र.का. 1861 वि०
15.5×20.5 14;19	76	,,	1889	र.का. 1888 वि०
13×19,8 15;17	पृ. 16	,,	20 वीं श.	
17.8×24.5 28;18	पृ० 16	,,	20 वीं श.	
18×24 19;19	1–13	,,	20 वीं श.	र.का. 1881 वि०
17.5×24.2 19;16	20	,,	20 वीं श.	र.का. 1882 वि०
14×19.7 13;12	37	,,	20 वीं श.	र.का. 1901 वि०
12×23.2 9;29	7	अपूर्ण	20 वीं. श.	अन्त अपूर्ण।
15×20.2 16;15	121	पूर्ण	1870	लि.क. हरि
12.5×27 8;14	30	अपूर्ण	20 वीं श.	यह भक्ति की रचना है। अलवर नरेश शिवदानसिंह के राज्य में निर्मित की गई।
14.5×20 20;16	91	पूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
10 का.शा. 757	4778	सभाविनोद (तरक तरोवर)	सोमनाथ
प 758	4812 (1)	साहित्य-सुधाकर	भोगीलाल
759	4780	सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास (ग्वालियरवासी)
760	4782	"	"
761	5734 (2)	"	"
762	4781	" (सटीक)	"
763	4793 (2)	सुखसागर	देव कवि
764	4890 (4)	"	"
765	4817	सुधासागर	नवीन कवि
766	4771 (1)	सूर्योदयप्रकाश	देवदत
12 कोश 767	4685 (3)	अनेकार्थमंजरी	नंददास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×15.8 17;11	49	पूर्ण	20 वीं. श.	
15.8×21.2 17;19	34	,,	1862	अलवर नरेश बख्तावरसिंह के आनंद के लिए निर्मित, काव्य-प्रकाश के आधार पर ।
14.5×19 15;13	61	,,	1895	जीर्ण; र.का. 1680 वि.; र स्था. आगरा, शाहजहाँ दरबार मध्ये; लि.क. भगवान ।
15.3×20 19;19	48	अपूर्ण	1903	र.का. 1680 वि०; र.स्था. आगरा, शाहजहाँ दरबार मध्ये; पत्र 1-2, 7-10 अप्राप्त ।
15.2×22 9;21	47–83	पूर्ण	1883	र.का. 1680 वि०; र.स्था. आगरा, शाहजहाँ दरबार मध्ये ।
14×20 14;20	153	,,	1905	,, ,,
14.8×20.8 19;14	184	,,	1856	म. जसवंतसिंह के लिये निर्मित ।
15×21.5 18;15	1–26	अपूर्ण	19 वीं. श.	र.का. 1746 वि०
19×30.3 19;20	246	,,	20 वीं श.	
16×22 15;12	1–74	पूर्ण	1853	
16.2×22 13;22	28–35	,,	20 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
12 कोश 768	4971	अनेकार्थमंजरी	नन्ददास
769	4972 (1)	,,	,,
770	4972 (2)	,,	,,
771	4973 (3)	,,	,,
772	5743	,,	,,
773	4973 (1)	मानमंजरी	,,
774	4809 (4)	,,	,,
775	4685 (4)	मानमंजरी-नाममाला	,,
776 13 आयुर्वेद	6024 (5)	याददाश्त	
777	4850	अद्भुतशास्त्र	
778	5991	अनङ्गरङ्ग वैद्यक-भाषा	
779	4852	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह
780	4853	,,	,,

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×21 18; 14	13	पूर्ण	1852	
16×21 16; 16	9	,,	1905	
16×21 18; 24	6	अपूर्ण	20 वीं श.	7वां पत्र अप्राप्त ।
16×21.3 22; 19	13–18	पूर्ण	1882	
11.5×16.5 12; 9	22	,,	1902	
16×21.3 22; 19	13	,,	1882	लि.क. श्रीनारायण भट्ट निवासी राजगढ़ ।
17.2×24.8 19; 16	36–42	,,	1912	
16.2×22 13; 22	35–47	,,	20 वीं. श.	
15×21.5 5; 16	17–20	,,	19 वीं श.	
14.5×11 8; 17	58	,,	20 वीं श.	
13×18.5 9; 24	3–13	अपूर्ण	1916	आदि के दो पत्र अप्राप्त ।
17.5×25 24; 17	397	पूर्ण	1880	पत्रांक 355 व 316 दो बार लगे हुए हैं ।
31.5×25.5 31; 27	170	,,	1899	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13 आयु. 781	4854	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह
782	5669	औषधिकल्प-संग्रह	
783	4862 (2)	औषध्यलङ्कार	
784	4861	करावादीनसफाई (यूनानी चिकित्सा से)	
785	4862 (1)	कालज्ञानसूत्र-बालबोध ज्वर चिकित्सा (सटीक)	मू० शंभु
786	4863	फुटकर आयुर्वेद (पाराशोधन क्रिया)	
787	4849	बाजकी चिकित्सा	
788	4846	बाजनामा	
789	4848	,,	
790	4865	भाषा वैद्यक फरासीस	हकीम फरासीस
791	4860	योगचिन्तामणि (वैद्यकसार)	मू० हर्षकीर्ति
792	4856 (2)	योगचिन्तामणि-भाषा	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×25.5 17; 16	515	अपूर्ण	1899	लि.क. महताबराय; लि.स्था. तिजारा; पत्र 174-177, 214-217, 373-376 कुल 12 अप्राप्त ।
11.3×28 11; 31	17+1= 18	"	20 वीं. श.	लि.क. बालादत्त; अन्तिम एक पत्र फुटकर नुस्खों का पृथक् से है ।
12.5×32.7 9; 23	22–42	पूर्ण	1913	
12×29.8 10; 31	184	अपूर्ण	19 वीं. श.	अकबर के समकालीन रचना; 165वां पत्र अप्राप्त ।
12.5×32.7 9; 23	21	पूर्ण	1913	
14.6×30.2 9; 16	30	अपूर्ण	20 वीं श	
20.5×14.5 20; 17	12	"	20 वीं श.	
14.5×21.5 7; 26	88	"	20 वीं. श.	इस ग्रन्थ में एक पंक्ति हिन्दी में तथा एक फारसी में क्रम से है ।
12×15.8 7; 15	20+1= 21	"	20 वीं श.	"
11×32 8; 50	52	पूर्ण	1913	
14.5×31 13; 41	88	"	1882	लि.क. ध्यानदास शिष्य रूपदास लालदास; लि.स्था. नगर खोहा
15.5×24 18; 16	43	"	19 वीं. श.	पाकाधिकार मात्र है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13 आयु. 793	4847 (2)	योगशतक	
794	4856 (1)	रसरत्नाकर-भाषा	भा०सैयद पहाड़(हमजासुत)
795	5626	,, (पारद संस्कार मात्र)	भा० हंसराज
796	4851 (2)	रामविनोद-भाषा	भा० रामचन्द्र
797	4858	,,	,,
798	4859	,,	,,
प 799	4857	विनयप्रकाश	मानसिंह चन्दावत पुत्र चतुरसाल
800	5982	वैद्यकग्रन्थ	
801	4847 (1)	वैद्यमनोत्सव (गुटका)	नैनसुख
802	4864	,, (1 से 7 अध्याय)	,,
803	5992	वैद्यमनोत्सव	नैनसुख पुत्र केशवदास

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11.5×15.4 9;21	112–154	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण
15.5×24 16;12	204	अपूर्ण	1882	पत्रांक 64-66 नहीं है। पत्रांक 63 व 132-35 दो बार है।
10.5×22 8;28	3	पूर्ण	19 वीं. श.	जीर्ण
15.5×23.5 24;17	59	अपूर्ण	20 वीं. श.	जीर्ण
13×27.6 14;42	74	,,	18 वीं श.	
12.5×23.3 7;31	228	पूर्ण	1912	
16×24.9 17;14	81	,,	19 वीं. श.	र.का. 1909 वि०; अलवर नरेश म.विनयसिंह की आज्ञा से निर्मित।
25×20 20;25	4–90	अपूर्ण	19 वीं श.	अतिजीर्ण; आदि व अन्त न होने से ग्रन्थ-नाम ज्ञात नहीं हुआ। हिन्दी आयुर्वेदादि नुस्खों का संग्रह है।
11.5×15.5 9;21	7–111	,,	19 वीं. श.	अतिजीर्ण; 64 व 69वां दो बार है तथा 68 वां नहीं है। कुल पत्र 106 हैं।
15×20.7 19:21	19	,,	1857	लि.क. बालमुकुन्द।
15×24 11;32	34	,,	19 वीं. श.	जीर्ण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13 आयु. 804	6041	वैद्यमनोत्सव	नैनसुख पुत्र केशवदास
805	4851 (1)	वैद्यरत्न	जनार्दन भट्ट गो०
806	5994	,,	
807	4836	शालिहोत्र-सटीक	मू० नकुल पण्डित
808	4837	शालिहोत्र-भाषा	भा० निधान कवि
809	4839	शालिहोत्र-भाषा-टीका	मू० नकुल पण्डित
810	4840	शालिहोत्र-भाषा	भा० म. जसवन्तसिंह
811	4841	,, (अश्वविनोद)	चेतनचन्द्र (ताराचन्द्र)
812	4842 (1)	शालिहोत्र-भाषा-दीपक	भा० भगवंतपुरी
813	4842 (2)	शालिहोत्र-भाषा	,,
814	4843	,,	भा० गोवर्धन मायुर

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×19 14; 11	52	पूर्ण	1895	रंगीन सीमांकन युक्त; लि.क. बलदेव पुजारी लि.स्था. अलवर; सुन्दर प्रति ।
15.5×23.5 24; 17	53	अपूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण
15×16 8; 12	261	,,	19 वीं. श.	जीर्ण अन्त अपूर्ण ।
17×19 16; 17	95	पूर्ण	20 वीं. श.	लक्षणानुसार रेखा चित्र ।
13.3×19.5 17; 17	32	,,	20 वीं श.	
19×26 17; 19	94	,,	19 वीं श.	टीकाकाल 1834 वि०; स्थान 2 पर चित्र के लिये जगह खाली छोड़ी हुई है ।
13×19 16; 13	56	,,	1909	र.का. 1834 वि०
13×19.8 16; 16	38	,,	19 वीं श.	र.का. 1616 वि०
18.8×28.3 21; 17	1–72	,,	1911	र.का. 1730 वि०
18.8×28.3 21; 17	73–112	,,	1911	र.का. 1730 वि०; दो प्रतियां एक ही जिल्द में बँधी हुई हैं। इस प्रति में कुछ संक्षेप किया है।
20.3×28.5 24; 19	31	,,	20 वीं. श.	जीर्ण; र.का. 1920 वि० लि. स्था. गोविन्दपुर ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
13 आयु. 815	4844	शालिहोत्र-सटीक	मू॰ नकुल
816	4845	शालिहोत्र-भाषा	चेतनचन्द्र (ताराचन्द्र)
817	4856 (3)	सुखसमूह	रामकृष्ण
818	4847 (3)	स्फुट योग	
819	4855	हकीम फरासीसनामा सूत्रभाषा-निर्णय	
820	4866	हिकमत के फुटकर पत्र	
14 ज्योतिष 821	6032	कंजपत पाशाकेवली	अनारी
822	6086	,,	,,
823	6089	जातक भूषण योग-भाषा	जयदेव
824	4749	जुगादा ग्रन्थ	
825	4735 (1)	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास शिष्य सुखदेव
826	4938	,,	,,
827	5689	पवनविजय स्वरोदय-भाषा	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18.8×25.3 20;17	115	अपूर्ण	20 वीं श.	
16.5×22.5 18;17	98	पूर्ण	1874	
15.5×24 18;16	72	अपूर्ण	19 वीं. श.	
11.5×15.3 9;21	155–269	पूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण
17.5×24.5 20;22	126	"	1906	
10.8×15.8 6;14	3–17	अपूर्ण	20 वीं श.	जीर्ण
12×13 12;15	10	पूर्ण	20 वीं श.	
17×19.5 14;27	6	"	1900	
16×26 12;33	14	"	19 वीं श.	र.का. 1871 वि०
18×24 18;20	33	"	1913	जीर्ण;
13×17.5 11;10	38	"	19 वीं श.	ग्रन्थकार के बचपन का नाम रनजीत व पिता का नाम मुरली दिया हुआ है।
9×15.5 6;17	44	"	1884	
12.4×25.5 12;26	2–25	अपूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14 ज्योतिष			
828	4747	भाषारमल	
829	4751 (1)	भाषाशकुनोक्ति	
830	5118	मुहूर्त्तावली	
831	4838 (1)	मुहर्रम की गुरां की साठी	
832	4746	रमलग्रन्थ प्रश्नविद्या-भाषा	
833	5186 (13)	रमलशकुनावली-सटीक	
834	4745	रमल सारिणी-भाषा (रमलचन्द्रिका)	
835	4904	रामाज्ञा	तुलसीदास
836	4981 (2)	रामाज्ञा सुगनौती	"
837	6077	"	"
838	6096	लीलावती-भाषा	लालचन्द
839	4736	वसन्तराज शाकुन-भाषा	मू० वसन्तराज
840	4737	"	"

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12.5×23.3 7;31	45	पूर्ण	20 वीं. श.	
15.5×21 11;15	1–40	,,	1883	
12.20×8 14;32	2	अपूर्ण	19 वीं श.	
15×22 22;15	3	पूर्ण	19 वीं. श.	
14.5×30 10;45	53	,,	20 वीं. श.	
11.4×17 12;18	41–42	,,	1759	
14.5×30 9;43	38	,,	1912	
11.2×24.9 7;21	1–39	,,	20 वीं श.	जिल्द उल्टी है।
15×20.9 17;16	27	,,	1871	लि.क. देवा माली लि. स्था. माचाड़ी
10×16 8;19	47	,,	1883	लि.क. श्योलाल भट्ट
19.5×34 13;39	27	,,	1998	
15.4×21 13;16	138	,,	1879	लि.क. भगवान
15×21 12;15	152	,,	1891	लि.क. खैराती खाँ

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14 ज्योतिष 841	4738	वसन्तराज शाकुन-भाषा	मू. वसन्तराज; भा. त्रिविक्रम
842	6109	,,	,,
843	4877 (6)	शिवस्वरोदय-भाषा	
प 844	4936 (1)	,, (स्वर शिरोमणि)	रसजान (रूपकृपा से)
845	4937	,,	
प 846	6269	,,	अखैराम
847	5494	षष्टिसंवत्सर-फल-भाषा-टीका	
848	4934 (3)	साठ संवत्सरफाल	
849	5083	सकुनावली अबजदी	
850	4751 (2)	सुगनोती	
851	5106	सूतिकाज्ञान आदि ज्योतिष	
प 852	4748	संग्रामदर्पण-भाषा	सोमनाथ
853	4939	स्वरोदय-भाषा	कविराज

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×29.5 17;22	81	पूर्ण	1880	लि.क. भगवान
19×31 13;28	143	,,	1929	लि.क. नानगराम
16.6×14 10;13	101–114	,,	1840	लि.क. मिश्र दौलतराम
16.3×21.5 18;22	1–19	,,	20 वीं. श.	र.का. 1758 वि०
10.3×15.2 9;15	17	,,	1884	
17×13 10;22	21	,,	1918	साथ में संस्कृत के श्लोक भी हैं।
15.5×22.2 13;19	23	अपूर्ण	19 वीं श.	अतिजीर्ण; फटे हुए पत्र।
10.6×16.4 6;17	54	पूर्ण	20 वीं श.	
12×23.8 12;33	6	,,	1852	लि.क. आनन्दविजय
15 5×21 22;18	41–46	,,	1883	
15×29.2 11;35	4	,,	1885	
12.8×24 7;31	65	,,	1913	
10.4×15.2 ८;26	23	अपूर्ण	19 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
15 गणित			
854	4732	अंक तथा नरदचिंतणीयाविधि	म. बख्तावरसिंह
855	4733	,,	,,
856	4734	,,	,,
857	4735	,,	,,
858	6132	पट्टीपहांडां की पोथी	
16 सं. नृ.			
859	4670 (2)	गानकुतूहल	राधाकृष्ण
प 860	4666	नादोदधि	पूरन मिश्र शिष्य दयालकवि
861	4964 (4)	,,	दयालकवि
862	6119	रागकल्पद्रुम	कृष्णानन्द व्यासदेव
863	6120	,,	,,
864	4668	रागमाला	पायंदा बेग
865	4669	,,	,,

मापं से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×18.4 5; 19	4	पूर्ण	20 वीं. श.	स्वर्णिम सीमांकन ।
11.5×18.3 7; 18	4	,,	20 वीं श.	लाल, हरे, काले तीन रंगों के अक्षरों से युक्त ।
10.5×19.5 5; 18	5	,,	20 वीं श.	,,
11.5×18.5 6; 19	4	,,	20 वीं श.	
19×14.5 12; 17	75	,,	1761	लि.क. वोणीराम बांमण लि.स्था. पाथरखेड़ा
15×20.2 9; 14	36–42	,,	20 वीं श.	
14.5×20.5 21; 12	57	,,	1864	लि.क. देवा माली
17.1×24.5 17; 20	51	,,	1884	लि.क. भगवान लि.स्था. मौजपुर
16.5×10.5 7; 21	97	,,	1969	लि.क. कन्हैयालाल; लि.स्था. थाणा गाजी; यह ग्रन्थ 'सूरसागर' से लिया गया है ।
15×9 9; 24	87	,,	1925	'सूरसागर' से उद्धृत
14.3×10.5 8; 14	38	अपूर्ण	20 वीं. श.	
14×19.5 14; 14	17	पूर्ण	1880	लि.क. भगवान

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
16 सं. नृ. 866	4670 (1)	रागरत्नाकर	राधाकृष्ण
867	4684	राग-रागिनी की पुस्तक (रागबद्ध)	
868	4671	राधागोविन्द संगीतसार (स्वराध्याय)	प्रतापसिंह
869	4672	,, (तालाध्याय)	,,
प 870	4682	रूपरागावली	पूर्ण कवि
871	4683	सभाभूषण (रागमाला)	गंगाराम कवि
872	4685 (1)	सभाविनोद (रागमाला)	पायंदा बेग
873	4964 (2)	,, ,,	,,
874	4964 (3)	,, (रागमाला-रागाध्याय)	,,
875	4667	संगीतदर्पण	हरिवल्लभ
17 का.शा. 876	6012 (2)	कोकशास्त्र	कोक कवि
877	5733 (2)	मदनविलास	,,
18 र. शा. 878	4740	मोतीन के चौके हिसाब की पुस्तक	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×20.2 9;14	1–36	पूर्ण	20 वीं श.	
12.5×18.2 11;11	61+8 =69	,,	20 वीं. श.	
25.8×33 27;31	89	,,	20 वीं. श.	
25.8×33 27;31	197	,,	20 वीं. श.	
25×16 16;13	228	,,	20 वीं श.	रूपदेवी की आज्ञा से निर्मित । इसमें राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है ।
18.5×13.3 10;22	18	,,	20 वीं श.	र.का. 1744 वि० र स्था. साँगानेर
16.2×22 13;22	1–14	,,	20 वीं. श.	
17.1×24.5 17;20	21–35	,,	1884	र.स्था. अकबराबाद; लि.क. भगवान; लि.स्था. मौजपुर
17.1×24.5 17;20	36–48	अपूर्ण	1884	,,
16×20.5 12;17	168	,,	20 वीं. श.	
12×19 20;15	23	पूर्ण	1731	
12×19 9;18	17	अपूर्ण	19 वीं. श.	
16.3×21.8 18;20	20	पूर्ण	20 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
18 र.शा. 879	4741	मोतीन के चौके हिसाब की पुस्तक	
880	4714 (7)	रत्नपरीक्षा	
881	4834	,,	
882	4835	रत्नपरीक्षा-समुच्चय	
883	4826	रत्नसागर-भाषा	रत्नसागर
884	6038	,,	,,
20 मं.तं. 885	5005	कौतुकरत्नावली	
886	5684	मंत्र की पुस्तक	सम्पा. बालादत्त
887	4388 (3)	मंत्रतंत्र	
888	5676	मंत्रशाबरी	
889	5021	यंत्रों की पुस्तक	
890	5665	,,	
891	5026	शरणमंत्र व समर्पणमंत्र की भाषा व भावार्थ	गिरधर गो॰ पुत्र गोपाल

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25.5×16.5 21; 18	22	पूर्ण	20 वीं श.	
16×21 12; 15	103	,,	1878	
16.3×22.5 15; 17	91	,,	1878	लि.क. भगवान लि.स्था. मौजपुर
20.8×15.5 14; 16	103	,,	1878	
11.2×19 7; 23	51	,,	20 वीं. श.	र.का. 1755 वि०
12×18 9; 20	45	,,	1898	,,
12.3×30.3 7; 28	36	,,	19 वीं श.	
11.3×28.5 14; 51	47	अपूर्ण	20 वीं श.	श्री बालादत्तजी ने संस्कृत ग्रन्थों से हिन्दी में संकलित किया है ।
12×18 7; 18	56	पूर्ण	20 वीं श.	लि.क. नन्दलाल लि.स्था. मथुरा
11.5×28 9; 27	10	अपूर्ण	20 वीं श.	लि.क. बालादत्त; पत्र 2-5, 11-14 अप्राप्त । साथ में एक फुटकर खरड़ा भी है ।
14.5×20.5 18; 20	30	पूर्ण	19 वीं श.	
11.5×23 9; 25	30	,,	.0 वीं श.	जीर्ण
11.7×14 7; 16	14	,,	1950	लि.क. रामलाल लि.स्था. गोकुल

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
20 मं.तं. 892	5667 (1)	सर्वजनमनोत्सव-रत्नाकर	
893	5653 (2)	हनुमान सावर-मंत्र	
894	5007	हरमेखला	
21 स्तुति. 895	5023 (4)	अष्टपदीस्तोत्र-सटीक	मू० जयदेव
896	5196	आरती त्रिमूर्ति शिव की एवं पुष्पांजलि-मंत्र	
897	4956 (3)	कृष्णकुण्डाष्टक	कृष्णदास
898	4898	गंगालहरी-भाषा	भा० राम कवि
899	5612	गणेशजी की आरती	माधोदास
900	5246	गणेशजी की स्तुति	छबिलदास
901	4956 (5)	गोवर्धनदशक	कृष्णदास
902	4956 (6)	;;	;;
903	4602 (14)	दुर्गास्तुति	चाँदकंवर (माता श्री शिवदानसिंह अलवर नरेश)
904	4604 (10)	;;	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×23 10;23	6	अपूर्ण	20 वीं. श.	लि.क. बालादत्त; अंतिम दो पत्रों में आकाश में उड़ने की विधि संस्कृत में है।
10×13.5 10;22	2	पूर्ण	20 वीं श.	
17.5×24.5 15;20	28	"	20 वीं श.	
10×16 5;12	22-23	"	1933	
12.7×30 10;34	1	"	1769	
13.7×27.5 10;40	5-6	"	1875	लि.क. कूना मिश्र
15.7×23.1 20;15	1-10	"	1907	लि.क. हीरालाल; अलवर नरेश म० विनयसिंह के लिए निर्मित।
13.5×18 10;21	1	"	20 वीं श.	
11×21 8;27	2	"	20 वीं श.	
13.7×27.5 10;40	7-9	"	1875	लि.क. कूना मिश्र
13.7×27.5 10;40	1 (9वां)	"	1875	"
11×16 11;11	9-12	"	1917	
15×20 11;13	1 (20वां)	"	1936	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
21 स्तुति.			
905	5023 (20)	देवाधिदेवस्तोत्र-भाषा	मू० शंकराचार्य
906	5024 (20)	,,	,,
907	5035 (1)	नारायणीजी की स्तुति	रेवतसिंह
908	4784 (4)	फुटकर संग्रह	चरणदास, तुलसीदास
909	4678 (4)	बद्रीनाथजी का स्तोत्र	दयाराम
910	5111 (3)	बद्रीनाथ पंचरत्न	
911	5023 (22)	भगवंत-विरदावली	
912	5024 (22)	,,	
913	6058 (1)	महादेवजी की आरती	
914	5023 (3)	महादेव-स्तुति	
915	6042 (2)	महादेव-स्तुति	भोलानाथ
916	5173 (6)	माताजी री स्तुति	
917	5068 (13)	,, शिवजी री स्तुति आदि	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×16 5;12	203–205	पूर्ण	1933	लि.क. मिश्र गगाधर; किसी अज्ञात कवि द्वारा भाषाबद्ध किया गया है।
12.5×16.5 8;15	106–107	,,	20 वीं. श.	,,
11×17.5 10;21	1–10	,,	20 वीं श.	देवीजी की स्तुति है।
16.5×20.8 7;21	3–6	,,	1967	
16×23 15;14	1 (116वां)	,,	19 वीं. श.	
11.5×15.8 11;17	9–10	,,	1845	
10×16 5;12	210–220	,,	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर
12.5×16.5 8;15	110–115	,,	20 वीं श.	
11×15 6;21	2	,,	1880	
10×16 5;12	11–21	,,	1933	
12×10 12;14	3	,,	1844	
16×23.5 26;25	1 (7वां)	,,	1924	
17.5×11.5	125–127, 128वां	,,	20 वीं. श.	

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
21 स्तुति.			
918	5319	माताजी रो छंद	गिरधर
919	4956 (2)	राधाकुण्डाष्टक	कृष्णदास
920	4846 (10)	रामअष्टक	तुलसीदास
921	4929 (1)	रामरक्षास्तोत्र-भाषा	भा० रामानंद
922	5247	,,	,,
923	5550	,,	,,
924	5597	,,	,,
925	6050 (6)	राम-स्तुति	तुलसीदास
926	5504	रामाष्टक	रामानंद
927	5111 (7)	विधाताष्टक	
928	5023 (24)	शिवजी की आरती	भोलानाथ
929	5024 (24)	,,	,,
930	5646	,,	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
9.5×17.5 6; 16	3	पूर्ण	1856	लि.क. कानजी भट्ट लि.स्था. नवानगर
13.7×27.5 10; 40	4–5	"	1875	लि.क. कूना मिश्र
11×12.5 10; 9	42–43	"	1840	लि.क. गंगाविशन
10.5×16 7; 14	7	"	1872	लि.क. देवा बागवान माली; लि.स्था. अलवर
14.5×30.8 13; 50	1	"	20 वीं. श.	साथ में 'रुद्राक्षधारण महिमा' एवं विधि भी हैं।
11×15 8; 18	6	"	19 वीं. श.	
8×11 6; 14	2–8	अपूर्ण	19 वीं श.	जीर्ण; प्रथम पत्र अप्राप्त
10×15 7; 20	46–48	पूर्ण	19 वीं श.	
10×14 10; 13	3	"	20 वीं. श.	जीर्ण; प्रत्येक पृष्ठ पर कुछ रफ कार्य किया हुआ है।
11.5×15.8 11; 17	15–16	"	1845	लि.क. उदैराम; साथ में 'माशदशा-वर्णन' भी है।
10×16 5; 12	224–230	"	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर।
12.5×16.5 8; 15	117–121	"	20 वीं. श.	
11.5×18.3 6; 14	2	"	20 वीं. श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
21 स्तुति. 931	4604 (8)	शिवस्तुति	
932	4604 (11)	,,	चंदकवर (शिवदानसिंह नृप जननी)
933	5024 (3)	,,	म० शिवदानसिंह
934	5023 (14)	हनुमानाष्टक	तुलसीदास
935	5024 (14)	,,	,,
936	5173 (5)	,,	,,
937	6024 (7)	,,	,,
938	5173 (4)	हनुमान-चालीसा	,,
939	4678 (7)	हनुमानजयति	
940	4602 (13)	,,	
941	4604	हनुमान-स्तुति	
22(4) रा.च. 942	5173 (2)	गौतमपृच्छा-चोपई	सूद

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×20 11;13	18–19	पूर्ण	1936	
15×20 11;13	20–23	"	1936	
12.5×16.5 8;15	6–11	"	20 वीं. श.	
10×16 5;12	117–119	"	1933	लि.क. मिश्र गंगाधर
12.5×16.5 8;15	62–63	"	20 वीं श.	
16×23.5 26;25	6–7	"	1924	
15×21.5 15;16	22–23	"	1894	लि. स्था. अलवर; साथ में जमीन-जायदाद की याददास्त के पत्र भी हैं।
16×23.5 26;25	5–6	"	1924	
16×23 18;18	188–189	"	19 वीं श.	
11×16 11;11	8–9	"	1917	
15×20 11;13	19–20	"	1936	
16×23.5 26;25	2–3	"	1924	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(4) रा. च. 943	5017 (3)	ढोला-मारवणी की चऊपई	कुसललाभ
944	5173 (1)	दानशीलतप-भावना-चौपई	रतनपाल, सूद
945	5131	नेमिराय-रास	
946	5108	भंगु-पुरोहित-चउपई	जैमल
947	5065	मेतारजमुनि-चउपई	रायचन्द
948	5172	श्रीचन्द री चौपई	मोहनविजय
22(5) जं. क. 949	5313	आरसी का झगड़ा	लखमीचन्द सरावगी
22(6) स्तु.स्त. 950	5161	अजभरणं तबक-सटीक	
951	6071 (15)	आदिनाथ-विनती	
952	6071 (9)	गुरु की आलोचना	
953	4530 (1)	चौबीसजिन-नामावली	
954	5071	छत्तीसी	रायचन्द
955	6071 (11)	जाप व स्तुति	

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10.8×13 11; 16	57–155	पूर्ण	1749	
16×23.5 26; 25	1–2	,,	1924	
12×27.5 19; 35	2	,,	18 वीं श.	
11.5×22.5 21; 39	3	,,	19 वीं. श.	
12×25.5 18; 38	11	,,	1918	र.का. 1849 वि०; लि.क.उजाला लि.स्था. सोजत
12×22.3 12; 31	5	अपूर्ण	19 वीं श.	
11.8×24.5 10; 28	2	पूर्ण	1950	
10.6×25 6; 40	2-7, 12–15	अपूर्ण	20 वीं. श.	
12×17 10; 13	2	पूर्ण	18 वीं श.	अन्त अपूर्ण
12×17 10; 13	3	,,	18 वीं श.	
15×20 14; 12	1–2	,,	19 वीं श.	
11×23.8 20; 42	1	,,	19 वीं. श.	
12×17 10; 13	4	,,	18 वीं श.	लि.क. खुस्यालचन्द

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) स्तु.स्त. 956	4530 (11)	जिनपूजा	
957	5137	जिनपूजा जिनआरती	देवीचन्द
958	6071 (12)	जिनराय व दयाराम की विनती	जिनराय व दयाराम
959	5186 (12)	जिनस्तवन	
960	5186 (11)	दीपमालिका-स्तवन	हीर
961	4530 (6)	निर्वाणकाण्ड-भाषा	भय्या भगौतीदास
962	6071 (10)	नेमनाथजी की विनती	हरकीरत
963	5186 (4)	पार्श्वनाथजुहारी	
964	5186 (5)	पंचक्खाण री सज्भाय	
965	६071 (7)	पंचबधावा (सवैया फुटकर)	हरिवंश
966	4530 (4)	पंचमंगल	रूपचन्द
967	5186 (8)	भगवती-छन्द	केशव
968	5148	मणिभद्रजी रो छन्द	कनकविजय

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×20 14; 12	43–44	अपूर्ण	19 वीं श.	
10.6×23.3 13; 28	8	पूर्ण	1909	लि.क. गणेशनारायण
12×17 10; 13	3	,,	18 वीं. श.	
11.4×17 12; 18	31–40	,,	1759	
11.4×17 12; 18	25–30	,,	1759	
15×20 14; 12	18–21	,,	19 वीं श.	
12×17 10; 13	2	,,	18 वीं श.	
11.4×17 12; 18	9–10	,,	1758	
11.4×17 12; 18	1 (11वां)	,,	1758	लि.क. कृष्णविजय गणि लि.स्था. नागौर
12×17 10; 13	4	,,	20 वीं श.	
15×20 14; 12	8–16	,,	19 वीं श.	
11.4×17 12; 18	13–22	अपूर्ण	1758	जीर्ण; लि.क. खेतसी लि.स्था. पीपाड़
11.5×22.5 13, 35	7	पूर्ण	19 वीं श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22(6) स्तु.स्त. 969	5081	महावीर-स्तवन आदि (स्वाध्याय बाहुवलसिज्झाय स्वाध्याय जिनप्रतिमास्तवन स्वाध्याय)	 मेरुविजय विमलकीर्ति समयसुन्दर
970	5186 (15)	शांतिजिन-प्रभावीक-छंद (श्री शांतिनाथजी रो छन्द)	
971	5079	सिद्धचक्र-चैत्यवंदन	
972	5041	सीमन्धर-स्तवन	उमा
973	5145	"	जिनराज
974	6071 (6)	हरखचंद की विनती	हर्षचन्द्र
23 विविध 975	5030	अंग्रेजी किताब के माइने	
976	5020	इन्तजामुल्कु लाईन-अयन प्रकाश	जमुना विष्णु
977	4968	कवायद पल्टन (हिन्दी रूपान्तर)	
978	6074	ज्ञान चौपड़ चित्र (प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मार्ग खेल)	
979	4967	तोरंदाजी रिसाला	खुवाज मुहम्मद फाजल

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10.5×26 9;28	8	पूर्ण	19 वीं श.	
16.5×11.3 12;18	44–46	"	1771	लि.क. ऋषभसौभाग्य; लि स्था. फलौदा
11.6×24.2 9;30	3	"	19 वीं श.	
10.8×26 11;37	3	"	1657	
8.6×14 12;18	1	"	20 वीं श.	
12×17 10;13	2	"	20 वीं श.	
13.8×16 8;25	44	अपूर्ण	20 वीं श.	
16×22.6 10;22	110	पूर्ण	20 वीं श.	र.का. 1911 वि०। अलवर नरेश श्री शिवदानसिंहजी की आज्ञा से रचित।
12.9×20 14;14	106	अपूर्ण	20 वीं श	
44×61 39;68	1	"	20 वीं श.	
16.2×24.5 18;14	50	"	1913	लि.क. रामलाल

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
23 प्रकीर्ण प 980	4963 (1)	धनुष-विद्या	बावू कवि
981	4964 (1)	,,	,,
982	4965	,,	,,
983	4966	,,	हरिनाथ
984	5013	नकल पातशाही बाबरचीखाना की (पातसाह की रसोई की तरकीब)	
985	4742	पटवारियों की पुस्तक (दूसरा भाग)	
986	5031	,,	
987	4752	बरवै नवाब खानखाना	नवाब खानखाना
988	4750	भूगोल-हस्तामलक	
989	5014	रसोई की तरकीब	
990	5006	विवेक-सिन्धु	मुकुन्द
991	6072	व्रजमण्डल-यंत्र	
992	6073	शरीर-वृक्षचित्र	हरिप्रसाद

माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र; अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×18.5 14; 19	1–24	अपूर्ण	19 वीं श.	र.का. 1801 वि०
17.1×24.5 17; 20	1–20	,,	1884	र.का. 1801 वि०; लि.क. भगवान
15.5×20.5 14, 19	26	पूर्ण	1881	र.का. 1801 वि०
15.5×20.7 16; 17	19	,,	19 वीं श	र.का. 1886 वि०
15.5×22 18; 15	35	,,	1880	
16.5×22 21; 21	10	,,	1906	
15×19.5 18; 25	पृष्ठ 40	,,	1906	
11.4×18.2 15; 11	10	,,	20 वीं श.	स्वर्णिम सीमांकन
16.2×22 19; 17	48	,,	20 वीं श.	
12.3×19.3 7; 22	39	,,	20 वीं श.	लि.क. सुगनक
12×25.3 13; 28	77	,,	19 वीं. श.	ग्रंथ मराठी भाषा में है।
34×32.5	1	,,	19 वीं. श	यंत्र गोलाकार आकृति में होने के कारण पंक्ति और अक्षर नहीं लिखे गये हैं।
42.5×31	1	,,	19 वीं श.	,, ,,

परिशिष्ट-I

कतिपय विशिष्ट 'प' चिह्नित ग्रन्थों के उद्धरण

6/4692 (2) ज्ञानदीपका

प्रारम्भ :- ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ ग्यानदीपका लिख्यते ।।

दोहा

सुमिरत चरन गनेस के, प्रथमहि सीस नवाइ ।
बुद्धि सिद्धि जातें लहै, भाखौ ग्रन्थ वनाइ ।।१।।

चौपाई

नहि उपजै नहि होइ विनासा । तिहू लोक जाकर परगासा ।।
जाकी लीला जगत भुलाना । नमो नमो ता प्रभु भगवाना ।।२।।

दोहा

सारद सुक नारद सुमिरि, व्यास जनक के पाइ ।
ग्यानदीपका रचतु हौं, रामचरन चितु लाई ।।३।।

चौपाई

सुनि सुनि विविध संसकृत वानी । भाषा कीन चहौ मन मानी ।।
हरिहि मिलन के मारग पांचा । देहि बताइ प्रगट वुधि साँचा ।।४।।

दोहा

ग्यानदीपका वरनि हौं, भाखत जो हित पांच ।
उक्ति जुक्ति सों ग्रन्थ करि, कथा पुरातम(न) सांच ।।५।।

बुद्धि पात्र वाती उंकनि, तप्त तेल की धार।
ब्रह्म अग्नि कर लेसियै, ग्यानदीप उजियार ॥६॥

रचना कालः- सवतु सोरह सै गअै, इकतिस अधिक विचार।
(सं० 1631 वि०) सुकल पछ आषाढ की, दोइज पुष गुरवार ॥७॥

ग्रन्थ महिमा

दोहा

अन्तः- मूरख आगै जिन पढो, सुनि हसि हैं मुह वाइ।
अवगुन गाहक चालनी ता सम तास सुभाइ ॥४२॥

पढ़ि यह ग्रन्थ विचारि चित, साधु चतुर ढिग आंनि।
गुन गाहक वै हंस से, दूध पिअै तजि पांनि ॥४३॥

अति विस्तारि सब संसार (अमत), लघु करि भाख्यौ पंथु ।
तुलसीदास टीका करत, कोटि न बाढै ग्रन्थु ॥४४॥

सोरठा

मीतु वधु कुल देसु, तप जप विद्या वेद विधि।
रहै न इनकौ लेसु, नांरि जु मुखहि लगाइयै ॥५२॥

प्रीति हिअै दृढ जांनि, विधना ताके कर गहै।
तितहि टिकावत आंनि, तितहि वसै मन कामना ॥५३॥

पुष्पिका :- इति श्री ग्यांनदीपकायां श्री स्वामीदासकृते श्रुति पुरांननरजुमते सिछ्या मार्ग वरननो नांम पंचमोध्यायः ॥५॥ सम्पूर्ण ज्ञानदीपका ॥

x x x

9/6019 (1) निगमसार

प्रारम्भः- श्रीगणेशाय नमः।

दोहा

सनकादिक पद कपल की, रज कूं बंदौं नित्य।
तीन ताप नाशक सदा, ज्यौं तिमिर आदित्य ॥१॥

गुरुमहिमा

सुर रिषि पद बंदन करूं, निंबारक पद ध्याय ।
मगल मूरति हृदय धरि, श्री गुरु पदं शिर नाय ॥२॥

भक्ति ज्ञान वैराग्य के, जे आचारज राय ।
भव सागर उतरै बहु, इन पद कूं शिर नाय ॥३॥

विना ज्ञान कल्याण कुं, बांछत है मति मंद ।
ज्यो बायु आकास कुं, घट कूं राखैं बंद ॥४॥

गीता को उपदेस है, उपनिषदन को भाव ।
ब्रह्मसूत्र को सार है, सो वरनत करि चाव ॥५॥

अन्त :- ब्रह्मानन्द सुहावनो, तुछ और आनन्द ।
ता सुख कुं सो पावहिं, निगमसार कर चन्द ॥७६॥

निगमसार वरणन कियो, अति लघु मति के हेत ।
दूषण तजि सिद्धांत भजि, सीतलमति कुं देत ॥७७॥

नमन करूं गुरू चरन मैं, हरि कुं नांऊ सीस ।
दोनू मंगल रूप है, आचार्य जगदीस ॥७८॥

पुष्पिका :- इति श्री सीतलदासकृत निगमसार संपूर्ण ।

x x x

32/4969 परमधर्म-निर्णयग्रन्थ

प्रारम्भ :- श्रीगणेशाय नमः । अथ परमधर्मनिर्णय ग्रन्थ लिख्यते ॥

सोरठा

जयति सपरिकर राम, जयवानी हनुमंत जय ।
जय गनपति अभिराम, जय हर हरि प्रियदास गुर ॥

छप्पय

श्री हरि भक्ति विलास सार ग्रन्थहि लै अर्थहि ।
विविधि पुरानन संहितार्थ सतशास्त्र समर्थहि ॥

मनु जाग्यवल्कादि अर्थ विश्वनाथ बखानै ।
परम धर्म निर्नय नामहि यहि ग्रन्थहि जानै ।।
सबकलि जीवन निस्तार हित भाषा करिवो चहत हौं ।
जग सज्जन सुद्ध सतोगुनी तिनके कमनि कहत हौं ।।

अन्त :- तेहि ते अपराजिता काजे अजोध्या छोंडि औरे माल गावत हैं ते नमस्कारे करे लायक हैं ।

पुष्पिका :- इति सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर सीतारामचन्द्र कृपा पात्राधिकारी विस्वनार्थसिहजू देव कृत परमधर्मनिर्नय नाम का ग्रन्थ चतुर्थ खण्ड समाप्तः संपूर्न सुभमस्तु ।। श्री सीतारामजी महांइ श्री राधाकृष्णजी सहांइ श्री हनुमानजी सहांइ ।

x x x

29/5025 (1) आह्निककर्म

प्रारम्भ ।। श्रीकृष्णाय नमः ।। गोपीजनवल्लभाय नमः ।। अथ श्रीदेहसुद्ध आह्निक मंत्र लिख्यते ।।

श्लोक

नत्वा श्री वल्लभाचार्यान्पुष्टिमार्गप्रवर्त्तकान् ।।
तदंगीकृत भक्तानामाह्निकं सुविचार्यते ।।१।।
श्रीविठ्ठलेश पादाब्जपरागान्भावयाम्यहं ।।
पुष्टिमार्गप्रवृत्तानांभक्तानांबोधसिद्धये ।।२।।

आह्निक-विधि

जो सूर्य उदयते पेंहलें रात्र घडी ६ वा ४ रहें सोता समय सोब्रत तै उठि भगवन्नामशरण मंत्रादि ले रात्रकों वस्त्र वदलि हाथ पाव धोय कुल्ला करि उत्तर मुख वेंठि नांम श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गुसांईजी प्रभू तिनकों ले, विज्ञप्ति सों दंडवत करिए ।। प्रथम श्रीआचार्यजी पाछें श्रीगुसांईजी पाछें श्री गिरधर जी आदि सातों वालक पाछें अपने गुरूदेव से क्रम सों दंडवत करिए ।। एसें ही सातों स्वरूपन कों ।। प्रथम श्रीनाथजी को पाछें श्री नवनीत प्रीयाजी कों पाछें श्री मथुरेसजी पाछें श्री विठ्ठलनाथजी ।।

फेरि श्रीद्वारिकानाथजी फेरि श्रीगोकुलनाथजी ।। पाछें श्रीगोकुलचन्द्रमा जी ।। पाछें श्रीबालकृष्णजी ।। पाछें श्रीमदनमोहनजी ।। तापाछें अपने सेव्य स्वरूप कों या क्रमतें ध्यान करि दंडवत करिए ।। पाछें श्रीस्वामिनीजी कों श्रीयमुनाजी को दंडवत करिए ।। पाछें देह कृत्य करनों ।।

अंत : ।। सोता समय यह पढनों —

श्लोक

दंडाकारे ललाटेस्यात्पद्माकारेतुवक्षसि ।।
वेणपत्रं निजं बाह्योरन्यद्दीपाकृतिर्भवेत् ।।१।।
सो एसें पढि तिलक मुद्रा करिए ।। पाछें सेवा करिए ओंर जप करिए ।।
सो या प्रकार सों पुष्टिमार्गीय भगवदीय कों एकांत में बेंठि जप करिए ।।

पुष्पिका : ईति श्रीदेहकृत्य कुर्यात् आह्निक संपूर्णम् ।। श्री सुभम् कल्यानमस्तु ।।

x x x

104/5379 सूर्यपुराण-भाषा

प्रारम्भ : ।। श्रीगणेशाय नमः ।। अथ सूर्यपुराण लीखिते ।।

दोहा

बंदो चरण जोरि कर, श्रीपति गोरी महेस ।।
तुलसीदास करते सुजस, वरनो कथा दिनेश ।।१।।

चोपई

सूर्ज देवता सुमिरो तोहि । सुमिरत ग्यान बुधि दे मोहि ।।
जोति स्वरूप आदित बलवाना । तेज प्रताप है अग्नि शमांना ।।
तुम्ह आदित्य परमेश्वर स्वामी । अलख निरंजन अंतरजामी ।
वरनी न जाई जोति कैं लीला । धर्म धुरंधर परम सुसीला ।।
जोति कला चहुं वोर विराजै । जगमग कानन कुंडल छाजै ।।
नील वरन छत्रि तुरै असवारी । ग्यान निधान धर्म व्रत धारी ।।
जासु कथा मैं कहो बखानी । सो पुरुष है अग्नि समानी ।।
महीमा आदित अगम अपारा । तीनि भूवन मैं जोति उजीआरा ।।

दोहा

ग्रादित कथा पुनीत है, गावही शंभु सुजान ।
तीन भुवन छवि जोति है, कहौं प्रताप वखानि ॥

अन्त **ग्रन्थ-माहात्म्य**

चौपाई

ग्रव सुनु येह ग्रसथानन कहई ॥ पढै जोग पूजा कह गहई ॥
विविध न दिवा शर जु तीरा ॥ वा शिवमंदिर उतम नीरा ॥
ग्रथवा पीपर वट तर गावा ॥ वरत करै रवि पाठ करावा ॥
रोग सकल तनतें सव जाही ॥ तेजमान रवि प्रवस ही जाही ॥
पुत्र पौत्र संप्रदा पावही ॥ सो 'विशेष' करि श्रुति ग्रस गावही ॥
भाग्य विभो दिन दिन ग्रधिकाई ॥ तापर ग्रादित रहही सहाई ॥
सुर दुरलभ जग विविध भोग करि ॥ अंत ग्रवस्था सूर्ज देहि धरि ॥
रविपुर वास ताहि कर होई ॥ रवि की भगति जानै सव कोई ॥

दोहा

यह ईतिहास पुनीत ग्रति ॥ उमा कहा समुझ्याई ॥
व्रत कीये नाम ही लीये ॥ सो रवि लोकहि जाय ॥

इति श्रीसुर्जमहातमने महापुराने उमा महेश्वर संवादे पूजा पाठ वर(न)नो नाम द्वादशोध्याय ॥१२॥

पुष्पिका ॥इति श्रीसूर्यपुराण संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ वैसाख कृष्णा १ संवत् १९१६ का लिप्यकृतं जीवणराम वासी वावल को पठनार्थं रामसिंघदासस्य शुभं भूयात् ॥

x x x

113/5004 (3) राजा जैसिंहजी की वार्ता

प्रारम्भ ॥ श्री गणेससायन्मं ॥

॥ श्री सुरसती माताजी न्मै ॥ ग्रथ राजा जैस्यंघजी की वारता लीखतेः ॥

ग्रथ श्री म्हाराजाधराज म्हाराज श्री जैस्यंघजी वडा पहाड तोडचा । मेवात का मैवानै मारघा पाहट मेव पहाड मैसूं काढ दीना । ग्रमल कीयो

कागां बसाई तींको ब्योरो मीती आसोज वदी ३ संवत १७०५ की साल दरबार की फोज वडा पहाड़ नै आय घेरचा । सलेमपुर अचला कावा फतैपुर पीलवानी डेरा हूवा । बारा गांव बीलंग का वमै छा । नीचै बार गांव पहाड़ वडा मै ऊपर वसै छा । तीमै गांव २४ मै साख नींछी । सो वीलंगका गांव फतैपुर लाडलाका ऊगरे बारा तो उजड होर खूदागी हुई । अर वनी बारा गांव की कटा नाखी । अर मेव सारा येकठा होय बडा पहाड़ मै जाय बैठचा । वडा पहाड लडवानै मजबूत हूवा । सो अलाघस्यंघ चोहाण फोज सुधां वडा पहाड़ नै तोड़वा राख्या । तीकै तईनांत ।

अन्त दोणी जनात्री तीठै सारी राजलोक हाथ जोडचा खडा कवंर तीरथस्यघजी हाथ जोडचा खडा छै। जनाना का मीनख हाथ जोड अरज करी । सो म्हासी जी थे तो वैकूंठ नै सीधारचा । अर म्हानै तूरक घरमै घालसी । जदी म्हासतीजी वचन कहचो । जो कोई थांनै लेजार घरमैं राखेंलो जीहका कूटंभ को नास हो जासी, सत बचन जाणज्यो। सारी सीरदारी राजकी डोडी जनानी येकठा छै: ।

x x x

105/6285 अलवर नरेशों का वंश-वर्णन

प्रारम्भ **झमाल**

(१)

समपहु गणपति सरसुती, बुधि गुण जुगति विशेस ।
करौं यथामति कीरती, पति नरूका पेस ।

पती नरूकां पेसक, उज्जल अक्खरां
बरणैं खटरितु वेस लहण दत लक्खरां

मही इन्द्र मगलेस, राज निज राजवै
बावन गढ़ां बिचाल, अमागळ बाजवै ।

अर्थ

हे गणपति और सरस्वती मुझे विशेष गुण, बुद्धि और युक्ति का दान दीजिये क्योंकि मैं नरूकापति (अर्थात् अलवर नरेश) की कीर्ति का वर्णन

करने जा रहा हूँ । मैं महाराजा मङ्गलसिंह के समक्ष– जिनकी कि विजय दुंदुभी ५२ किलौं में बज रही है । प्रकृति की छटा ऋतुओं का वर्णन उज्वल अक्षरों में प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिससे मुझे लाखों का पुरस्कार प्राप्त हो सके ।

(२)

जिण कुल मांही जलमियो । भवल भूप परताप ।
परघर कीधी आपणीं, थिर बावन गढ़ थाप ।।

थिर बावन गढ़ थाप, राज निज रच्चियो ।
उणसूं झली सु आँट, बळी नँहँ बच्चियो ।।

घर मण्डल मेवात, ढूंढाहड़ धूजियो ।
परतख जाण प्रतीत, प्रथम्मी पूजियो ।।

(४५)

अन्त ऊंचा अंब शोभा अधिक, रेशमरी तणियाँह ।
झोटा दे दे झूलवैं, त्याँ चढि तीजणियाँह ।।

त्यां चढि तीजणियाह, भिड़ै आम भूम सूं ।
आंब तोडि तिण वार, लियावैं लूम सूं ।।

सिर झाड़ी सरकन्त, तीज तिण बरगळै ।
हुय अति हाल हुलास, मोहफन्दा मळै ।।

x x x

125/500 बनरूपबिहारीजी को विलास

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ बनरूपबिहारीजी को बिलास लिखते ।।

दोहा

गौरीनंद गणेश को, धरै कबीसुर ध्यांन ।
उक्त जुक्त साधन करै, आवै हिरदै ग्यांन ।। १ ।।

सुरसत माता सुमरकैं, गुरुकुं सीस नवाय ।
भगवत की चर्चा कहौ, बाणी सुध बताय ।। २ ।।

सूरजबंसी राजई, नरूनाथ औतार ।
सी परतापनेस घर, बखत विनै सुखसार ।। ३ ।।

अलवर गढ़ का भूपकौं, जस गाऊं कर प्रीत ।
बावन गढ बाका सरस, हद हिंदवन की रीति ।। ४ ।।

अलवरगढ का भूप कौं, जस कवि कहै वखांन ।
जैसी जिन करनी करी, कहै बिप्र बेजान ।। ५ ।।

बनैसिंघ राजा हुवो, सूर कौ सौ तेज ।
दुसमन मार दफै किया, अपनी राखी पैंज ।। ६ ।।

दोहा

अन्त

तो लौ ध्रुव जौ लौ धरा, जो लौ जस की जोत ।
चींरजीव रहौ लालजी, राज सवायौ होत ।। १ ।।

सरन गही वेजान कवि, करौ सदा प्रतिपाल ।
मुक्त होय दरसन किये, वनै विहारी लाल ।। २ ।।

पुष्पिका

इति श्रीबनरूपबिहारी-विलास संपूर्ण ।

x x x

126/4981 (1) विनयसिंहजी विजय संग्राम-वर्णन

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रारम्भ

अथ श्रीमहाराव राजा सबाई बिनयसिंहजी बहादुर विजय-संग्राम बर्णनं ।

।। तत्रादौ गणेश-स्तुति ।।

दोहा

प्रथम नाम सूमिरन करौं, गणपति गुन विस्तार ।
विघन हरन कारज करन, सुख पावत संसार ।। १ ।।

देव अदेव विचारि कै, प्रथम लेत यह नाम ।
लंबोदर सिंधुर वदन, जपत रहत निज धाम ।। २ ।।

छप्पै

गावत देव अदेव सवै गुन धाम सु छाजत ।
लंबोदर निज नाम सीस पर चंद विराजत ।।
चारि भुजा सौ देत सदाँ चतुअर्थ पदारथ ।
सागर बुद्धि अपार करत सबही को स्वारथ ।।
सु खुसाल हिय नाम सरस धरि अति अनूप शोभा सहित ।
बर विनयसिंह कूरम कलस करौं सदां सुखसार नित ।। ३ ।।

दोहा

अन्त

सोहत वैठि मसंद पर, विनयसिंह महाराज ।
जैसे सुभ सुरलोक मै, राजतु है सुरराज ।। ४९ ।।

रचनाकाल (वि.सं. 1881)

संवतु ससि वसु अष्टं विधु, पूरन जय संग्राम ।
माघ बदी दशमी सुतिथि, सुक्रवार विश्राम ।। ५० ।।

पुष्पिका

इति श्रीमहारावराजाजी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री सवाई विनयसिंहजी बहादुर विजयसंग्राम संपूर्णम् ।। श्रीरस्तु ।। संवत १८८१ माघ शुक्ल तिथौ १३ भौमवासरे लिखतं भगवान ।। श्रीरस्तु ।। शुभंभूयात् ।।

x x x

209/4870 रामायण

प्रारम्भ

श्रीगनेसाय नमः । श्रीमते रामानुजाय नमः । श्री सरस्वते नमः । अथ लिख्यते वालकांड ।।

श्लोक

तत्वं वेदांतशास्त्रस्मृतिनिगममहत्संहितानाटकानां ।
यत्तत्वं तापिनीनामुरगपतिमतेमत्पुरावृत्तजातं ।।
पौराणीयंचतत्वंकथयतिनितरांकाव्य रामायणानां ।
साहित्यानां रहस्यं विमलमतिमुदे विश्वनाथःबबन्धे ।।१।।

सोरठा

परहु तें पर प्रभु दानि, प्रियादास पद पदुम कहं ।
करि प्रनाम उर आंनि, कहौं चरित पर राम के ।।

वंदौ हित हरिवंस, रसिक सिरोमनि रास रस ।
करतहिं जासु प्रसंस, मगन मोर मन मोद मैं ।।

चौपाई

श्री हरिवंस कुलोदधि जायो, सकल ताप हर सोम सुहायो ।।
चंदूलाल श्री हरिरस भीनो, तासु शिष्य प्रियदास प्रवीनो ।।

जासु चरित जग कलिमल हरता । सुजंन सुखद सुमिरत सुचि करता ।।
मन रमनीय जासु सब करनी । अद्भुत अवंनि जाइ किम वरनी ।।

भीपंन भूरि भवहिं भय भोयो । महाप्रेत पातक गन धोयो ।।
कियें कृपा भागवत सुनायो । तुरत तारि हरि पुरहि पठायो ।।

परे पुनीत पाइ जेहिं देसा । भयो सो पावन सहित नरेसा ।।
करि करि दरस परस जंन भागी । भे हरिपद अंवुज अनुरागी ।।

ग्रन्थमाहात्म्य

दोहा

रूपनाम अनुधांम पर, लीलहु है यहि मांहि ।
हाथ उठायें कहत कछु, रामांयन सम नांहि ।।

अस कहि हर रामांयन हिं, पुनि पुनि नायो माथ ।
कहि सो भव छुटि राम लसि, मुदित भयो विसुनाथ ।

कथा रसिक जे होंहिगे, प्रेमो संत सुजांन ।।
यह रामांयन छोंडि कै, तिनकों अहै न आंन ।।

दोहा

जैति जैति श्री हरि गुरु, प्रियादास रस गाथ ।
रामांयंन जिनकी कृपा, कह मूरख विश्वनाथ ।।

जैति जैति वांनी जैति, आचारज करतार ।
परमपरा गुरु की जपति, वरनन जेहि सुखसार ।

सोरठा

जै जै सिय रघुनाथ, बसहु आइ मेरे हियें ।
गह्यो सरन विसुनाथ, देहु नाथ निज प्रेम पर ।।१७४।।

।। अथ कमलबंध छपद ।।

विस्वनाथ कर नाथ राम जेहि हर उर वर धर ।
प्यार मार सिर-मौर वीरवर कर धर वर सर ।।
वार वार हर भार पार करन खर हर वर ।
घोर जोर डर वार पीर उर हर पर दरफर ।।
सो रच्यौ रहै रस सो रम रम्यो रहै रवकार वर ।
ह्वै रह्यो रसै रम्ये रती ररा रवै रटिर मुर नर ।

पुष्पिका इति श्रीमहाराजकुमार श्री बाबू साहेब विस्वनाथसिंहजूदेवकृत उत्तरकांड समाप्त पौष सुदि १२ संवत १८८९ के साल मुकांम रीमा ।

x x x

210/6040 (5) रामायण

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रारम्भ ।। अथ रामायण कपुरचंद तीखे कृत ।।

दोहा

गुर गनेस और गौरजा, सुमीरें होही अनंद ।
कछुक हकीकत राम की, अरज करत है चंद ।।१।।
देव अजायव अजव है, चार हस्त नर डील ।
जंपु बुद्धि प्रकास कर, एकदसन सीर फील ।।२।।

आदि अनंदी गौरीजा, हु निज वीनउ तोही ।
उकत जुकतै अखर सरस, देहु कृपा कर मोही ॥३॥

आदि अनांदी जुगादी है, ताही जपै सव कोई ।
रामचरित अदवुत कथा, सुने पुन्य फल होय ॥४॥

जसी जाकी वुधी है, उपजी तसीयै होइ ।
अरे बीचत्र कवी गुनैजनो, हास नै करीयो कोइ ॥५॥

पुरी अजोध्या भुप जैसरथ, रघुवंश राम अवतार लिय ।
जनक स्वयंवर सिगरीष, धनुष तोरी सीय व्याह किय ॥६॥

अन्त

ग्रन्थ-माहात्म्य

रामराम पुनि राम कहि, कल विष डारे धोय ।
रामायन अदवुत कथा, सुने पुन्य फल होय ॥१५६॥

छपो संवत सत्रहसः भूप विक्रम को भनिय ।
संन हजार पचास, चार हजार तको गनियो ॥

फुर वदी वसाख चतुरनलैः, जाने ग्याती साही जहापति साहा ।
अदल आदल वीख्यातः । येक सो वावन कवित्त है, पढ़त सुनत हरखैं
हीयो । जसवरनन श्री रघुनाथ कोः कपूरचन्द तीखे कीयो ॥१५७॥

पुष्पिका इती श्रीकपूरचन्दतीखेकृत ब्राह्मण सारस्वत रामायन सम्पूर्ण समा-
पता । संवत १८०५ जेठ वदि ६ चन्द्रवार लिखते विप्र कुजमन पठनार्थं क्षत्री
वंशोत्पन्न भक्त श्री संभुनाथजी लिखी मोजीराम कायत मिति वैसाख वदी १
सोमवार संवत १८४३ ।

216/5709 वनराव-रूपक

प्रारम्भ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमते सीतारामाय नमः ॥ श्रीसरस्वती नमः
। श्रीपरमगुरुभ्यो नमः । श्रीचावडकुलदेव्याय नमः । श्रीकरणीजी चौरासी
चारणाय नमः । श्रीसूरजनारायण नमः । श्रीबजरंगाय नमः ।

अथ ग्रन्थ रावराजा वनैसिहजीरो नांव वनराव-विलास बारहठ गुलाब-
सिंह जागावतरो कहियो राववनरावरा हुकम प्रमाण जस कीयो ।

।। अथ गाहा चौसर-गणेशजीरी अस्तुति ।।

वारण मुख सिर सीस लंबोदर, दन्त एक लंबोदर धारण ।
दुरमति दूर करण लम्बोदर, दीजै बुद्धि जसकरण लम्बोदर ।।१।।

।। श्री रघुनाथजी री स्तुति ।।

सेज सेस पोढण पय सागर, सखा सुग्रीव दीयण सुख-सागर ।
सिर दस कांपि सेत बांधि सागर, सीताराम द्रबो बुद्धि-सागर ।।

छप्पय

।। श्री नृंसिहजी री स्तुति ।।

हरि रवि दह सुत मिहिर सुमणि श्रीशचक्र खगेसुर ।
रिपि भुव चख मुख दाढ कंठवर हथ जु वलकर ।
अठग तेज मख नसय वोयवल भरिण आरूह ।
मारन रफ वन मनव सुत मंदलिद खल स्रपसह ।
जत प्रभात जागह तपाय जण गहण प्रिया आवध गमण ।
सिव हस अनल जमरतंन श्रीयस सभ्रण गस नर हर सरण ।।१।।

अन्त

अथ गुण(द)वावैत लिख्यते

गणपति चरण गहि पुजि वर पांवु ।
राव वनराव रिझावण कुं दवावैत गांवु ।
भाल वाद भलहलै सिर वासिग की सोभा ।
कपोलु की मंद सुगंध भवर भ्रमत लीना ।
रह येक चारि भुजा सस्त्र फरस सोहै ।
बुधि दाता लम्बोदर मनमथ मन मोहै ।
भारथी श्री गुण भंडार वेद चारि वरणी ।
वाहण मराल वाणि काज सुध करणी ।
दुहुवै वरदान दीजे आखिर सुध आवै ।
हृदै कंठ जीह वमोगुण सुकवी गावै ।।

गुर येम चरण जुगलधान चित धारूं ।
परम गुरु कृपा पुजव परि जग वारूं ।
ऋहुदेव अग्रत वै ग्रन्थ यह लगावै ।
वुधि वुकत जुकति वधै आखर सुध आवै ।
राव वनराव के हाथिय की लड़ायो ।
कविराज वुधि सार गुण कहि करि गायी ।
राव वनराव के सभा वीचि विराजमान कैसे दरसावै ।
देव कु संभर वीचि जैसे सुरपति छिवि छावै ।
दान खाग रीझ छोल दिन दिन वधती दरसावै ।
गुणयण तस नति नवा करि सुणावै अंम गज रीझा पावै ।
राव वनराव के सभासद केसे नजरि आवै ।
हुसन अकलि रम तभी कवी सारि कहि बनावै ।
आफुकी-सि कारी गुलालैका-सा खेंत ।
गुलमहदीकी-सी गुलजार ।

x x x

224/4987 (1) विनयविलास (राजश्री दूषन भूषन वर्णन)

प्रारम्भ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ राजश्री दूषन भूषन वर्णनम् ॥ आशीर्वाद ॥

छप्पय

गंगा गोमति गरूड गदा गिरजा गनाई ।
गोवर्द्धन गोविंद ग्यान गीता गुन गाई ।
गोपति गोकुल गोप गणाधिप गिरा गुसाई ।
गोतम गोमय गोर जोर गोदावरि आई ।
हरिनाथ सुकवि गावत सुजसु विनैसिंह वलवंत भुम्र ।
पुनि गंधर्व ग्रह आदि गुर ए सव रक्षा करहि तुम्र ॥१॥

चौपाई

प्रथम सिद्धि सुमिरो गननायक । सकलकामना को सुखदायक ॥
करि वर वदन विलोकत जासू । तुरत होत सब विघन विनासू ॥२॥

रचनाकाल (सं. 1875 वि.)

संवत सर मुनि वसु ससि गायो । पौष शुक्ल रस शनि समुझायो ।।
सादर कवि हरिनाथ बनायो । विनैंसिंह को सुजस सुहायो ।।३।।

परम कृपा करि यह फुरमाई । कहियै राजनीति सुखदाई ।।
सारद सत कवि सुमति सुहाई । विविध विवेक धरम हितलाई ।।४।।

मनमैं विमल बिनोद विचारी । जथा जोग बरनौ अनुसारी ।।
दसमुख जीति राम घर आये । सबके आनन्द होत वधाये ।।५।।

येक समैं सीता रघुवीरा । सभा मध्य बैठे रनधीरा ।
तेही समय अकल मुनि आये । असित अंगिरा गरग सुहाये ।।६।।

गौतम वालमीक दुरवासा । भरद्वाज भृगु परम प्रकासा ।।
वामदेव ऋतु कर्दम कट्ठ । विस्वामित्र वसिष्ट प्रचट्ठ ।।७।।

कस्यपु कुत्स व्यांस वरुनोदय । पर्वतादि आए अरुनोदय ।।
उठे विलोकि राम रनधीरा । सभा समेत वंधुवर वीरा ।।८।।

दोहा

अन्त

भयो नृपति वखतेसके, विनैंसिंह बलवंत ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, छायो सुजसु दिगंत ।।२२८।।

तिन यह कवि हरनाथ सौ, फुरमाई करि प्रीति ।
उचित जथारथ वरनि सब, कहौ राजकी नीति ।।२२९।।

राम वसिष्ट प्रवोध मैं, वरनो मति अनुसारि ।
दूषन भूषन लखि सुकवि, लीजौ चतुर सुधारि ।।२३०।।

कीनो विनैं विलास मैं, संपति सुखमा धाम ।
राजनीति या ग्रन्थ को, दूषन भूषन नाम ।।२३१।।

पुष्पिका

इति श्री महाराव राजा बहादुर विनैंसिंह बलवंत विरचितायां कवि हरिनाथ कृते श्री रामचन्द्र वसिष्ठ संवादे बिनै विलासे राजश्री दूषन भूषन वर्णन संपूर्णम् ।। शुभम् ।। संवत १८७५ माघ शुक्ला तिथौ १० गुरवारे शुभम् ।

x x x

224/4993 विवाहविनोद (विनयसिंह-विवाहोत्सव)

।। श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।।

प्रारम्भ

अथ विवाहविनोद लिख्यते ।।

छप्पय

सोभित सुंडा दंड गंड मद कुंडल मंडित ।
कुंडलि कौ उपवीत रीत तांडव विधि पंडित ।।
गुंजत चहु मधुपपुंज मदमत मानि सुख ।
एकदत प्रिय सत अंक रिध सिधि मयंक मुख ।।
सिंधूर भाल भुवनाधिपति नितप्रित मगल मूरिमय ।
सिव सुवन भुवन भूषण सदा दूषणारि गणराज जय ।।१।।

दोहा

बंदि भवानी पद कमल, भूप सुता कौ व्याह ।
वरणौ मति मेरी जिती, तिहकौं चरित्त अथाह ।।२।।

अचल हेम भूपति विनय, तनया ता सुभ वानि ।
प्रगट भई तवतैं सुपुर, भयौ सुमंगल खांनि ।।३।।

कवित्त

मंगल सकल पुर द्वार द्वार वंदवार ।
वांटी पुरवासिन वधाई मन भावनी ।।
कहत हमारे प्रतिपालक प्रजेस भए ।
व्है है अव आस सिध्यफल उपजावनी ।।
रामलाल सुकवि समस्त गय हय पाय ।
अति हरखाय गाय कीरति कहावनी ।।
जाके जन्म लेत भूप विनय निकेत आई ।
इंदरा समेत पति सुहावनी ।।४।।

अन्त

छंद-दुपई

अरु कहियौ यह त्याग वाटिवों अवसि जरूर तुमैं है ।
तुमको नीकौ मंत्र वतावौ सुनियै उचित हमैं है ।।
जो हमरौ करत वहो सो तौ हमनै सवरौ कीनौ ।
पत्र पुष्प सरधा समेत नृप समझि लीजियै दीनौ ।।
जो जाचिक हमार है जिनको हम तो औरहु दैहै ।
नहि सरधा तुमारी तौ सवको हम सनमान करें है ।।
यह सुनि हुकम भूपको संमन विजय वाग में जाकै ।
नृप सिरदारसिंघ को सामादई सवै समराकै ।।
हय हाथी सिवकारथ वस्तर जटित जवाहर गहने ।
दए कहे कछु औरहु तुमको श्री विनेस नै दैने ।।

x x x

237/5033 शिवदानपचीसी

प्रारम्भ

अथ श्री शिवदान-पच्चीसी जगन्नाथ कवि कृत लिख्यते ।

दोहा

निज छवितें हर मदन सदा दायक दान विशेष ।
अलवर पति आनन्द निधि श्री शिवदान नरेश ।।१।।

प्रजा मोद दायक सदा भायक सज्जन वृन्द ।
लायक जन सनमान्प्रद, श्री शिवदान नरिन्द ।।२।।

सकल सुकृत फल सहित प्रभु, नारव वंश प्रदीप ।
परम सुशील कृपायतन, श्री शिवदान महीप ।।३।।

दीनन हित अशरण शरण, हरण अखिल जञ्जाल ।
सज्जन जन सब सुखकरण, श्री शिवदान भुआल ।।४।।

अन्त

नृप शिवदान सुजान सम, नीति निधान न आन ।
किन्हो स्ववश जिहान जिन, दान कृपाण विधान ।।२२।।

सदय हृदय शोभित सदा, रवि सम उदय प्रमांन ।
विनय धराधव के तनय, सनय भूप शिवदान ।।२३।।

जय धन सञ्चय करि द्विजन्ह, दायक हय गय दान ।
नय निधान अरिलय करन, अभय भूप शिवदान ।।२४।।

वालंक वृद्ध तियान के, प्रतिपालक सविशेष ।
अरि घालक सालक खलन, श्री शिवदान नरेश ।।२५।।

नृप शिवदान-पचीसी जग सुखदान ।
जगन्नाथ कवि भाखी करि गुनगान ।

पुष्पिका इति श्री शिवदान पच्चीसी समाप्तम् ।

x x x

239/4827 शिवदानविनोद (माधवीवसंत)

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

दोहा

गजमुख सुख संपति सदन, मदन कदन कुल केतु ।
विघन हरन मंगलकरन, वुद्धि मिलता हेतु ।।१।।

श्री गुरदेव दयाल के, चरन कमल उर आनि ।
छंद वंद करि कहत हो, कथा सरस रस खानि ।।२।।

कूरम कुल मैं उदित भें, भूपर भानु प्रताप ।
जिन अरि कुल तम नास करि, हरी प्रजनकी ताप ।।३।।

ग्रन्थ आरम्भ

सनमाने सब सुकवि निज, श्री नरेश शिवदानि ।
पुनि कवि सेखर पै करी, कृपा आपनो जानि ।।२७।।

फरमायो प्रभु मोद सो, कथा सुहावनि कोय ।
सेखर रस शृंगार मैं, रच्यो अपूरव जोय ।।२८।।

आज्ञा नृप शिवदान की, कवि सेखर धरि सीस ।
रची कथा शृंगार मैं, सोधि पढै कवि ईस ।।२९।।

रच्यौ भूप शिवदान हित, सुनि मानत जगमोद ।
भयो नाम याते विदित, श्री शिवदान विनोद ।।३०।।

अन्त

अैसे भूप दिलीप को, गावत सुजस अनंत ।
द्विज वसंत लै माधवी, वन को गयो तुरंत ।। ५७ ।।

सिगरे साजि सुवाहु के, सब विधि राज समाज ।
गयो आपने देस को, तव दिलीप महाराज ।। ५८ ।।

दई माधवी विप्रको, कियो सुवाहु महीप ।।
उथ पिथापि पुनि आप तब, निजपुर गयो दिलीप ।। ५९ ।।

माधव विक्रम सोय है, कह्यो कछुक इतिहास ।
नाटक-सो सेखर करी, कथा सरस परकास ।। ६० ।।

जौ लौं मेरु महानु महि, मनु अंतर महराज ।
श्री सिवदानि महीप को, तौ लौं राज समाज ।। ६१ ।।

पुष्पिका

स्वस्ति श्री मन्महाराजाधिराज राजेंद्र श्री १०८ सवाई शिवदानसिंह हेतव ।। कवि चन्द्रशेखर कृत माधवी-वसंत कथानक: समाप्त: ।। शुभम् भवतु ।। कल्याणम् ।।

x x x

240/4821 शिवरूपमंगल

प्रारम्भ

श्री गणेशाय नम: ।।

अथ शिवरूपमंगल ग्रन्थ लिख्यते ।।

सिधि सदन गज वदन तुम, सारद सुचि सु सुवेश ।
करो अनुगिरह ग्रन्थकी, मंगल रूप प्रवेश ।। १ ।।

षटमुख बदन सुखसदन सिधि, संकर-सुत निज नाम ।
रूप मंगल वरनन करौं, बहु संपूरन काम ॥ २ ॥

विघन हरन मंगल करन, शिव मंगल सुख दैन ।
शिव रूप मंगल सदा, देहु चरन रज चैन ॥३ ॥

प्रथम गुरु विनती करौं, धरि चरनन बिच सीस ।
देहु विवेक जु मोहि प्रभु, भक्ति करो बकसीस ॥ ४ ॥

जुगल रूप शिव भूप अति, रामचन्द्र बलवीर ।
अभै कीजिये भक्ति प्रभु, उपजै सुखद सरीर ॥ ५ ॥

अरन उदै आनंद किरन, सुजस प्रकाश दिनेस ।
ध्यान करत तम नास है, मूतं मोद बिसेस ॥ ६ ॥

शिव मंगल गुन गाईऐ, राधा कृसन रिझाय ।
रूस रसक छवि पेखि कर, बरनत है सिर नाय ॥ ७ ॥

दोहा

पुष्पिका शिव रूप मंगल सुधि, सुकवि करि ग्रन्थ उदार ॥
(गलसदा पूरति ग्रंथ सुचार ॥)
अक्षर अर्थ अनेक हैं, लीजे सुकवि सुधार ॥ १ ॥

मो मनसा पूरन हुई, पायो सुत शिवदान ।
दास निरोगी राखिये, देहु सुजस कल्यान ॥ २ ॥

विनय करी मंगल सहित, मंगल कीयो अनूप ।
सदा रक्षक मो वंशकी, रूप रसिक शिव भूप ॥ ३ ॥

पुष्पिका इति श्री शिवरूपमंगल ग्रंथ संपूर्णम् ॥ वैशाख कृष्ण १२ मंगलवार संवत् १६४८ ॥

x x x

प्रारम्भ

208/4824 रामरास

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दोहा

शंकर सुत सुनि बीनती, प्रेम प्रीत उर धार ।
रामरास बरनन करूं, अधिक रूप बलिहार ॥ १ ॥

॥ रामराजी-छंद ॥

पुरी अयोध्या नगर नवीनौं, दसरथ-सुत तहँ जनम जु लीनौं ॥
कौसल्या-सुत राम प्रवीनौं, जननी जनक सरस सुख दीनौं ॥
जोरी जुगल चारू सुत जाकैं, सुमित्रा-सुत लक्षमन-से ताकैं ॥
केकैं-सुत हैं भरत सत्रुघन, आंनद रूप सरूप अधिक घन ॥ २ ॥

॥ चतुष्पदी-छंद ॥

पुरी पवित्र बनी बिचित्र आंनद सुखद प्रकासी ॥
मुनि मन रागी होत बिरागी रामचन्द्र छिबि चंद्रछिमासी ॥
निसि दिन राजैं सब सुख काजैं पततिन पाप बिनासी ॥
आंच अगारन जरन निस तारन चिंतामन है रूप रमा-सी ॥ ३ ॥

॥ रमन-छंद ॥

निकट सरजू बहत नीर, धोरी धारा अति गंभीर ॥
वापी कूप तडाग तट तीर, निरखत रूप सरूप धीर ॥ ४ ॥

दोहा

श्रवन सुनी बरनन करूं, मति असकंद पुरान ॥
ताकी महिमा को कहै, रामरास सुखदान ॥ ५ ॥

शौनक सूत संवाद की, जानत ना कोउ भेद ॥
कौसल खंड प्रसंग में, रूप रास निरवेद ॥ ६ ॥

अन्त

मंत्र तंत्र उपदेस दे, सुत शिवदान विनेस ।
भुप भाग्य पूरन गुरू, श्री शिवदान नरेश ।। २२२ ।।

पात्र श्री विनयेस की, तिन्हें प्रसंसा कीन ।
गुल बदन गुन-गन कहैं, स्वामी-भक्ति रसलीन ।। २२३ ।।

रूप कवरि तापैं सदा, राखत कृपा विसेस ।
संजुत रसिक प्रवीन अति, किरति धाम सुदेस ।। २२४ ।।

लेकर वीन सुदीन ह्वै, मूरछना श्रुति ग्राम ।
करत उचार अलापको, सपत सुरां सुखदाम ।। २२५ ।।

रचनाकाल (सं. 1918 वि.)

संवत गुनीस अठार अति, शुक्ल पक्ष भादुं मास ।
ग्रंथ सपूरन सरन अति, रघुवर चरनन पास ।। २२६ ।।

आज दिवस आनद अगनं, सूरज वार विचार ।
पंचम सबद प्रकाश तैं, रच्यो सुहित चित धार ।। २२७ ।।

पुष्पिका

इति श्री रूपदेव्या कृत रामराम संपूर्णम् ।।

x x x

246/4784 (I) सभाप्रकाश

प्रारम्भ

।। श्रीरामजी ।।

अथ सभाप्रकाश लिख्यते ।।

दोहा

उठ प्रात सुमरिये, गणपत नाम उचार ।
बुद्धि विवेक की ग्यान जड, हिरदै ध्यान विचार ।। १ ।।

शिव गौरी पुत्र प्रघठ, गणपति राज कुमार ।
शुभ कारज मंगल करन, रिद्धि सिद्ध मंगलवार ।। २ ।।

सूरज तुम प्रताप हो, महर करो महाराज ।
मै दीनन तुम दयाल हो, सबहि सवारो काज ।। ३ ।।

कर करणी कल्यान जस, मो विनती चितलाय ।
करो कृपा वलवान तुम, लीजे चरन लगाय ।।४।।

नौऊं ग्रह मनाय कैं, मन इच्छया फल पाय ।
कर जोरू' विनती करू', महर करो चितलाय ।।५।।

स्याम रूप मुरली अधर, सोभा वरणि न जाय ।
सग राधे गोपी बहुर, दरसन वेग दिखाय ।।६।।

अन्त

अचल मुवारिक तुम सदा, चिरंजीवो सिरताज ।
जनम घडी सीतल घडी, सिद्धि लगन शुभ काज ।।१०७।।

रोम-रोम मैं रम गये, मोहन मदन गुपाल ।
चित चरना चेरी भई, जग पुरन प्रतपाल ।।१०८।।

सवैया

चितप्रकास कहै कर जोरि कैं विनती मेरी यहै सुनि लीजै ।
सेव करू' पद पंकज की नित हाजिर होय रहूँ यह कीजै ।।
किंकरि मोहि सदा जानि सुजान प्रमान करो जस लीजै ।
चाह यहै हिये की पुजवौ पिय दीनदयाल सुदरसन दीजे ।।१०९।।

पुष्पिका

इति शुभाप्रकाश संपूर्णम् लिखतं लक्ष्मीनारायण शर्म्मा मिति पोष कृष्णा २ रविवार संवत १९६७ का ।

x x x

249/6011 (2) सुशीलाकल्किवर्णनम्

प्रारम्भ

।। श्रीगणेशाय नमः ।। सुसीला कल्कि वर्णन ।

दोहा

गुन पारन बारन वदन, वुधि कारन धरि ध्यान ।
भव तारन टारन विघन, जारन प्रति अज्ञान ।।१।।

असे महागनेस को, प्रणति करत कर सीस ।
वहुरचो बंदन करत हो, गिरिजा सहित गिरीस ।।२।।

लसत हार उत हार अहि, मुक्त मंग उत गंग ।
जग अतीत जग रूप हो, पार्वती शिव संग ।।३।।

वेई जुगलकिसोर है, यह धरि निहचै चित्त ।
तातै वरनंन करत हों, दोहा छंद कवित्त ।।४।।

छप्पय

कल्कि रूप प्रभु धरिय करिय चतुरंग चमू सज ।
धर धुक्किय सुक्किय समुद्र सक्किय दिनेस रज ।।
देवदत्त हय चढिय कढिय करवाल काल जिमि ।
करिय रुंड कलि जमन रुंड झुरि परिय मुज इमि ।।
कुल प्रवल राह लखि ग्राह तजि अस्ति सूर मय भिय जरिय ।
दिय अति प्रमोद किय नुति अमर समर जित्ति जग जस भरिय ।।१।।

अन्त विष्णु पद राग रामकलि । जुगल वे उठे भोर रस भीनैं ।।
वे उनको उनको वे मुख लखि होत परम सुख लीनैं ।
कैसी खुली अदखुली पलकै झपि लागति मद छीनैं ।।
पगे प्रेम निसि जगे द्रगनि पर वारों खंजन मीनै ।
अति अलसात जम्हात जात मुसिकात ग्रीव भुज दीनैं ।।
(मनु ससि विद्रुम विद्रुमलता घेरि लिय दामिनि नेह नवीनैं)
मनु ससि चहु ओर तम घेरचो दामनि घन जु नवीनैं ।।
हियराते माते उठि ह्वाते उपमा वनै नवीनैं ।
तन मन धन वेलखी खुस्याल अवस न्योछावरि कीनैं ।।१।।

x x x

277/5027 (1) पहेलो-शतक

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ पहेलीसतक लिख्यते ।।

दोहा

प्रथम सुमरि ब्रजराजकौं, गनपति को सिर नाय ।
करौं पहेली सतक कौं, नीकी भांति बनाय ।।१।।

सर सरिता कैं नीचै चहियैं, जब कहिये तब हाजरि लहिये ।
पलटै जा नरको नहि होय, ता नरकौं नर बदै न कोय ।।२।।

चारि पाय सोभत हैं दाय, तामै सोरह रहै समाय ।
खाय सबै नर कोउ न खाय, ता बिन नर अति बुरो लखाय ।।३।।

आस-पास जह पांनी होय, बीच न ताके सोहत सोये ।
महादेव को प्यारो कहिये, पूरन भाग जबै वह लहिये ।।४।।

चुटिया हाथ मूउ है नीचैं, रोवै महा जबहि गहि खींचै ।
हरिकौं जो देखैं ता ऊपर, ताके सम नर और न भू पर ।।५।।

अन्त तिरिया एक लखी सुखसाज, इक मुख चीकटि इक मुख नाज ।
दोऊ करन मारिये भारी, रीझि रहे सगरे नर नारी ।।९८।।

एक पुरुष जगमैं यौं सोहै, ल्यावै पैंढइबे कौं कोहै ।
बुरो भलो सब भोग लखावै, वाहि छटे तैं प्रान नसावै ।।९९।।

नर भूंजन के घर मै होय, ताकौं जांनत है सब लोय ।
राजा जाके ऊपर राखै, तासौं नीको सबनगु भाखैं ।।१००।।

दोहा

चारि पांच छह सात औ, आठ रु नौ सुखदाय ।
प्रांननाथ नृप राम कौं, रास बहोत सहाय ।।१०१।।

पुष्पिका इति सोती प्रांननाथ कृत पहेली-सतक समाप्ता ।
॥ श्री रामजी ॥

x x x

263/5027 (2) जयबिलास प्रहेलिका त्रिशति

आरम्भ ॥ अथ पहेलिका लिख्यते ॥

चौपई

सब तन छाया मुद्रा धरै । सिखा सूत्र को त्याग न करै ॥
करै नृत्य नित प्रेम वढावै । आनंदित चित हरि गुन गावै ॥१॥

राति द्योस जलसाई रहे । सीत घांम सिर ऊपर सहै ॥
विन रसनां हरि के गुन गावै । ज्ञांन बिना न अभै पद पावै ॥२॥

विनां पाय अवनी पर धावै । बिनां श्रवन सुनि सीस डुलावै ॥
पवन अहार करै सो जोगी । राते परते कहिये भोगी ॥३॥

भखै अन्न जल लेय नरती । त्यागै मल न कहोगे जती ॥
जापर चढै जगत सब हसै । तापर चढै खरी सो लसै ॥४॥

पंछी बहुत कंदरा रहै । मुख खोलै चारे कौं चहै ॥
उडै जबै तब फेरि न आवै । अपने घर की सुधि बिसरावै ॥५॥

अन्त निस दिन कबहूं न आवै जाय । चलिबेकेसे करै उपाय ।
अध ऊरध स्वासा पुनि लेय । अवनीं पार न कबहू देय ॥२९६॥

थिर सुभाव जाको सब गनैं । तानीं वानीं सो नित तनैं ।
अनकूलन सौं है प्रतिकूल । तिनके हनै लहै चित फूल ॥२९७॥

है मतंग यातैं तन छाम । खांन पांन को लेत न नाम ।
आठ गाठ आधे तन धरैं । च्यार पाय पैं पेंडन भरैं ॥२९८॥

नारि एक द्वै रसनां धरैं। द्वै दृग सौं सबको मन हरै ॥
बाल बृद्ध जब जासौं खेलै। अंगुरि ताके आंखिन मे लै ॥२९९॥

करी पहेली अर्थ न दुरयौ। बुधि अनुमांन धरयौ जो फुरयौ।
जैविलास है याको नाम। लहै अरथ लागै अभिराम ॥३००॥

पुष्पिका इति जयविलास प्रहेलिका त्रिसती समाप्ता। ॥ शुभम् ॥

x x x

282/5751 पुष्पमंजरी

प्रारम्भ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ फुलमंजरी लिख्यते ॥

दोहा

सीस मुकट कुंडल अलक, सग सोहत बृजबाल।
पहरै माल गुलाब की, आवत है नंदलाल। १॥

चंपक तनसरी सुमन, नैन चपल मृग मीन।
नवदुलही तीन रूप लख, लाल भये आधीन ॥२॥

फुली रहत नीहवधे, वहुत सघन वन-वेल।
कंज पोहप उर माल धर, करत कुंज मधु केल ॥३॥

श्वेत वरन सोरन अधीक, मानु मंजु की धुप।
लसत राधी के कुवर कुं, कर केवरो अनूप ॥४॥

अन्त तज लाई लाये भले, महा दुखी तीह वाल।
और ख्याल सव छाड को, यह कर नैहै लाल ॥२९॥

करत फीरत सव सखीन मैं, सोतीन लावत सूल।
आज लाल हमकु दीयो, सुरजमुखी को फूल ॥३०॥

पीतांबर की वोछनी, सोहत स्याम सरीर ।
कुसम केतकी मुकट धर, आवत है वलवीर ।।३१।।

पहपवंध यह ग्रन्थ है; वहु पहुपन को नाम ।
परसी(त)म याकै पढै, लखै पहुप कै नाव ।।३२।।

पुष्पिका ।। इति श्री पुष्पमंजरी संपूर्ण ।।१।।

x x x

306/4832 (12) बारहमास

प्रारम्भ ।। अथ बारहमास कवि केसवदास वरनन ।। मांस चैत्र ।।

छप्पय

फूली लतिका ललीत, तरुन त्तन फूलै तरवर ।।
फूली सलित्ता सुभग, सरस फूले सब सरवर ।।
फूली कांमनी कांम, रूप करकंतहि पूजहि ।।
सुक सारो कुल केलि, फूल कोकिल कल कूजहि ।।
कहि केसव अंसी फूल महि, सूलन फूलन लाइयै ।।
पिय आप चलन की काचली, चित्तन चैत चलाइयै ।।१।।

इति ।। फागुण ।।

लोकराज तज राज, रंक निरसंक विराजत ।।
जोइ आवत सोइ कहत, करत पुनि कहत न लाजत ।।
घर घर जुवती जुवन, जोर गहि गाठन जोरहि ।।
वसन छीन मुख मांज, अंज लोचन तनु तोरहि ।।
पडवासन वास प्रकास उड, भुवमंडल सब मडियै ।।
कहै केसव दास विलास निघ, फागुण फागण छडियै ।। १२ ।।

पुष्पिका ।। इति बारामासी समाप्त ।।

x x x

312/4832(5) भैर-बावनी

प्रारम्भ

श्री श्रीमाहाराजाधिराज श्री श्री १०८ श्री श्री श्री वलवंतसिहजी-कृत भैर-बावनी लिख्यते ।

सोरठा

प्रभु भजणों कर प्यार, सुखसागर हित त्रिय सहित ।
अस खग अरु आचार, भल पंचवाता भैरिया ॥१॥

रहणो इक रंगाह, कहणां नहि कूडा कथन ।
चित उजल चंगाह, भला जको इक भैरिया ॥२॥

तज जग झूठी तास, आस राख राघव अठी ।
प्रभु मैटे भव-पास, भजन किया सूं भैरिया ॥३॥

देणों सीखो दांन, ना कहणो सीखो न को ।
मनख जनम सुभ मांन, भाखै वेदग भैरिया ॥४॥

अन्त

सारो सुख संसार, खारो नह किणनूं खरों ।
परगट बळवंत प्यार, भड़ भिड़ जांसू भैरिया ॥५१ ॥

सहै वड़ा सिरदार, किता चुगल चाड़ी करे ।
हाथी गैल हजार, मुसै गंडक केई भैरिया ॥५२॥

चालै कुळरी चाल, रामधरम धारयां रहै ।
दुखियां परां दयाल, ज्यांरो भव क्यूं विगड़े भैरिया ॥५३॥

जग तज आल-जंजाळ, रै कीताणा वैभा करै ।
कलि मै तीनहुं काल, भजन सारहिक भैरिया ॥५४॥

अरथ घणो अनूप, स्वारथ परमारथ सहित ।
भाखी बळवंत भूप, भैरव-बावनी भैरिया ॥५५॥

दोहा

रचनाकाल (सं. 1899 वि.)

नवदूणारु ननाणवै, म्हा सुद्ध बारस मद्धि ।
रतनापुर नपराठ वड़, संपूरण करि सिद्धि ।।५६।।

पुष्पिका

इति श्री भैर-वावनी संपूर्ण ।।

x x x

317/4731 वसंतवहार (गुलिस्ताँ-भाषा)

प्रारम्भ

।। श्रों श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ वसंतवहार राजनीत लिख्यते ।

कवित्त

मंगल करन दुख दारिद हरन जाके,
चरन सरन अभिलाषा अलकेस के ।
खंडन खलन के प्रवल भुजदंड चंड,
कुण्डल करन जन मंडल दिनेस के ।
कवि रितराज प्रत पारै निजदासन को,
विघन विदारै अति दारन लुकेस के ।
सेस श्री सुरेस सिर नावत हमेस आइ,
आप श्रीमहेस गुन गावत गनेस के ।।१।।

दोहा

श्रीसतिगुर पद पदमकी, सिरधर परम पराग ।
जाते सब सुरदास लख, करै सदा अनुराग ।।२।।

श्री गुरुनानक कृपा निध, सदा सांति सतरूप ।
बार बार वंदन करौं, चरन सरोज अनूप ।।३।।

श्री गुरु गोविन्दसिंघ जू, सोढवंस अवतंस ।
अभिवंदन तिनको करौं, जुग पद पदम प्रसंस ॥४॥

दुखित देख निज जनन को, लख खल बढे अपार ।
कलमें कलंगी धार गुरु, भे कलंगी अवतार ॥५॥

जव लग ले तन जगत मै, हरि कलंगी अवतार ।
कलंगी वारो राख है, तव लग जन रखवार ॥६॥

सो गुरु श्री महाराज के, सास-सास रखवार ।
जो गुरु लैं वर वाज कर, होत वाज असवार ॥७॥

श्री गुरु गोविंदसिंह के, पंथ खालसे माहि ।
प्रवल नरेन्द्र मृगेस जू, प्रगटे श्री नरनाहि ॥८॥

दिनकर सो निस दिवस मै, जाको दिपत प्रताप ।
चकित होत जिह सुजस लख, सरद सुधा कर आप ॥९॥

गुनगाहक गुनवंत अति, गुनिजन सों जिह प्रीति ।
देस विदेस नमो विदत, जाकी नीत पुनीति ॥१०॥

लख किताव यह नीत की, नाम गुलिसतां जाहि ।
इह विध सो दीनो हुकम, ह्वै भाषा के मांहि ॥११॥

पुनि विचार मनमै कियो, यहि जु नीति को वाग ।
याहि लगावै रीति सो, माली कर अनुराग ॥१२॥

नृप मृगेन्द्र मृगराज को, हुकम पाइ रितराज ।
सकल कविन सिर नाइकर, अव निज रचत समाज ॥१८॥

अन्त ग्रन्थ समापत मै चहत, जो भाख्यो रितरात ।
कह्यो सेखसादी सवै, नहि कहनो मुहि काज ॥३१९॥

ये अवसर लख कहत हौ, अपनो कछु विवहार ।
छम है गुनजन मया कर, अवगुन मोर अपार ॥३२०॥

नृप मृगेन्द्र मृगराज को, तकसीरी रितराज ।
रच्यो ग्रन्थ तकसीर के, माफ करावन काज ।।३२१।।

जस वनावते सुघर जन, वन्यो न मो ते वीर ।
करी यक तकसीर मै, यहि दूसर तकसीर ।।३२२।।

छम है मो अपराध प्रभु, परी विपत सुन घोर ।
अलप जाति अरु अलपगुन, अल्प वैस लख मोर ।।३२३।।

देख छंद रितराज के, करहै सो नपसंद ।
श्री नरेन्द्र मृगराज के, जे न फसे नरफंद ।।३२४।।

तोर मरम के कहन की, करै न कवहू ढील ।
अप वसंत मत सोचकर, सादी भयो वकील ।।३२५।।

अवदलहादी मौलवी, सादी को अवतार ।
तिन समझायो मोह सव, अरथ विचार-विचार ।।३२६।।

अभिमत सादी को अगम, मै जान्यो कछु नाहि ।
जितो मोर मनमै चढचो कीनो भाषा माहि ।।३२७।।

नहि सादी के वाग के, मिले मोह फल फूल ।
सूके पातन मै रह्यो, मन वसत को भूल ।।३२८।।

सो सव पत्र इकत्र कर, ह्वै मन मुदित अपार ।
रच्यो वसंत मृगेस नै, ग्रन्थ वसंतवहार ।।३२९।।

रचनाकाल (वि.सं. 1910)

सम्मत विक्रम जीत को, सत उनीस दस भूर ।
कातिक पूरण के दिवस, भयो ग्रन्थ भरपूर ।।३३०।।

पुष्पिका

इति श्रीमनि महाराज राजाधिराज राजेश्वर श्री नरेन्द्रसिंह महेंद्र वहादर हित कवि वसंत मृगेस विरचिते वसंतवहार ग्रंथे विविध सिखरावन वरननो नाम अष्टमो प्रभाव समाप्तम् ८ शुभम् भूयात् ।। हरिओं ।।

x x x

329/4711(2) राजनीति (आईन अकबरी)

आरम्भ

अथ आईन अकबरी लिख्यते ।

यह राजनीत अरु आईन माफिक हुकम अकबर बादसाह के लिखी जात है । साहजादे अरु उमराव अरु आमिल अरु कोतवाल अरु सभकार बारी याही आईन माफिक राजकाज में बरतें । प्रथम सरदार को योग्य है । आप न्याव यथा योग्य करै । जहां लग होसखे यह काम और को न सोंपे । और के सोंपने में यह दोष है । जो कदाचित फर्यादी की अरु वाकी लाग होवे । सो काबू पाइ कर बदला लेवेगा । अथवा लोभ के अर्थ सांचे को झूठा अरु झूंठे को सांचा करे । इस बात की चौकसी रखनी । नीत विचार कै अपराधी को डंड दीजिये । यह विचारिये ।

अन्त

जो काम और तें बिगड़े । ताका उपाय तोसों बन सखे । जो कछु तोसों बन सखे । जो कछु तोसों बिगड़े । वाका सुधरना कठिन है । या लिये अपना दरावाई रखिये । जो काहूतें बोलाचाली हो जावे । वाको द्रोह चिरकाल मन में न राखिये । ठठा मसखरी थोडा रखिये । तातें मरजाद न बिगड़े । काहू के धर्म-कर्म में कधी न टोकिये । संसार में सभन कों अपना अपना मार्ग है । अपनी कुल-रीत तें कोऊ चूकने वाला नहीं । सर्दारी बहुत कठिन है । जो काम करना होवे । बिना बिचारे कधी न कीजिये ।

पुष्पिका

इति अकबर कृत राजनीति संपूर्णम् ।

x x x

350/5183 अम्बुसागर

नोट—इस ग्रन्थ का आदिअंत अपूर्ण है। चौथे खंड से प्रारम्भ उपलब्ध है।

प्रारम्भ

॥ चतुर्थ खण्ड ॥

आगे ग्यान कयो समुझाई । मुलनांव मै कहीं सुनाईं ॥
मुलनाव कवन के पासा । मुलकै पावें कहावै दासा ॥

जब तक मुल हाथ नही आवै । तब तक नांही दास कहावै ।।
कलजुग साधु बहुतक कहाई । मुल सबद बिरलां पै रहई ।।
सोई नांव साधु जो पावै । तवही साधु पुरा कहावै ।।
सो साधु लोक कह आवै । असंखि शुन्य दीपकह ध्यावै ।।
असंखि सुन्य हंस तजि रै भाई । सून्य तजै दीपकह जाई ।।
तहां जाय पुन्य करै बिलासा । सब हंसन के बैठे पासा ।।
हंस हंस ही ऐक जोरी । करही बिलास ऐक ही खोरी ।।
तहां की आभा कहों बिचारी । तहां के हंसा सदा सुखारी ।।
तहां का भोजन सुनो हो साधु । जहां पुर्ष करही समाधु ।।
दिव सहंश्रदस बीत ही जबही । त्यारी उघरै पुर्ष की तबही ।।

दोहरा

अन्त

पांन जुग जुग भाखेऊ, और परवांना जुग जुग सार ।।
दासकबीर जीवन के ना ऐक, संतोमन जिनि मानौं हारि ।।१।।

ईति मंत्र परवांन । श्रो नांम जीव के कांम ।।
जुग हींडोर सारंग पांन । सेत पुर्ष के करहु ध्यान ।।
हंस पहुंच सति ठिकांन । बाल अमी चाखनि रास ।।
लोकही जारो धनी के हंसा । .... ।।
इति परवांनां जीव के सार । सुरति जीव हो सें हमार ।।
.... । एही परवानां सही ।।

पुष्पिका

ईति श्री अंबुसागर ।। जुग जुग परवांनां भाखेऊ ।। सति सति हम कही ।।
द्वादसमो खंड ।। १२ ।।

नोट:- निम्न लिखित पंक्तियों से जगजीवन उक्त ग्रन्थ का कर्त्ता प्रतीत होता है:-

सांची सांच साखि मैं भाखेऊ । जीवन बरमैं कछु न राखेऊ ।।
आदि अंति सुखसागर रहेऊ । अंबुसागर हिरदा तै कहेऊ ।।
ठीका ज्यांन च्यारि कै पासा । जगजीवन सब कर बिसवासा ।।
बंस हमारे चारि है भाई । जग म्है चारि गुरु कहाई ।।

x x x

360/6127 (1) करुणावेलि

आरम्भ ।। अथ करुनावेली लिख्यते ।।

चौपाई

श्री व्यास सुवन करुना करौ । मो सिर चारु चरन रज धरौ ।।
श्री हित रूप कृपा की आसा । जाचत उर धर वडो हुलासा ।। १ ।।

करुनानिधि तुव नाम कहावैं । मोसो दीन चरन रत पावैं ।।
प्रथम करो करुना गुरराज । जिनकौं सरन गहे की लाज ।। २ ।।

पुनि ये रसिक सुदृष्टि निहारौ । मोपे करुना सदा विचारौ ।।
करुना दया गुर करि हैं । मो उर ताप तिमिर सव हरि हैं ।। ३ ।।

श्री गुरु साधु जाहि अपनावैं । तेइ जन हरि के मन भावैं ।।
जिनको विरद विदित जग माहीं । अभै करें पकरे जावांहीं ।। ४ ।।

दोहा

अन्त श्री हरिवंश प्रतापते, बरनी करुनावेलि ।।
व्रज भूषण राधा धनी, दरसावो रस-केलि ।।६३।।

रचनाकाल (सं. 1804 वि.) संवत सै दस आठ गत, चार वर्ष उपरांत ।।
कृष्ण सरस अभिलाष हित, कथा सुनो हरिसंत ।। ६४ ।।

जेठ वदी पांचे सुदिन, नवल हित रूप विचारु ।।
हरि गुरु साधु कृपा करी, वरन्यौ यह सुखसार ।। ६५ ।।

दीन बंधु करुना अवधि, भक्त-वछल यह नाम ।।
वृंदावन हित लेहु सुधि, बिरद बढे ज्यो स्याम ।। ६६ ।।

पुष्पिका इति श्री करुनावेली वृंदावनदासजी कृत संपूर्ण । श्री हरयेनमः ।।

x x x

367/6128 (2) गीतामृतगंगा

प्रारम्भ ॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ श्रीसर्वेश्वरो गोकुलचन्द जयः ॥ श्री गुरु-चरणोभ्यो नमः ॥

दोहा

मुरली मधुर बजाइ के, जिन मोही व्रजबाल ।
सोई निति प्रति गाइये, दिन इलह गोपाल ॥ १ ॥

रसो वै सो श्रुति कह्यौ, सोई सच्चिदानन्द ।
कहियत वेद पुरान में, परब्रह्म गोविन्द ॥ २ ॥

ब्रह्म प्रभा जाकी कह्यो, ज्यों रवि किरनि लसंत ।
श्री राधा आल्हादिनी, शक्ति वहै इहि कंत ॥ ३ ॥

येकाकी नरमें द्युती, चाह भई जग आदि ।
रमण जोग्य श्री राधिका, प्रगटी शक्ति अनादि ॥ ४ ॥

मूर्तिमान शृंगार हरि, सब रस को आधार ।
रस पुष्टि काज सब शक्ति लियें, व्रजमें करत विहार ॥ ५ ॥

देखो ब्रह्मानंद ते, रसानन्द बढ़ि आहि ।
नारद इहि रस ही पग्यौ, लागि छांड़ि के ताहि ॥ ६ ॥

रसानंद गांधर्व सुनि, थिर चरगति होइ आंन ॥
तिनकी कहा कहिये दशा, जिनके पूरन ज्ञान ॥ ७ ॥

मृगशिशु अहि यासों बंधै, इहि हित तजत जु प्रान ।
समझि न यासों जो पग्यौ, सो पशु तें अज्ञान ॥ ८ ॥

कह्यो है श्री भागोत में, व है पुरुष पशु-रूप ।
सुन्यों न कबहूं कांन जिहि, गोविंद गीत अनूप ॥ ९ ॥

तातें सब रस शास्त्र मथि, सुमिरि जु श्यामा श्याम ।
गीतामृत गगा रची, करि गुरु चरण प्रणाम ।।१०।।

अन्त

चलै लै दुलहनिनि कुंवर निज नगर कों चढ़ी वडि फौज सो अधिक छाजी ।
चहुं दिस वजि उठे विविध वाजे घने घन ज्यौं गंभीर नौवित जु गाजी ।।२०।।

आइ पहुँचे कितकि दिननि में अवध कों अवध नवनिधि भरी पटनि छाई ।
कियो परवेस तव करिकें गठजोर तहां सुघर वर नवकिशोर चारयों भाई ।।२१।।

साजिकें आरती जननी तीन्यों तवै जुवती जग संग लियें साम्हैं आई ।
आरती करि जु पुनि वारि मणि माणिकनि वृंदावन प्रभुनिकी लई वलाई ।।२२।।

पुष्पिका

।। इति श्री व्याह वर्णनं समाप्तः ।। इति श्री श्रीमन्नरायण गोस्वामी चरण कमल मकरंद मिलितं श्रीवृन्दावन स्वामी कृता श्रीगीतामृतगंगा समाप्तः ।।

दोहा

वृन्दावन राधा रमण, चरण कमल में वास ।।
लिखितं देवीप्रसाद हैं, गुरु पद पंकज दास ।। १ ।।

।। श्री संवत् १९७४ चैत्र शु० १५

x x x

405/4822 (1) दानलीला

प्रारम्भ

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ श्रीकृष्ण दानलीला वर्णनं ।।

दोहा

विघन हरन मंगल करन, दुरद वदन इकदंत ।
परस धरन असरन सरन, वुद्धि देहु वरनंत ।।१।।

वंदौ राधा रमण पद, दृढ करि उर आधार ।
गिरा गौरि गणपति सुमिरि, सरस सारदा सार ।।२।।

कृपा पाइ द्विज वरन की, गुरु पद-पंकज धारि ।
सीस नवाइ सुकविनु हरि, लीला रचहु विचारि ।।३।।

लेखक का नाम व स्थान

राधा कृष्ण उपास है, वखतावर निज नाम ।
नरु-वंस कछवाह कुल, माचाडी शुभ ग्राम ।।४।।

राधा कृष्ण सु दृष्टि सौं, मम उर भक्ति प्रकास ।
गढ लीला वनदान की, वर्णौं कृष्ण विलास ।।५।।

कृष्ण कथा यह दान की कहत वखत चित लाइ ।
श्रवण सुनी वर्णन करौं, मत हरिवंश मिलाइ ।।६।।

रसिक भक्त जे जगत मै, सुनौ सबै चित धारि ।
दूषन याके दूरि करि, भूषन देहु सुधारि ।।७।।

काव्य रीति समझौं नहीं, है मेरी मति मंद ।
मै तो कछु जानौ नहीं, तुम जानौ गोविंद ।।८।।

कवि इंदर आज्ञा दई, कीजै, कृष्ण विलास ।
दूरि होइ अज्ञान तम, उपजै प्रेम प्रकाश । ९।।

आज्ञा वखत प्रमान करि, लीनी निज उर धारि ।
दानविलास हुलास सौं, वर्णौं सव निरधारि ।।१०।।

अन्त

दानकेलि गोविंद की, वरनी वखत वनाइ ।
वसो सदा राधा सहित, मो उरमैं जदुराइ ।।४५।।

ग्रन्थ महिमा

राधा कृष्ण विलास की, यह रचना निरधारि ।
सुनै सुनावै समुझि तिंहि, मिलै पदारथ चारि ।।४६।।

लेखक वंश

नरु-वंश कछवाहा कुल, वखत सुवुद्धि विचारि ।
यह लीला वरनी सरस, कृष्ण चरन चित धारि ।।४७।।

सज्जन सब मिलि करि कृपा, याकौं करो प्रसिद्ध ।
धर्म कर्म सुभ सर्म जग, व्है है सुजस समिद्ध ॥४८॥

रचनाकाल (सं. 1854 वि.)

संवत युग सिव वदन वसु. ससियुत कातिक मास ।
कृष्ण पक्ष षष्टी बुधे, पूरण दान विलास ॥४९॥

जगर मगर संपति अगर, सोहत नगर नगीच ।
वखत रची लीला सु यह, अलवर गढ़ के वीच ॥२५०॥

मंगल श्री गोविंद को, वरन्यो, वखत प्रवीन ।
टरत अमंगल नित हि नित, मंगल करन नवीन ॥२५१॥

पुष्पिका

॥ इति श्री कछवाह कुल नरुका राव राजा वखतावरसिंह विरचितं श्री राधा कृष्ण दानलीला वर्णनं ॥ पठनार्थं दिवाणजी रामलालजी ॥

x x x

450/5708 परशरामसागर

प्रारम्भ

॥ श्री निम्बादित्याय नमः ॥ श्री हरिप्रियाय नमः ॥

॥ अथ श्री परशरामदेव जी के दोहा लिख्यते ॥ श्री गुरुचरण-कमलेभ्यो नमः ॥

दोहा

श्री गुरु सन्त समान हरि, जो उपजै विश्वास ।
दरशन परशन पर्म सुख, परसा प्रेम निवास ॥१॥

परमेश्वर कै गुरु, पर्म सनेही साध ।
परशा इनके असमरण, किया कटै अपराध ॥२॥

श्री गुरु समुझि सनेह करि, वारम्वार सम्हार ।
परशराम भव सिंधु की, नाव उतारै पार ॥३॥

नाव तिरै भव सिंधु में, श्री गुरु के उपकार ।
परशा दीखै परगटै, हरि सेवक निर्भार ।।४।।

अन्देसो अनुराग को, सिन्धु सकल संसार ।
परशा तामें ना परैं, श्री गुरु राखनहार ।।५।।

कटुक वचन गुरु के भले, जिनते कारज होय ।
अम्मृत वानी जगत की, परशा निर्फल सोय ।।६।।

श्री गुरु कहें सुमानिये, सत्य शब्द वलि जाव ।
और भूंठ सब जग बकै, सुमिर सांच हरि नाव ।।७।।

परशराम मुनि सीख लै, हरि सुमरण की साखि ।
श्री गुरु दई दयाल हो, सो हिरदै धरि राखि ।।८।।

परशा वड़ दाता गुरु, जिन दीन्हो हरि दान ।
ता हरि के गुण गावता, प्रकट भयो विज्ञान ।।९।।

तासों रहिये दीन ह्वै, जिन्ह दीन्हो हरिनाम ।
परशराम गुरु आपने, कारिये नित परणाम ।।१०।।

परशा हमरे हित गुरु, और हितु हरिदास ।
मनसा वाचा कर्मणा, है हरि को विश्वास ।।११।।

गुरु थापै सो थापियै, ऊंचा भावै नीच ।
परशा जाके सिर वसै, वैसै आय अभीच ।।१२।।

अन्त **दास सुभाव को जोडो ।।२५०।।**

निंदो कोई वंदन करो, कोई कहो कछु संसार ।
परसराम निज दास गुन, हर्ष शोक ते न्यार ।।१।।

दुख सुख गुण औगुण अरत, जो लियैं न माया मांनि ।
परसराम ता दास कै, हर्ष शोक सामानि ।।२।।

पुष्पिका ।। इति श्री परसराम सागरे ग्रंथे श्रीमान परसरामदेवजी कृते साख्यों का जोड़ा सम्पूर्णम् ।। शुभम्भूयात् ।। समाप्तम् ।।

दोहा

रंगनाथ की छावनी, श्री वृन्दावन धाम ।
पुस्तक मैं लिक्खा करूं, कृष्णदास मम नाम ।।

छत्रीसै तिहत्तर संवत, फागुन कृष्णा मान ।
मावस्या शुभ वार वुध, पुस्तक लिखी सुजान ।।

।। समाप्तम् शुभम् ।। इति ।।

x x x

485/4915 भक्त-उपदेशनी

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

आरम्भ अथ भक्त उपदेशनी लिख्यते ।।

अखिल अनादि अनंत ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु ।
परधाम रमतीत राम महतो महांत विभु ।।
प्रणव नमो रामाय नमः सीता सहिताय ।
लक्ष्मणाय भरताय हनुमते शत्रुघ्नायनमः ।।
सपरिवाराय ते सांगाय जय यश मंगल मोदप्रद ।
जन शिवनंद मनाय राम गुन गायरे ।।१।।

ईशनि के जे ईस शीश सव ताहि नवावैं ।
विधि शिव शेष गनेश देव इंद्रादिक ध्यावैं ।।
शनकादिक देवर्षि भजै प्रहलाद ध्रुवादी ।
ता प्रभु को नहि भजै विमुखते मिथ्यावादी ।।
विश्वंध अशरन शरन शरनि निरधारनि आधार ।
जासु नाम पावन पतित अधम उधारन हार ।। रामगुन गायरे ।।२।।

उत्पति करत न अन्य आन मैं लीन न होई ।
अधम उधारन मुक्तिदाता नहि कोई ।।
गुह गनिका गजगीध अजामेल पाहन शिवरी ।
राममंत्र तैं तिरें साखि अज हो शिव गवरी ।।
विष ध्यावत वकी निंदा कृत शिशुपाल शर मारें ।
त्यारो वधिक को अस दीन दयाल राम गुण गायरे ।।३।।

अन्त रचनाकाल (वि.सं. 1871)

शशि मुनि वसु भू वर्ष शरद की पूरनमासी ।
विरंचि भक्ति उपदेशनी शिवनन्द प्रकासी ॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य सुमति सग सदा बढावनि ।
काम क्रोध मद मोह लोभ अभिमान घटावनी ॥

ग्रन्थमहिमा

जैं वाचें सीखें सुनें नित प्रति करें विचार ।
उर उपजें उपदेश तव हरि भजि उतरहि पार ॥ राम गुण गायरे ।।४१॥

भाषा प्राकृत संसकृत्य कविराज वखानें ।
गद्य पद्य प्रस्तार छंद पिंगल मत जानें ॥
मैं निज मत उपदेश हेत ह्वै अक्ष गाये ।
सज्जन लेहि सुधार स्वमति अनुसार वताये ॥
छंद द्विचत्वारिंश ये संत-भक्त जन भेंट ।
नाम भक्ति उपदेशनी विमुखनि मुखैं चपेट ॥ राम गुन गायरे ॥४२॥

पुष्पिका

इति श्री भक्ति उपदेशनी समाप्तमगवत् शुभम्भूयात् ।

x x x

518/5707 युगलानंद समुद्र-लहरि

प्रारम्भ

श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः ॥ श्री निम्बार्कायनमः ॥

अथ माधुरलहरी लिखते ॥

श्लोक

श्रीराधावरपादपद्य युगलं नित्य शरण्यं भजे ।
लब्धं श्रीहरिभक्तदास कृपयातान्स्वं गुरुन्सन्नमे ॥
राधाकृष्णविलासधाम प्रकटी कर्तुं मनो धावति ।
लिप्सा प्रौढतरातुयस्य हृदयेहास्यं न स पस्यति ॥१॥

छन्द

श्री स्वामिनी पद कमल नखमणि चारु चंद्र मयूषता ।
ब्रह्मांड अमित प्रकास प्रसर प्रमोद पूर पियूषता ।।
अनगम्य अकथ अनंत अनवीध अप्रेयमहीमनं ।
कुरु पान चित चकोर इव रस कृष्णदास दृढी मनं ।।

दोहा

हग्द्रिय अक्षर बीज तरु, भक्तिदास फल जोय ।
त्रिपदी संगम सेय सब, तरे रह्यो नहि कोय ।।१।।

हरि कहि भक्ति सुदास भजि, षट अक्षर को मंत्र ।
महिमा वेद पुरान में, जाहि कहैं सब तंत्र ।।२।।

हरि हित भक्त सुदास के, पद नख छटा प्रकास ।
महा मोह तम निविड अति, वंदत होत विनास ।।३।।

योगी सिद्धि फल चारि मय, मंगल मोद अभिष्ट ।
हरि हित भक्ति सुदास पद, कृष्णदास के इष्ट ।।४।।

दुर्गम भीम अपार द्रढ, भव निधि अति दुख हेतु ।
कृष्णदास गुरुदेव के, चरण तहां सुख सेतु ।।५।।

भूत भविष्यत काल औ, वर्तमान पुनि गाय ।
युगल उपासक जे भये, मो सिर तिन के पाय ।।६।।

अन्त जो श्री ललता उर कृपा, मोपै है लवलेस ।
तो भाखों याके गुने, पावे तहां प्रवेस ।।४६।।

(लेखक निवास) विधि निकट तट सुधुंनी, गिरजा पत्तन ग्राम ।
हरि भक्तन के आश्रें, कृष्णदास विश्राम ।।४७।।

ग्रंथ माधुर्य लहरि अस, कहिये जाको नाम ।
कृष्णदास मुख श्रीकृपा, प्रगट भयो ता ठाम ।।४८।।

ग्रन्थ-प्रारम्भ काल (वि. सं. 1852)

अष्टादस सत लीजिये, संवत बावन संग ।
भाद्रमास सुख सिंधु श्री, जन्मारंभ तरंग ॥४९॥

ग्रन्थ-समाप्ति काल (वि. सं. 1853)

तिरपन संवत को अमल अति वैसाख सुमास ।
लहरि माधुरी सुख लह्यो संपूरण मन आस ॥५०॥

यत्पद्माकर पद्म सुखदं श्रेयावधि संपदा ।
यन्नारायण सर्वसौख्य सुभदं हृत्पद्ममोदावहं ॥
तद्राधावर याद सिंधु प्रभवं सर्वान्समीहास्पदं ।
तंसिंधुप्रणमामि चित सिरसास्यामानुगाख्याहृयहं ।.१॥

कांत्या भूमि सरोज नील कमले तुच्छीकृतेवर्ष्मया: ।
संजाता प्रति विंववस्तु हरिताय नो छवि साचवै ॥
दुर्ज्ञेया श्रुति ब्रह्म शंभु प्रमुखैर्यत्नैर्हि भक्ति विना ।
तत्सान्द्रं हृदि चिंतयामि युगलं श्रीकृष्णदासोहृयहं ॥२॥

उदयंतियस्मिन्सिंधौ माधुर्य्यलहरिभिरा ।
तस्मिन्पिपासा संवृद्धा कृष्णदासस्य मानसे ॥३॥

राधा राधा पुनर्राधा राधास्मराम्यहं ।
कृष्णदासो न जानाति राधानामाद्विनापरं ॥४॥

पुष्पिका

इति श्री ललिताप्रसाद लब्ध युगलानंद समुद्रलहरि नाम समाप्तोयं ग्रंथ: । वैसाख कृष्णा भौमबासरे सं० १९७७

x x x

583/4953 शिवभक्तिसागर

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अथ शिव भक्ति सागर लिख्यते ।।

छप्पय

पीत कमल सम भ्रमर लसदां सुन्दर वपु सोहत ।।
नील कंठ भुज चारु पीन कटि छीन विमोहत ।।
अरुण अधर मद हरत विवरद सशि ही लजावै ।।
सुंदर नासा देखि कीर मुख व्याज न पावै ।।
जन रामलाल प्रभु भाल वह कोटि अर्कहूं ते श्रुवरु ।।
हर उर विशाल शिरमाल जुत चरण अभयप्रद कल्पतरु ।। १ ।।

।। अथ राजवंश-वर्णनं ।।

छप्पय

विमल वंश मंडन सुहंस हरि अंस धरापति ।।
वर नरसिंघ कल्यान भए भूपर विसाल मति ।।
जोरावर जाहर जिहान जस सिंघ जुरावर ।।
कीरतवान कल्याणसिंघ को तनय वाहुवर ।।
महुव्वतसिंह महिपाल हुय तिह कै महिपालन करिय ।।
समसेर वाहु जिन आपनै पातस्याह स्याही धरिय ।। २ ।।

तिनके तनय प्रतापसिंघ सिंघता साथ लै ।।
प्रकट भूमि पै भए भरथ की भूमि हाथ लै
जंग भए जिह पै जितेक जिह सो जे जीते ।।
भूमि भूप ताहि यै लाय कीनै अरि रीते ।।
तिह भुवनपाल के अंसतै वर वखतेष नरेस भौ ।।
लोकान लोक हूतै उभले जस जाको अवसेस भो ।। ३ ।।

नोट :—इससे आगे म० शिवदानसिंह तक वंशवर्णन और है ।

दोहा

वर नर सिवके दान सो, भयौ सिंघ सिवदान ।।
यही हेतु तै मै रच्यौ, भाषा संभु पुरान ।। २६ ।।
रह्यौ पूर याकी विषै, भक्ति सुधारस पूर ।।
नाम भक्तिसागर धरयौ, यह जिय जानि जरूर ।। २७ ।।

दोहा

अन्त हौ सव को सव मातु मम, वचन कहीं नहि वाद ।
समता उर वर धारियै, तजिये मोह विषाद ।।

चौपाई

पान किये सव के तन तवही । भयो नाम षणमातुर जवही ।।
पहिलैं पार्वती सुत जानौ । अग्नि तनय ता पीछै मानौ ।।
गंगा पुत्र नाम फिर भयहू । पीछै स्कंध नाम तिन लयहु ।।
षणमातुर जग प्रगट कहायो । यह इतिहास पुरानन गायौ ।।
यह सुधि सकल ब्रह्मर्षि पाई । इद्रलोक जा खवर जनाई ।।
संभुतनय जग भयौ कुमारा । अत्र सव कारज सरत तुमारा ।।
यह सुनि देवन की समुदाई । विहसि विवधि विघ सेन वुलाई ।।
षटमुख सेनापति तव कीनो । तारक नगर घेर तिन लीनो ।।
तारक नगर देखि अकुलायौ । चढि रथ गर्जत सनमुख धायौ ।।

छप्पय

धायौ सनमुख क्रोधवंत हुय गर्जत भारचौ ।।
देवअनीं कूं देखि विहसि तिह वचन उचारचौ ।।
रे खल जीवहु सदा महीपै मोर जिवाए ।।
किहको वल अव पाय आजि मोपै चडि आए ।।
तुमसों न काम मेरचौ कछू ताही वता किन दीजियै ।।
नत हरौ प्रान सव सुरन के नहि विलंव जिन कीजियै ।।

नोटः- अंत अपूर्ण । अंत में यह पंक्ति भी है दाः स्याहे मीती वैसाख सुदी १३ सं० १६१३ ने रामलाल भरतपुर का विनै नजर करी ।

x x x

691/5022 (2) करुणाभरण-नाटक

प्रारम्भ ।। श्री गणेशायनमः ।। श्रीसरस्वत्यैनमः ।। श्रीगुरुभ्यो नमः ।।

अथ करुनाभरुना नाटेक लिख्यते ।।

दोहा

रसिकनि की पडित विनि, कहि महा फलु लेहु ।।
नाटिकु करुना सु तुम, लछीराम करि देहु ।।१।।

प्रेम वढै मन निपट ही, औरु आवै अति रोइ ।।
करुना अरु श्रंगाररसु, जहा वोहीत करि होइ ।।२।।

लछीराम नाटिकु करयौ, दीनौ गुरनि पढाइ ।।
भेख रेख न्रति निपुनि, तन लए नरनि घाइ ।।३।।

सुहृद मंडली जोरि के, कीनै वडो समाजु ।।
जो उन नाच्यौ सो कह्यौ, कविता मै सुख साजु ।।४।।

चौपाइ

सूरज ग्रहन ऐक दिन भयौ । सवु जगु मिलि कुरखेत हि गयौ ।।
श्री जदुराय परम सुखदाई । तिनिहू के मन मै यह आई ।।
कही द्वारिका जिते निकेत । तिते चलौ परसए कुरखेत ।।
सगरे निचलत परम सुख लहै । दुख नगर रखवारे रहै ।।
हाथी घोरे रथ हय प्यादे । खचरि ऊंट सहत उदमाते ।।
वरन वरन अंवारी सोली । चौंडोल अवु पालिकी डोली ।।
वनी वाहनी और कजाऐ । महल काल वहु साज वनाऐ ।।

दोहा

चल्यौ कटकु सवु उमडिकै, ठौरु न पावै कोइ ।।
श्री जदुनाथ प्रताप ते, सवको सव सुख होइ ।।८।।

अन्त

आपुही आपुहि अनेक करि लैंनो । नाना चित्र मोथरो पैंनो ।।
जदपि अमित भांति व्है गई । लोह लोह तानै कन गई ।।३२।।

एकै वस्त भही वं हू चावै । लान आकृति नाना नांवै ।।
जो जानै साई पै जानै ।। नर अजान सो नेकु न मांनै ।।३३।।

यो कवींद्र सरसुती रिझाये ।। गाये बचन वेद के गाये ।।
जव कवींद्र यों लई परिछ्या ।। तव जांनी सुतगुरु की सिछ्या ।।३४।।

पुष्पिका

इति श्री द्वितांकु समापतं ।। इति श्रीकृष्ण जीवन लछीराम कृत करुणाभरण-नाटक शुभमस्तु । श्रीरस्तु । आरोग्यमस्तु । श्री । लिखायतं बाईजी श्री सरदारकवरिजी स्वयं पठनार्थं लिखतं जोसी संभुराम शुभं भवतु संवत १८५६ मती श्रावण सुदि १३ मंगलवार । शुभ सतुकल्याण भवतु श्रीरस्तु जादृशं पुस्तकं दृष्ट्वातादृशं लिखितं मया । जदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।

x x x

659/5047 बाला बादलकी बात

प्रारम्भ

।।श्रीरांमजी ।। श्री गणसजी सहाय ।। श्री सुरसती माताजी सहाय ।।

अथह वाला वादल की वात लीखते । राजा वाला वादल सुजाण नगर हुवो । राणीजी क चंद्रावत हुइ । वड़ो सुरवीर छत्री हुवो । घोड़ी जीक आपकी असवारी को नोलखो रंग लंगी हुवो । सो जीक नीती सीकार जावा को अड़ । दीन उग्या सु सीकार जाय सो तीसर पहर आव । आकर कासो जीम । अर राति महला सोवा जाय जदी राणी हजुर आव । हाथ मैं चोमुखो दीयो लीयां खडी रह जदी राजा तीर कुवाण हाथ म लेरी राणी का कानकी लोळ मैं होयर तीर वाहै सो गचगीरी म जाय लाग ।

अन्त

वाला वादल वाकड़ा वड़ा सीपाही भुप । लुणहरामी वीकलौं । इका करना खोदो टुठा । जदी इकी करणी को भुगतसी । आपां क्यो अपराध ल्यां । जदी राजा आयकै देस गयो वड़ी वधाइ वटी । वहोत कोतुल हुवा । रीती म्हलां पधारचा । सो उही राती कुवाण तीर चलायो । अठ राणी छी जीका कानन

की लोळ महोरी तीर उही ऋह वाहो । सो गचगीरी म ला गडयो । जदी राणी न उसी त्र पूछ्यो । अर तोहु उसो वलवान छु जदी राणी वहोत असतुत करी अरइ इसा तो वलवान आप ही छो । ओर कोइ इसो वलवान न्ही । जदी राजा वहोत खुसी हूयो । अर बड़ीनचीताइ सु राज कीयो ।

पुष्पिका इती श्री वालु वादल की वात संपुरण मीती काती वदी ११ ब्रीसपतवार स. १८७३ लीखी वहाद्रपुरमो पत्र १७ श्लो० २०४

x x x

886/4718 हितोपदेश-भाषा (पद्यमें)

प्रारम्भ ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ हितोपदेश लिख्यते ।।

दोहा

संतन को सिधि देहु, वह धूरजटी समरत्थ ।।
गंग फेनकी रेखसी, चन्द्रकला जिहि मत्थ ।।१।।

सुनि हितोपदेसहि सहज, खुलैं संस्कृत अर्थ ।।
बानी होत बिचित्र अरु, समुझैं नीति समर्थ ।।२।।

अजर अमर ज्यौं जानियैं, बिद्या अरु धन एह ।।
पकरयौ केस निमीचु ज्यौं, कीजै धर्म सनेह ।।३।।

सब धन मैं बिद्या धनहि, उत्तम कै अवधारि ।।
चोरी जाइ न चोर सौं, अखैं अमोल निहारि ।।४।।

नृपहि मिलावै नीचकौं, बिद्या करि अनुराग ।।
जैसैं नदी समुद्र कौं, फिरि जो जैसौ भाग ।।५।।

बिद्या बिनय हि देत अरु, बिनय लायकी दैंत ।।
लायक धन पावै धनहि, धर्म करै सुख हेत ।।३।।

काची मति में जो लगै, सो न और बिधि प्रीति ।।
ताते बालन कौं कहौं, कथा रीति सौं नीति ।।७।।

मित्र लाभ अरु मित्रकी, फूटि रु रारि मिलाप ।।
कैयौ ग्रंथनि देखि कैं, करौं नीति की छाप ।।८।।

चौपाइ

है गंगा कैं तीर लहायौ । पाटनि नाम नगर छबि छायौ ।।
तहँ सब राजा कैं गुन गायौ । भयौ सुदरशन भूप सुहायौ ।।
सो वह कबहूँ पृथिवीनाथा । सुन्यौ कहूँ सौं ये द्वै गाथा ।।

दोहा

कैऊ संसय काटनो, विन देख्यो दिखराइ ।।
सबकैं लोचन शास्त्र है, ता विन अंध कहाइ ।।९।।

जोबन धन संपत्ति पुनि, प्रभुता अरु अविबेक ।।
एक एक अनरथ जहाँ, चारचों वह नहि नेक ।।१०।।

चौपाई

यह सुनि राजा पकरचौ माथा । अपने सुतनि सोचि इक साथा ।।

दोहा

कौंन अरथ बेटा भयैं, जो पंडित हि न होइ ।।
काने लोचन सो कहा, है दूषन ही सोइ ।।१।।

अन्त पृथ्वीसिंह माधव तनै, कूरम जीतौ सत्रु ।।
जिहिं यह संग्रह जतन सौं, लिखैं कियो जस पत्रु ।।१।।

कवित्त

असे देत दान समैं करी पृथीसिंह भूप,
बानी कहि देखे जे अनेक अचिरजके ।

छलकत मदजल झलकत आभूषन;
ढलकत मंद गति कबरस बजके ।
करत विमानन कँ चहरे मुखनि धरि,
पहरे ललाट बिंब चन्द्रमा सूरजके ।
जिनकी निहारि सज आन गज ल्यावैं लज,
नीठि नीठि पावैं धज दिग्गज मगज के ।।१।।

रचनाकाल (वि. सं. 1828)
संवत अठारेहसै अट्ठाईस बीस बिसै,
ता मधि असोज को महीना शुक्ल पक्षको ।
नौरता की अष्टमी उदित बुधवार सुध,
भैंया जगदीस त्यौं लिखै या बुधि अच्छको ।
कूरम कलस महाराज पृथयेसजू को,
हुकम लहाइ हित हरष समछको ।
सुकबि कलानिधि तनय सरसुति भट्ट,
कीनो ग्रन्थ पूरन अरध निरु गछको ।।१।।

निर्माण अवधि
एक महीनां एक दिन, जामैं लग्यौ सुकाज ।।
ग्रथ पृथी मंगल लख्यौ, पृथीसिंह महाराज ।।

पुष्पिका
।।इति श्रीमन्महाराजधिराज महाराज राजेन्द्र कूर्मवंश-शिरोमणि श्री सवाई पृथ्वीसिंहदेवाज्ञा प्रवृत्त द्वारकानाथसरस्वतीभट्ट-विरचित हितोपदेश भाषायां संधि निरूपणं नाम चतुर्थः कथाप्रबंधः ।।४।।

कवित्त

माह बदि सोमवती अमावस सोहै जहां,
संवत् अठारह सै अट्ठाई महा नीको ।
साजियत सादी साल की कैयो भांति नृत्य,
गीत केसरिया चीरनि सुहानीको ।
बैठे सुखमहल झरोखैं खास चौकी लयैं,
कबिकुल कबित पढत रस सानीको ।
कूरम कलस महाराज पृथीसिंह हेत,
लिख्यौ गोपी लेखक हितोपदेस बानीको ।।१।।

।। शुभं भवतु ।। श्री ।।

दोहा

रतन छत्र सिर सेहरा, उग्र प्रताप दिनेस ।
उलह कछवाहोत पैं, दिन दूलह पृथएस ॥१॥

श्लोक

यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखतं मया ॥
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयतां ॥१॥

x x x

704/4803 कृष्णसाहित्यसिन्धु (अलंकारनिर्णय)

प्रारम्भ ॥ श्री गणेशाय नमः श्री गुरुचर्नकमलेभ्यो नमः ॥

अथ श्री कृष्ण सहित्य सिन्धु ।

सोरठा

आनंद करत अपार, रस वरसाइ अनंत गति ।
जै जै सदा तिहारी, चपला धन कातिक सुखद ॥१॥

कवित्त

मंज कुंज कलित कलिन मधुकर मोद,
लखि लखि विमल वितान लतिकानके ॥
मिलितह कीरति सु तासौं जसुधा को तात,
कोरि छोरि करत कटाक्ष वर वानिके ॥
धनुग अमीर भीर भांमिनी भुजा भुजान,
भरि ठाढी लेति सरस सवाह अधरानके ॥
भंवर तैं निकसि सुयंवर कौं माल जनु,
मेलति तडित गर स्यांम रसदांनिके ॥२॥

छप्पय

छिहु रितु रूरे तरुनि रहिति नवलता विराजी ॥
कोकिल कीर मयूर मोद भरि नितंत राजी ॥

रतन जटित सव भूमि भानुजा पूर भूरि वरि ।।
सुखद गोपिगण सहित नंद नंदन करुणा करि ।।
जो प्रति मनादि ब्रह्मादि तें परें ध्यान जोगिन परौं ।।
सो प्रवलो जहं वंसी ररैं श्री वृंदावन वंदन करौं ।।३।।

दोहा

ह्वै जिनकै सतसंग तें, श्रीगिरधर अनुराग ।
है अस संत समाज को, नमो सुचरननि लागि ।।४।।

विन निज कृपा-कटाक्ष तें, देत न जिंहि व्रजचंद ।
अति दुर्लभ तिहुलोक में, नमो भक्ति सुखकंद ।।५।।

संकरछंद

श्रीकृष्ण सहितु सिंधुको, अब करत दास अमीर ।
तुमरी सुकृपा-कटाक्ष तें, इह होइगो वलवीर ।।
जेंहिं निपुन मेधा सुहृद तिनि, सुकवि हेत वनाय ।।
जेते पदारथ काव्य के, यामें कहौं प्रगटाय ।।६।।

दोहा

अनिक तरंगनि कौं लियें, जामें रसनि विलास ।
लहै ज्ञान या सिंधु तें, काव्य पदारथ रास ।।७।।

प्रश्न—काव्यके पदार्थनिको जथार्थ ज्ञान किस हेतु करि होत है । अो काव्य पदार्थ कहा ।। उत्तर—काव्य पदार्थ जथार्थ ज्ञान में तीनि हेतु हैं सो कहत हैं—उदेस १ लक्षण २ परिक्षा ३ ।।

दोहा

अन्त संमत नभ गृहि वसु ससी, श्रावन मांस पुनीत ।
(र.का. सं.1890) ग्रंथ कृष्ण साहित्त कौं, सिंधु रच्यो करि प्रीति ।।२२०।।

कर जोरें सब कविन पैं, विनती करत अमीर ।
भूरि भूल ह्वैदास मैं, तुम बखसं गंभीर ॥२२१॥

॥ श्री भंवरसरजी को वरनन ॥

दोहा

महा सघन पुर मेघसम, सदा सवन रस देत ।
सुखद सुधासर आंनि उर, दिपत दामिनी केत ॥२२२॥

कवित्त

धांम धांम विमल वितान वादल के बेस,
फरस फुहार छबि छाजत छई छई ।
अनुग अमीर मीर राग रागिनी को द्वार,
गुनिन समाज साज साजत सई सई ।
राजत रसाल जह सुखद सुमन संत,
जपत अनंत भक्ति भावन भई भई ।
जैनो देव जांन आंन राजैं हैं अमी के तीर,
पूजन परम कोरि करत कई कई ॥२२३॥

दोहा

सिखिर सौंध राजति धुजा, करत मनौं उपदेस ।
पटकर सौं कहि आंनि हयां, लीजै मुकति सुदेस ॥२२४॥

अघहारी भारी भरयौ, मुकति जाल रस रास ।
श्री व्रजनायक नवल सो, सुखद सुधासर वास ॥२२५॥

सोरठा

विनती करत अमीर, तुम पैं श्री नागर नवल ।
हरौ कठिन भव पीर, कालीं मरदन गिरि धरन ॥२२६॥

दीजै कृपानिधांन, पुनि पुनि मांगौ इहै सुभ।
संत चरन सुखदानि, तिन मैं होइ निवास सद ॥२२७॥

पुष्पिका इति श्रीमत श्रीकृष्ण साहित्त सिंघू अमीरदास विरचिते अलंकार निर्णय ग्रंथ समाप्ति नाम पंचम तरंग ॥ ५ ॥ शुभंभूयात् ॥ श्री कृष्ण जी ॥ लिखतं श्री वृंदावन मध्ये यमुनातटे सुभस्थाने श्री सेवाकुंज मध्ये ॥ हस्ताक्षर आसारामस्य ॥ पठनार्थी राधालाल ॥ मिती जेष्ठ बदि ३ संवत्त १८६१।

x x x

715/4995 बखतविलास

प्रारम्भ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ बखत विलास लिख्यते ॥

कवित्त

सर्म वितरण भव भर्म संतरण सुभ,
कर्म आचरण धरा धर्म के धरण हैं ॥
दानव दरण सुर मानव भरण छल,
छोभ के छरण यदुकुल आभरण हैं ॥
पंकज वरण सोहैं आभा आवरण हैं,
अधम उधरण व्रज बीथि विहरण हैं ॥
संकट हरण है सरण बखतावर के,
आनंद करण बलिदेव के चरण हैं ॥१॥

दोहा

बंदतु श्री व्रजचंद कौं, आनंदकंद अमंद।
नंद नंदन जग बंद जो, सुद्ध सच्चिदानंद ॥२॥

उदित इंदु वर वदन दुति, विघन कदन कमनीय।
सिद्धि सदन दिवि पदन सुभ, दायक रति रमणीय ॥३॥

आदि प्रकृति जासौं कहत, वेद भेद सुविचारि ।
सो राधा बाधा हरो, श्री व्रषभान कुमारि ।।४।।

गणपति गौरि गिरीस गुरु, चारु चरण चित लाइ ।
काली कमला कमल भू, कमलानन गुण गाइ ।।५।।

अंस रूप रवि वंस मणि, बखतावर नृप हेत ।
देखि पंथ वर कविनु को, करो ग्रंथ कौं नेत ।।६।।

।। कवि-वंस-वर्णनं ।।

कास्यप गोत्र द्विवेदि कुल, कान्यकुब्ज कमनीय ।
देवदत्त कवि जगत मैं, भयै देव रमणीय ।।३३।।

जिनसौं बोली भगवती, व्है प्रसन्न प्रत्यक्ष ।
व्है हौ कविवर पूज्य तुम, अवनि अधीस समक्ष ।।३४।।

जिनको श्री नवरंग सुत, आजम साहि सुजान ।
जाहर करो जहान मैं, मान सहित सनमान ।।३५।।

तिनके पुरुषोत्तम भये, सकल सुमति के ईस ।।
निपुन निउक्ति सुजुक्ति मैं, उद्यत उक्ति फनीस ।।३६।।

तिनके सोभाराम सुत, कविवर भयो विनीत ।
सीता श्री रघुनाथके, चरचे चरण पुनीत ।।३७।।

तिनके भोगीलाल सुत, वर्णत बखतविलास ।
देखि कृपा करि सकल कवि, करियो हियें हुलास ।।३८।।

काव्यारम्भ

दोहा

काव्य मूल संसार मैं, रस है सुख को सार ।
तातैं पहिलैं करतु हौं, रस को सरस विचार ।।१।।

सब कारज के उचित है, प्रथम हीं हेतु प्रभाव ।
याही तैं पहिलैं कहौ, रस के कारण भाव ।।२।।

रस अनुकूल विकार जो, आन भाव चित होइ ।
ताही सौं सब कहत हैं, भाव सयाने लोइ ॥३॥

द्वै प्रकार को भाव सो, आंतर अरु सारीर ।
आंतरोपि द्वै भांति को, थाई व्यभिच रीर ॥४॥

दोहा

अन्त

यह विधि कहीं विचारिकैं, चारु नायका नेक ।
पढहु सुकवि सब करि कृपा, जिनकें बुद्धि विवेक ॥१४६॥

सुर नर वानी पंथ पढि, वरनो ग्रंथ विसाल ।
पढि प्रसन्न व्है है नृपति, वखतावर भूपाल ॥१४७।

रचनाकाल (वि.सं. 1856)

संवत रस ६ सर ५ नाग ८ ससि १, कार्तिक सुदि भृगुवार ।
सुतिथि पंचमी ५ योग सुभ, पूरन ग्रन्थ विचार ॥१४८॥

जब लगि श्रीपति की कथा, दीपति है दिन राजु ।
तब लगि अटल करौ सकल, वखतावर नृपराजु ॥१४६॥

कवित्त

जाहर जहान जानि देखें राजा रान कोई,
लाग तन सान दान मान मजबूती की।
गाहत गुननि वीर वाहर नमाह सबै,
पौरुष अथाह तास राहत सपूती की ।
कूरम नरेस वखतेस के निकट भोग,
संपति हमेस हीं प्रगट पुरहूती की ।
मार्त्तंड मंडन प्रदंड नृप दंडन की,
जाके भुजदंडनि घमंड रजपूतीकी ॥१५०॥

पुष्पिका

इति श्री कछवाह कुलभूषन श्री नरुका रांउराजा वखतावरसिंह आनंदकृते भोगीलाल कवि विरंचिते वखतविलासे नायका वर्णन नाम नवमो विलास:९ समाप्त: सवत १८५७ श्रावण कृष्ण तिथौ ११ गुरुवासरे सुभं श्रीरस्तु

x x x

727/4816/ भूषणसाहित्यरस (विनय बिलास)

प्रारम्भ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भूषनसाहितरस लिख्यते ॥

सोरठा

विघन विनासन वीर, श्री गणाधिपतये नमः ।
हरन हार भव पीर, दीजे ग्रंथ वनाइ यह ॥१॥

दोहा

भाषा भूषन सोधि कै, नृपहि सुनायौ आइ ।
फुरमाई हरिनाथ सौं, दूजो रचो वनाइ ॥२॥

सुमरि गनेस महेस कौं, वहुरि सुरेस दिनेस ।
सीस नायकर जोरिकै, उर मै सादर सेस ॥३॥

जग कारन करुना करन, जीव चराचर ईस ।
दीजे ग्रंथ वनायहु, जगनायक जगदीस ॥४॥

हाव भाव रस नायका, नायक जाति प्रतीति ।
यहु भूषन साहित्तरस, रच्यौ ग्रंथ करि प्रीति ॥५॥

अनुकूलादिक प्रथम ही, विधि सुख नायक जाति ।
पति उपपति वैसक सुनो, बरनत हौं इही भांति ॥६॥

निज नारी हित मति सुमति, परनारी प्रतिकूल ।
गौतम अत्रि वसिष्ठ भृगु, रामचन्द्र अनुकूल ॥७॥

वहु नारि सौं प्रीति रति, दछिन कहिये तासु ।
गिरधर अर्जुन आदि दै, पूरन परम प्रकासु ॥८॥

दोहा

अन्त

यह भूषण साहित्य रस, विनय विलास नवीन ।
अलंकार ये पंच दस, वरने मत प्राचीन ॥४५॥

ग्रन्थ-आधार

चंद्रालोक कवि जय भवा, सारद आगम संग ।
हृदय कुवलयानंद है, तुव प्रसादभुद अंग ॥४६॥

रचनाकाल (वि. सं. 1892)

संवत विवि निधि वसु ससी, कार्त्तिक सुदि वुधवार ।
यह भूषन साहित्त रस, प्रगट करो संसार ॥४७॥

विनय नरेस विलास रस, वरनौं कवि हरिनाथ ।
यह भूषन साहित्त रस, संपति सुखमा साथ ॥४८॥

पंडित सुकवि प्रवीनमति, जो कछु लखियो चूक ।
दूषन तजि कै दीजियो, भूषन महा मलूक ॥३४६॥

पुष्पिका

इतिश्री महाराव राजा बहादुर श्री श्री श्री श्री श्री विनयसिंह विलासे भूषन साहित रस निवासे कवि हरिनाथ कृते सुभंभूयात् ॥ संवत १८९२ पौष कृष्णा ८ रविवासरे शुभमस्तु कल्याणरस्तु ॥ लिखतं भगवान ॥

x x x

728/4772(1) रसआवाजविनोद

प्रारम्भ

॥ श्रीगणेशाय नमै श्री गुरभो नमै श्री सरस्वती नमै ॥

दोहा

संकर सुत वीधूजूत वदन, गनपति कृपा निदांन ।
कर जोरै विनती करौं, देहु बुध को दांन ॥१॥

मैं अजांन अग्यांन अति, ऊकस कौं नहि टोहि ।
ग्रस्ट सिधि औ वुधि दै, अपनो कीजे मोहि ॥२॥

कवित्त

योधन वीनासन सूवूधि परगासन है,
दासन को करत प्रकास गति मत कें ।

आंनंद के कंद चंदजुत है अनंदकारी,
जाको ध्यांन धरैं मिटै सासन बिपति के।
लाय रहो पन दुखभंजन चरन मांझ,
कृपा कर दवार खोल देत है संपति के।
जोरे मन मेरे सिधि बुधि लह्यो चाहै तौ तु,
बांनी तैं बनाय गुन गाय गनपति के ॥३॥

दोहा

येक दीवस दरबार करि, बैठे न्रिपति अवाज।
तहां हुकम यह ऊचरयो, आंवै सब कविराज ॥४॥

॥ अथ कविनाम ॥

नागर सूकवि तहा हुते, लीने कृसन बुलाई।
कांमा सो हाजर भये, दुख भंजन कबिराई ॥५॥

आवत ही आंनंद सो, आगै लये बुलाई।
तहां हुकम यह ऊचरयो, दीजे ग्रन्थ बनाय ॥६॥

दांन दये सनमांन करि, बहू बिबेक सौं राज।
तव कवि आंनद सो, उमग रचौ ग्रंथ को साज ॥७॥

यातं बोहोत ऊछाह सो, करे बरन ईक ठोर।
रस अवाज विनोद कौं, रचौ सुकबि सीरमोर ॥८॥

ग्रन्थमहिमा — जो कोऊ या ग्रंथ कौं, पढ है मन कम लाय।
तीनकी बुधि विसेषि है, रस कबिता सुरसाय ॥९॥

रचनाकाल (वि. सं. 1821) — समत ठारह सै बरष, औ ईकीस बीचार।
माह सुदी तेरस सूतीथ, रचौं ग्रंथ करि प्यार ॥१०॥

॥ अथ न्रिपवंस बरनन ॥

बरन नरुके वंस को, कबि कुल चित्त लगाय।
देत दांन सनमांन करि, हय मुतिय सरपाव ॥११॥

कवित्त

ऊदै भयौ दुसरौ दिनेस ज्यौं ऊदैकरन,
वरसघजु कै महराज फेर जांनियै ।
वहौरचौ नरुजी कै करमचंद कवर भौ,
तीन घर रवदासा महावीर जांनियै ।
कहै दुख-भजन प्रथीप प्रथीराज फेर,
ताकै रायकौर चत्रभुज पहचांनियै ।
कीरत के ग्वाल व्है निहाल करै कबिन कौं,
यातै महादांन दिनकर-बंस मांनियै ।।१२।।

दोहा

राजबीहारीदास कौ, मौजावाद मकांन ।
वीजैराम तिनकै भये, महाबीर मरदांन ।।१३।।

अरजुन जो व्रज इंद्र कै, गाजी भौ गजराज ।
कूटर्च दलपतिसाह कौ, भयौ बहोरर्च राज ।।१४।।

जब जापर क्रोधित भये, कुरम सुभट दुबाह ।
भाजे दलपति साह के, गाजे जब गजसाह ।।१५।।

तिन घर कीरतिसंघ सुत, भये धर्म-औतार ।
जिन जस कौ चाहचौ प्रगट, करचं कबिन सौ प्यार ।।१६।।

करन जेम दाता भयें, किरतसंघ यह नाम ।
जाकौ जस गायौ भलौं, सुभचिंतक जसरांम ।।१७।।

।। कवित्त जसरांमजी कौ ।।

अछे अंग भुवन रसिले राजै रजित के,
संग सोहै सारदा सी सुघर सहेली हैं ।
मांग मुकतांन मै मढी है मनमोहनी-सी,
सातक सरुप की सकेल सब रेली हैं ।
करमै कमल कमलासन के आसन के,
जसराम जो तिनकी जित सब जंली है ।

चंत के से चंद्रमा की चांदनी दसौं दिसान,
कीरति की रात जगत मांझ फैली है ॥१८॥

दोहा

कलपव्रिछ सो कबिन को, करें धर्म ज्यौं राज ।
कीरतसिंह के पुन्य तें, प्रगटे व्रिपति आवाज ॥१६॥

कवित्त

गहैगो बिस्वास ताकी आस सब पुरी व्है है,
जैसै सब जिवन कौं पोष सरवर को ।
छाया ओर फल भली भातिन लहैगे यापै,
यह दुख-भंजन हुकम हरिहर को ।
कीरति बहादुर के सुभट आवाजराम,
परपूर ज्यौं राखत भरोसौ तेरे कैर कौ ।
आवत हो गुन दांन मांन की हो आस कर,
मेरे जान पैदा भयौं पोधा सुरतर को ॥२०॥

दोहा

तीन दुखभंज सुकबि सो, हुकम कीयो कर नेहु ।
मोऊ रस को सुधि कै, रस बीनोद करि देहु ॥२१॥

इति श्री न्रप आवाजरांम वीरचितायां रस आवांज बिनोद नाम
प्रथम प्रभाव राजवंश ईति ॥ अथ नवरस नाम कथनं ॥

सकल पुरानै कविन को, अब ही करयौ प्रनाम ।
सोधत हो नवरसन को, लै बानी को नांम ॥२२॥

प्रथम बरनि सिंगार रस, दूजो हास बखान ।
तीजो करुना को गनो, भय बीभत्स पीछांन ॥२३॥

छठ हौं अदभुत कैहत हौं, बीर अरु रुद्रह जानि ।
आठौ ये कबिता बीषै, स्वांतस संतन मांन ॥२४॥

दोहा

अन्त

समझवार सग्यांन जन, पंडित रसिक समित ।
रस आवाज बीनोद को, सुनि सुख पै है नित ॥२८१॥

सबद अंक औ मात्रा, चुक्यो होइ समार ।
ताहि सू कबि सग्यांन तह, लीजो सबै सुधार ॥२८२॥

पुष्पिका

इति श्री न्रप अवाजरांम बीरचितायां रस आवाज बीनोद नम अस्टमो प्रभाव बीप्रलंभ सिंगार दसा स्मपूरनं समाप्तता लीखतं मोहकम चितेरो ॥ पोथी सरकार अवाजरांम जी की ॥ सुभंभवतु ॥

॥ दान-बरनन ॥

ऐराकी अरबी कछी तुरकी चिन्हाई फेरि,
टाठी मुजनसी जींन धरै बडे साज के ।
तरल ततई गौन आगै पौन पौन जाको,
देखत ही पंछीन के मन होत लाज के ।
कहै दूख भंजन बकस देत ऐसे ऐसे,
जस को सुनत ही सूगन गनै काज के ।
लटपट करै तै हरै हनके मांनन को,
ऐसे हय कबिन कै कूरम अवाज के ॥१॥

x x x

758/4812 (1) साहित्यसुधाकर

प्रारम्भ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री राधा जयतु ॥

दोहा

श्री राधा व्रजचंद के, वंदतु चरन अमंद ।
दुःख हरण सुख के करण, अशरण शरण विलंद ॥१॥

सूरजवंश प्रतापसुत, प्रगट्यो हरि को अंश ।
श्री वखतावरसिंह भुवि, भयो भूप अवतंश ।।२।।

कह्यौ नृपति तिन करि कृपा, वर्णन करो अखेद ।
जानि परैं जासौं सकल, शब्द अर्थ को भेद ।।३।।

आज्ञा मानि महीपकी, मम्मट को मत देखि ।
देवदत्त के पौत्र सुत, भोगीलाल विसेखि ।।४।।

कहतु काव्य रचना विविध, सुकवि वुद्धि अनुसार ।
सुमति पढौ करि करि कृपा, वढि है वुद्धि विचार ।।५।।

।। प्रथम काव्य करिवे को प्रयोजन कहतु हौ याके अर्थ काव्य करियतु है ।।

काव्य करण जस अर्थ सुख, दुःख विनाशन हेतु ।
प्रिया प्रमित उपदेसप्रद, विद व्यौहार निकेत ।।६।।

।। अथ काव्य को हेतु जासौं काव्य वनतु है ।।

शक्ति निपुणता लोक लखि, सकल शास्त्र कवि तासु ।
शिक्षा कवि कोविदनु की, लै करि नित अभ्यासु ।।७।।

यह कारण है काव्य कौ, याही सौं कमनीय ।
याही मैं एकहू विना, होत काव्य हसनीय ।।८।।

दोहा

अन्त यह विधि अभिधा लक्षणा, तात्पर्य तैं दूरि ।
कहत व्यंजना वृत्ति हैं, सुकवि सरस भरि पूरि ।।३९।।

कहो काव्य उत्तम वहुरि, मध्यम भेद विचारि ।
कहि आए अवरो प्रथम, सूक्ष्मता निरधारि ।।४०।।

और अवर को भेदु सवु, सर्व सुखनि कौ सार ।
अलंकार विस्तार मैं, लीजो समुझि उदार ।।४१।।

वखत पहीपति की दिसनु, दीपति कौं सरसाइ ।
सहित नदीपति की सुतां, श्रीपति रहौ सहाइ ॥४२॥

पुष्पिका इति श्री कछवाह कुल भूषन श्री नरुका राउराजा वखावरसिंह आनंद-कृते भोगीलाल कवि विरचिते साहित्यसुधाकरे गुणी भूत व्यंग्य निर्णयो नाम पंचमोल्लासः ५ ॥

x x x

799/4857 विनयप्रकाश

प्रारम्भ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ विनयप्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ प्रथम मंगलाचरण ॥

दोहा

दिनपति गथरि गिरीश के, कमल चरन चित लाय ।
ग्रन्थ रचन कुछ करत हौं, मत वैद्यक को पाय ॥१॥

बरवै

सरस्वती जगकी माता, द्यो वरदान ।
तुव प्रसाद सौं भाषा करैं बखान ॥२॥

दोहा

सुकवि वंद उपदेश गुरु, पुनि वंदो गुर छंद ।
बहुरयो वंदि चिकित्स गुरु, रचौ ग्रंथ सुखकंद ॥३॥

वंदो श्री उपदेस गुरु, कमल चरण चितलाइ ।
पृथ्वीधर निज नाम हैं, सुनो सकल कविराइ ॥४॥

सुर गुर व्यास समान, कविता सास्त्र विचार मैं ।
मलजी सुकवि सुजान, करौं प्रनाम सुतिन अधिक ॥५॥

दोहा

पुनि वंदों गुरु चतुर्भुज, चतुर्वेद भय सोय ।
तिनकी कृपा सुदृष्टि तैं, जड़ हू पंडित होय ॥६॥

हुते शिष्य तिनके अधिक, ग्रंथकार अभ्यास ।
तिन सबतैं लघु मैं अधिक, कीनो विनयप्रकास ॥७॥

केवल गुरु प्रसाद हैं, मोहि नाँहि अभ्यास ।
चूक्यौं ताहि सुधारि पुनि, लोज्यो वैद्य हुलास ॥८॥

रचनाकाल (वि. सं. 1909)

संमत निधि नभ नंद महि, अचल सप्तमी जानि ।
श्री वनराज प्रताप तैं, भाषा वैद्य बखानि ॥२३॥

॥ अथ कवि-बंस वर्नन छप्पं ॥

छप्पय

चांदावत राठोड़ प्रगट नगसिंह भए वर ॥
तिनकों श्री बखतेस दई गौरव प्रतिष्ट कर ॥
तिनके सुत भे दोय प्रगट गोपाल चतुर कवि ॥
तिन कीने बहु ग्रंथ छंद साहित्य प्रगट छबि ॥
तिन चतुरशाल कें सुवन त्रय सब तैं लघु है मान मित ॥
व्है चूक छिमा कीज्यौ सुकवि यह विनती मो लाय चित ॥२४॥

॥ ग्रन्थ-माहात्म्य ॥

सरस्वती के परशाद रच्यौ इह ग्रंथ मनोहर ॥
वैद्यक को अभिलाष संस्कृत पठन नाहि बर ॥
तिनकौं भाषा भाखि कियौं यह सुगम सरल पय ॥
जो कोऊ याकौं पढैं वैद्य वर होय जानि गय ॥
मैं हंसराज की छाह गहि कीनो सुकवि उदार चित ॥
वो हैं अगाध मो मति लघु चूक छिमा कीज्यो सुमित ॥२५॥

दोहा

कहे और हू ग्रंथ के, रोग हेत उपचार।
जैसे याके क्रमहि कौं, जीनौं वेद ऊदार ॥२५॥

अन्त :

॥ अथ पीतर मारण विधि ॥

दोहा

पूर्व बताई ताम्र की, शुद्ध हतन द्वै भांति ।
पीतर वैसे मारियें, वैद्य यहै विख्यात ॥७६॥

॥यथा गुन॥

रूक्ष तिक्त अरु क्षार कर पीतर के गुन जान ।
पिंड रोग अरु क्रम हरे, सुख जिहाज तिहि मानि ॥७७॥

अब खद कवि सौं वीनती, मेरी इहै सुजान ।
चूक्यौ ताहि सुधारियो, अपनो किंकर जानि ॥७८॥

पुष्पिका

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराव राजा सवाई विनयसिंह जी बहादुर कछवाह कुल भूषन देव आज्ञायां चतुरशाल सुत मानसिंह चाँदावत विरचितायां विरेचन बमन रक्त काड नबस्ति धूम्रपान स्वेद विधि खार विधि सप्त धातु मारण सोधन गुन औगुन वर्ननो नाम विनयप्रकाश ग्रंथ पंचमो उल्लासः ॥५॥

x x x

844/4936/ शिवस्वरोदय-भाषा

॥ओं श्रीगणेशाय नमः॥

आरम्भ

॥अथ स्वरोदय शिवकृत लिख्यते॥

दोहा

श्री गणेश गुरु सुमरि कैं, हृदै धरो शिव ध्यांन ।
मिटै विघन कोटिक सबै, उपजै निर्मल ज्ञान ॥१॥

श्री राम रूप को दरस लक्षि, बरनन करूं सुनु ज्ञान ।
जाके श्रवन मात्र तें, जात रहत अज्ञान ।।२।।

सुरतें पावै लक्ष्मी सुरतें पावै ज्ञान ।
सुरतें पावै प्रभुकों, सुरतें सुरता जांन ।।३।।

फुनि जीवन है सुरनकों, सो सब करत बखांन ।
सुरसों पावैं तत्व कों, यातें सुर परधान ।।४।।

सुर बरनौं यह रीति, समझै सो समझत हीं ।
सुनो भेद प्रीति, यातै वस्त विचार सभ ।।५।।

अल्प बुद्धि तुछ नर जांन, सुर बानी समझै नहीं ।
श्री राम रूप यह जांन, रच्यो ग्रंथ भाषा विषै ।।६।।

।।श्रीपार्वत्यो वाच।।

चोपई

देव देवन के ईस । करो कृपा मोपर जगदीस ।
सर्व सिद्धि कौं उपजावन हारो । अैसो ज्ञांन सुनावो सारो ।।७।।

तिथि नक्षत्र वार ग्रह देव । न भद्रा व्यतीपात को भेव ।
विरुद्ध जोग जेते जे कहिये । जोग कु जोगादिक सव लहिये ।।८।।

तिनको दोष कछु ना होई । अैसो ज्ञान वतावो मोही ।
तुम सव तत्वन के जाननहार । मोपै कृपा करि कहो निर्धार ।।९।।

सोरठा

अन्त कह्योज यह स्वर ज्ञांन । साधन कौं दीजे सदा ।
गुरु निंदक तिह जांन । प्रगट न दीजे सुत जदा ।।५।।

गुरु की भक्ति विषै नर कोई । सदाचार सुधि फुनि होई ।
ताहि दीजिये इह स्वर ज्ञांन । होई सफल ततछिन तू जांन ।।६।।

दोहा

गुरु निंदक शुधि चित नहीं । असो जो नर होय ।
ताहि न दीजै स्वरोदय । सफल कभूना जोई ॥७॥

जो कछु शंभू नै कह्यो । पार्वती प्रति ज्ञांन ।
रच्यो जोहि भाषा विषै । अधिक न कह्यो बखांन ॥८॥

श्रीरामरूप की कृपा तैं ॥ रच्यो ग्रंथ रस जांन ।
तत्व को मंडल रूप सब । प्रगट दिखायो प्रांन ॥९॥

र.का. (सं. 1758) सत्रैसैं अठावनै, पोषी शुक्लै जांन ।
द्वितीया चंद्र दिवस विषैं, पूरन भयो स्वर ज्ञांन ॥१०॥

पुष्पिका इति श्री शिव-पार्वती संवादे स्वरोदय तस्य भाषा रामरूप कृपा तें रसजांन कृत स्वरोसिरोमणि संपूर्णं ॥

x x x

846/6269 शिवस्वरोदय-भाषा

प्रारम्भ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ शिव सरोदय लिख्यते । मंगला चरन को ॥

कवित्त

सकल गुन सागर उजार है जगत माहि,
नरन माहि नागर अगुण अभितास है ।
तीनों काल एक जामैं भेष है अनेक भांति,
कहैत अलेखं जासौं द्वैत जग नाठटा है ॥
अनहद नाद आठो जाम घनघोर जामैं,
निराकार कै तरु जीव माया जकै साखा है ।
असै अभिराम कौं प्रनाम करि हिए माहि,
अखैराम गावत सुरोदय की भाषा है । १ ।

टीका

अन्त

पढत साठि गुरु अक्षर ही, वीतत जितेक अवास ।
पलक एक जानो तदपि, साठि गुणी घटिकास ।।१०३।।

कवित्त

ज्ञान गुण गायवेकौं ध्यान उर ध्यावेकौं,
तामस वहायवेकौं निसि दिन गाय लै ।
भक्ति निधि जोरिवेकौं आठौं सिद्धि मोरिवेकौं,
मदन मरोरिवेकौं चित्त मैं चिताय लै ।
होंनहार जानिवेकौं ज्योतिस वखानवेकौं,
......................नीकै सुच पाय लै ।
स्वर को विचा(र) चारौं वेदन को सार यहै,
हृदै उर राखि अखैराम चुपाय लै ।।१०४।।

पुष्पिका ।।२०८ इति श्रीशिवतंत्रे उमा महेश्वर संवादे स्वरोदय ज्ञान संपूर्णः ।। ।।शुभमस्तु।। संवत १९१८।। श्रीः

x x x

प्रारम्भ

852/4748 संग्रामदर्पण-भाषा

।। श्रीसूर्य्याय नमः ।।

गुरु गणपति गौरी चरण, कमल धाइकौं चित्त ।
स्वर विचार भाषा रचतु, जुद्ध करण के हित्त ।।१।।

।। अथ संवत के नाम ।।६०।।

प्रभव विभव पुनि सुनि, और प्रमोद हि जानि ।
प्रजाधीस गीरा वहुरि, श्रीमुख भव जुव मानि ।।

धाता ईश्वर वर्ष वहु, धान्य प्रमाथी और ।
विक्रम वृष चित्र भानु पुनि, सुनि सुभानु सिरमौर ॥
नारण पार्थिव विय वहुरि, सर्व जीत उतर आनि ।
सर्वधार नहि जानि पुनि, वर्ष विरोध वखानि ॥२॥
विक्रम नरु सर नदन विजय, जय मन्मथ पहिचानि ।
दुर्मप हेम विलंव अरु, वर्ष विलंव सुजानि ॥
विकारी सखरी वहुरि प्लव, सुभ कृत शोभन भा मानि ।
क्रोधी विश्वा चसु वर्ष, और पराभव जानि ॥
प्लवंग कीलक सौम्य पुनि, साधारण रु विरोध ।
परिधावी रु प्रमाद पुनि, आद सौम मन सोध ॥
राक्षस नल पिंगल वहुरि, काल जुक्त उरु आनि ।
सिद्धारथ अरु रुद्र पुनि, अवर दुंदुभि जानि ॥
रुधिरोद्रारी वहुरि सुनि, रक्ताक्षी उर आनि ।
क्रोध नक्षप पुनि साठिये, सवतसर पहिचानि ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र के, वीस वीस ये जानि ।
वर्ष सुभासुभ फलनको, सवते उत्तम मानि ॥१॥

अन्त

॥ अथ गढ सोवत जागत विचार कथनं ।

चौपई

शुक्र भौम गुर सनि तम जानौ । रविनंदन सित वुध उर आनौ ॥
चंद भानु गुर वुध गढपाल । चैत्रादिक मासन के लाल ॥

दोहा

गढपति निरवल होय तौ, गढ को होय विनास ।
तातें गढपति को कह्यो, नाम यहा परकास ॥

॥ अथ नारद विचार कथनं ॥

शुक्लादिक तिथि जोरि पुनि, भानुवार नव जुत करिकै तीन को भाग लेहु मायार ।

एक सेष सौं स्वर्ग मैं, द्वै सों महि मैं जानि ।
तीन सेष पाताल जह, नारद तहरन मानि ।।

।। अथ याकी उदाहरण ।।

शुक्ल पक्ष की पंचमी ५ बुधवार को विचार पांच ५ तिथि पाच वार ५ रविवार आदि दै कैं नव ९ अरु सव को जोग १९ तीन के भाग सों सेष रह्यौ १, स्वर्ग मैं नारद जहा नारद तह जुद्ध इति नारद विचार ।

पुष्पिका इति सोमनाथकृत भाषायां संग्राम दर्पणं संपूर्णम् ।। मिति फाल्गुन शुक्ला १२ शनिबासरे संवत १९१३ का शुभभवतु श्रीरामजी ।। श्रीरामः ।।

x x x

860/4666 नादोदधि

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। अथ नादोदधि लिख्यते ।।

दोहा

उँ गंगा गोरी धरन, मंगल करन सुजानं ।
नाद भई अवढर ढरन, जन अघ हरन प्रमांन ।।१।।

पडत पडत गुन जाहको, बेदत न पावत अंत ।
गावत ही गुन ताह को, पावत अंतव् अंत ।।२।।

गुरुनाम प्रेंम कियो कब बालसौं, बीर साह अवतार ।
तासौं पाय्यो भेद हम, नाद बेद वीसितार ।।३।।

।। नाद अंश दोहरा ।।

नाद तीन पहचानीए, ताका बाईश भेद ।
पढैं गुनैं गावैं सुनैं, ताको करै न खेद ।।४।।

कवित्त

प्रथम सहदनाद मुखते जो है प्रधार,
अष्टादश भेद शोहै अदुत प्रकाश हैं.।

दूसरो बिहद नाद भेद हैं जुगल जाको,
तीजें अनहद नाद जानों बिन भास हैं।

सोऊ हैं जुगल भेद बिमल बिचार कीन्हें,
संकर क्रिपातें कोऊ जानें भेद तास हैं।

पूरन कहत नाद भेद बाईसौ बिचार,
भाषा नादोदध यह देवै सुखरास हैं ।। १।।

अन्त पारबती शिव सौं कहैं, इहैं ताल हनवंत ।
ब्रंदावन के कुंज में, गावत हैं श्रीकंत ।।१६७।।

आदर कर महाराज श्री, दीयो हमैं यह भेद ।
बीर साह अवतार नृप, नाद ताल श्रौं बेद ।।१६८।।

कबि दयाल सौं प्रेम बहु, कीनौं हित सौ काज ।
विद्या दें लक्ष्मी जुगत, जस लीनौं महाराज ।।१६९।।

पुष्पिका ।। इति श्री नादताल भेद संपूर्णं समाप्तं ।। मिति सावण शुक्ला १४।। संवत १८६४ ।। शुभं भवतु श्री हुकम श्री महाराव राजाजी श्री बखतावरसिंहजी कें लिखी ।। देवामाली ।।

श्लोक

यादृशं पुस्तकं द्रष्ट्वा, तादृशं लिखतं मया ।
यदि सुद्धबिशुद्धं वा, मम दोशो न दीयते ।।१।।

z x x

870/4682 रूपरागावलि

प्रारम्भ अथ श्रीमनमहाराजाधिराज श्री सवाई विनैसिहजी वहादुर महाराज राणीजी साहपुर सिंधु समुद्भूत द्वितीय कमला द्वयोर्यु गपद्वर्णन विधीयते ॥

सवैया

या जग के जन पालन हेत उदोत भए अवनी अवतारी ।
ज्यौं रविवंश में राम खुमाँण कैं जानकी ज्यौं पियकौं सुखकारी ।
कोर वरीस लौं राज करौ सह राजकुमार कृपा त्रिपुरारी ।
श्री विनयेश सदा अनुकूल सौ शुभ सीश सुहाग की सारी ॥

॥ अथ महाराज्ञी वर्णनम् ॥

कवित्त

जैसैं राम भूप संग अधिक उमंग अंग,
राजैंराज जानकी अजोध्या राजधानी को ।
सरस संयोग अरधंक मैं महेश जू कैं,
शोभित विशेष ज्यौं भवानी जग जानी को ।
राणावत वंश अवतंश अमरेश नंदिनी-
को जस छंद कहै कविवर वानी को ।
अचल सुहाग रहो अति वड भाग रहौ,
संतति समाज विनयेश पटरानी को ॥१॥

आदि जगदंवा सम देत वरदानन कूँ,
अलवर अचल सुराज राजधानी को ।
दीनन के दारिद विदारिवेकौं कल्पवेलि,
करत निहाल शील जैसैं वर-वानी को ।
राणावत वंश अवतंस अमरेश नंदनी-
को जस छंद कहै प्राम गज-दानी को,

पूरन सुकवि ग्रंथ कीनौं शुभ रागन को,
पायकैं, हुकम विनयेश पटरानी को ॥२॥

दोहा

मात पिता गुरु देव नृप, आज्ञा परम उदार।
तिहँ आलंवन पायकैं, वरनू सरस सिंगार ॥१॥

करि प्रनाम कर जोरि कैं, श्री गुरु चरन सरोज।
बरनौं श्री हरि जस मधुर, गुण प्रसाद सहओज ॥२॥

बरवै

जय वृषभान किशोरी, जय व्रजचंद।
गोर श्याम आभा तन, जन सुखकंद ॥६॥

अन्त
मन न मान प्रिय धारिये, कीजे कृपा विशेस।
हिये हौस लागी रहै, दरस रूप रुचि वेस ॥६५३॥

थकित भयो नित प्रति, रहत पीतम रूप विलास।
चित चंचलता त्यागि कैं, गहत न अनत निवास ॥६५४॥

दरस परस रस पायकैं, प्रमुदित पीतम दोय।
विहरत रूप उदार छबि, रहे प्रेम रँग भोय ॥६५५॥

मंद हसी मुख चंद की, चितवन चख चितरंग।
रीझि रहे पीतम जुगल, अति अधिकात अनंग ॥६५६॥

मिलि प्रियतम जुग भुजन भरि, मेटि विरह की पीर।
प्रेम पयोनिधि उमँग मैं, रहे राखि उर धीर ॥६५७॥

पुष्पिका ।। इति श्री रूपरागावली नाम्नि ग्रंथे रूप देव्याज्ञया पूरण कवि विरचिते प्रेम पचीसी प्रसंग वर्णनम् ।।

x x x

980/4963 (1) धनुष-विद्या

प्रारम्भ ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

।। अथ धनुष-विद्या लिख्यते ।।

दोहा

गुर गनपति कौ सुमिरि कैं, जग वंदौ मनु लाय ।
धनुर्वेद मत यमन कौं, भाषा रचौं वनाय ।।१।।

।। अथ इस्ताद ।।

च्यारि तरह गुरजन कही, खरे होन की मत्ति ।
तिनके सुनियें नाव् अव, धनु धारी द्रढ़ चित्त ।।२।।

चौपई

प्रथम चली पई पुनि वे हरामी । तितीय ताहुरी लंक दसु जामी ।।

।। चलि पाइ भेद ।।

वायौं पग यौं धरो गंभीरा । मानौं जेते खंभ रनधीरा ।।

दोहा

अगुंठा वायें पाइ को, सनमुख धरो निसानु ॥
दाहिनी ऐडी सामुनैं, वायें पग के जानु ॥

चौपाई

खैंचत जोर दाहिनैं पग राखै । छोड तव लु वायें अभिलाखै ।
यो इस्ताद चलि या भाखी ।सव तीरंदाजी अभिलाखी ।

॥ वहरामी भेद ॥

दोऊ पग समता अभिलाखे । हाथ भरे को अंतर राखे ॥
इरमदाजी खरे चलावै । निकट जोर नई जंघन लावै ॥
वेहरामी इस्ताद बताई । याको रूप न दूजो भाई ॥

अंत

सवैया

ओर सुनौं कर एक हजा(र) सौं सूरज जू तम टारत है ।
कर चारि सौं विष्णु करै परि पालन दानव दीह विदारत है ।
कवि बाबु कहै मति मंडल मैं जग कीरति यौं अनुसारत है ।
कर दोय सौं हिंमतिसिंह बली दिन दीन की दारिद मारतु है ॥

दोहा

वहुत दान सनमान करि, कही नृपति समुझाइ ।
बाबु कवि धनुवेद यह, भाषा देउ वनाइ ॥

हूव उमेद मन मैं तवै, वरन्यौ विविध विस्तारि ।
अर्थ छंद त्रुटि हीन क्रम, कवि जन लेउ सुधारि ॥

र.का. (सं. 1801)
अष्टादस सत एक को, संवत प्रगट वखानि ।
भादौं सुदी दुतीया वुधे, रच्यो ग्रन्थ उनमान ।

पुष्पिका

॥ इति श्री मन्महाराज हिमतस्यंघ अग्यायु कवि वावु विरचिते धनुर्वेद यमनमते फल स्तुति वर्णंनं नाम नवमोध्याय। ॥९॥

दोहा

रैया राउ पहारसिंह, तिन के सुत व्रजसिंह ।
उनिमैं इह विद्या सवै, सूरवीर नरसिंह ॥

पढत सुनावत और कौं. कहत सवै अभ्यास ।
सर धनु कैं सव गुननि कौं, करत सवै अभ्यास ॥

सर धनु कैं सव गुननि कौं, जग मैं कियो प्रकास ।
ज्यौं निसि ससि हि विनासिवैं, रवि को होत प्रकास ॥

॥ इति यमनुमते धनुर्वेद संपूर्णम् ॥ श्री ॥

x x x

983/4966 धनुष-विद्या

प्रारम्भ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ धनुष-विद्या लिख्यते ॥

दोहा

विघन हरन सव सुख करन, गनपति आनंदकंद ।
भाल चंद गजवदन जुत, नमस्कार सिवनंद ॥१॥

विनयसिंह महाराज जी, फुरमाई करि प्रीति ।
धनु विद्या जो संस्कृत, भाषा करहु प्रतीति ॥२॥

ईश्वरोक्त धनु विद्या लिखि, व्यास कहो समुझाइ ।
पद तासो संक्षेप करि, ग्रंथ करो सुनु भाई ।।३।।

सारंगधर धनु तत्व सव, जानत और न कोई ।
दरसन दीनो स्वप्न मैं, सिवा अनुग्रह सोई ।।४।।

यह संदेह न मानिये, कोई अपने मन माहि ।
चाप चतुरता जानता, चिंता मन मैं आहि ।।५।।

जासु प्रभाव प्रसादते, धनुर्धरो नृप होइ ।
सत्रुन कौं जीत्यौ चहै, करु अभ्यास सु लोइ ।।६।।

जिहि सेना मैं होति पुनि, येक धनुर्धर वीर ।
लखि परसेना भाजई, देखि सिंघ मृग धीर ।।७।।

धनु प्रसंसा यह कही, धनुर्दान सुनि लेहु ।
महादेवजी नें कह्यौ, पारवती सौं येहु ।।८।।

गुरु देय धनुविद्य लखि, चतुर सिष्य पहिचानि ।
लुंठ्य धूर्त्त अरु कृतघनी, मंद वुद्धि नहि जानि ।।९।।

ब्राह्मन को धनुविद्य पुनि, क्षत्री खड्ग सिखाय ।
बैस्य कुंत विद्या पढै, सूद्र गदा समुझाइ ।।१०।।

अंत — संवत रस सिधि वसु ससि जानि, मार्गसीर्ष सुदि तीज वखानि ।
र.का. (सं 1886) — है रविवार विजै फल साथ, भाषा कीनी कबि हरिनाथ ।।२८०।।

।। गुनवर्णनं ।।

कवित्त

बखत विलंद वीर विनय नरेस सुनो,
राबरे समांन आन उपमांन पावतो ।

भोज मैं न एतो सुनो विक्रम वरनि वेनु,
बलि मैं न पारथ प्रमान ग्यान लावतो ।।
कवि हरिनाथ हरिचंद उपमंगद लो,
करन विधान कर करत सु भावतो ।।
येक मुख मेरे कहो कैसे कै वर्न सकौ,
कोटि मुख होते तव थारो गुन गावतो ।।२४५।।

दोहा

देखि संस्कृत मैं करी, भाषा लखि यों चूक ।
दूषन तजि कै दीजियो, भूषन महा मलूक ।।२४६।।

पुष्पिका ।। इति श्रीमत्‌महाराव रावराजा बहादुर विनयसिंह विरचितायां सारंगधर पद्धत्यां वीरचिंतामनि नाम ग्रंथानुसारेन कवि हरिनाथ कृते धनुविद्या समाप्तम् ।। शुभम् ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।।

x x x

लघु रचनाओं का विवरण (परिशिष्ट–2)

261/6054

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
1	विरह वर्णन के पद	आलम	1
2	शृंगार के पद		2,7-10
3	भक्ति के पद		3,6
4	विरह-वर्णन के पद		4-5
5	श्री सदारयोजी की असतूती (अपूर्ण)		5
6	चिट्ठी		5
7	फुटकर वर्णन		8-9
8	बारामासो		12

291/6053

1	शृंगार-वर्णन (राधा-कृष्ण का)	जसवंत	3-9
2	भक्ति के कवित्त	रसखान	9-12 15,17
3	ऋतुवर्णन	भूदरदास	12-15
4	शृंगार-वर्णन	गोविन्ददास	16
5	भक्ति के कवित्त (शिव के)	बालकृष्ण	16-17
6	शृंगार-वर्णन (राधा-कृष्ण का)		17-33
7	शिवस्तुति (अपूर्ण)	अयोध्यादास	33

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
8	भक्ति के कवित्त	कवि आभोराम	33-36
9	,,		36-37
10	शृंगार के कवित्त	देव	1,2,6
11	सौंदर्य-वर्णन	सेनापति	2-4
12	शृंगार-वर्णन		4-8
13	,,	घनानंद	5-6
14	,,	बुधराव	8-9
15	,,	आलम	9-10
16	,,		10-14
17	,,	पद्माकर	1-2
18	,,	दूलह	3-4
19	,,	कालीदास	5-6
20	,,	देव	6-7

296/6058

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
1	शृंगार के पद	देव	3,6-7
2	भक्ति के पद	सूरत	3
3	,,		4-5,22
4	शृंगार के पद		8-10,15,16-17
5	नीति के दोहे	बिहारी, तुलसी अन्य अज्ञात	10-12
6	भक्ति के पद		12-14,18
7	सौंदर्य वर्णन	गंग कवि	15-16
8	फुटकर-वर्णन		17-18,19-24

297/4703

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
1	इश्क की गजलें (खुदा सम्बन्धी)	गालिब	45-46,53-54

क्र सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
2	इश्क की गज़लें (खुदा सम्बन्धी)	हजरतअली	46-47
3	,,	मुहम्मद औलिया	47-49
4	,,	मौला	49-53
5	,,	अनलहकमन्सूर	55 वां

301/4832

1	तरवार की भखती को छंद(त्रोटक)		31
2	गिनती का वर्णन (प्रशंसात्मक)		31-32
3	नीति के दोहे	बारहठ लक्ष्मणसिंह	32-33,65
4	,,	चरणसिंह कोठारी	33-34
5	श्रीरामजी की स्तुति-वर्णन	अग्रदास	35-36
6	,,	तुलसीदास	36-39
7	गोविन्दाष्टक		39-40
8	नीति के दोहे		40-41
9	श्रृंगार-वर्णन	पद्माकर	41
10	विभिन्न अवतारों का वर्णन	कवि ऋषभ	41-42
11	नीति के दोहे	,,	42-43,61
12	बांकीदानजी के गीत	बांकीदान	43-44
13	फुटकर वर्णन	,,	44-46,48-51 55-58 61,66-67,67-68
14	चार प्रकार के सूरों का वर्णन	,,	47-48
15	राजा बलवंतसिंह की प्रशंसा के कवित्त	हमीर	46-46
16	गीत (सावझड़ो)	,,	52-55
17	समय (भाग्य) के छंद	;,	58-59
18	;;	पद्माकार	59
19	खांडूमहाराज को मरसियो	ठा० फतेहसिंह	59-60

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
45	फुटकर दोहे आदि	हीराचन्द	88-89
46	मनुष्य जीवन का वर्णन	अनूपचन्द	88
47	फुटकर वर्णन	मिश्र कनिराम	93-94
48	,,	,,	94-98
49	घोड़ा के बत्तीस लक्षण	,,	96-97
50	कतिपय महाराजा और सामन्तों की सूचियां	,,	97-99-111,114-115
51	फुटकर कवित्त आदि	गंग कवि	118
52	,,	स्वरूपदास	118-19
53	रत्नपुर बूंदी से आया पत्र (महाराजा बलवंतसिंह की प्रशंसा में)	सूरजमल	121
54	फुटकर वर्णन	,,	128-30,133-35, 137-39,142-43
55	प्रश्नोत्तर पंचक	,,	137
56	अड़तालीस संस्कार	,,	139-40
57	षोडश संस्कार	,,	140
58	दरजे (पद) साहब लोगों के	,,	140-41
59	मलम वृन्दावनी	,,	141-42
60	संस्कृत कवित्त	स्वरूपदास	143-44
61	गुसांईजी रा सात रूप		145
62	बार्हस्पत्यमत		145-46
63	निसाणी महाराजा बलवंतसिंह जी की (बारहठ दुरगादत्त जी कही)		146-153
64	फुटकर वर्णन	महाराजा बलवंतसिंह	153-54
65	,,	खानखांना	153
66	,,	महाराजा पृथ्वीराज	154
67	पत्र बाबजी श्री स्वरूपदास जी रा नाम को	सूर्यमल्ल	157-58

क्र सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
68	बूंदी सू कागज आयो श्री हजूर महाराज को	सूर्यमल्लजी	158-62
69	ब्रह्मस्तुति	स्वरूपदास	162-65

389/4933

1	जमुना जी के पद	रसिक प्रीतम	1-2
2	,,	गोविन्द	2-4
3	,,	छीतस्वामी	4-5
4	,,	चतुर्भुजदास	6
5	,,	नंददास	7-8
6	,,	सूरदास	8-9
7	,,	कुंभनदास	9-10
8	,,	श्री विठ्ठल	11-12
9	,,	कृष्णदास	12-13
10	,,	परमानन्द	13-14

399/4709

1	नीति के दोहे		1-2
2	ढोला मारू का प्रेमवर्णन		2-4
3	शृंगार का वर्णन		4-6
4	घनानन्द को नायक वियोग	घनानंद	6
5	भक्ति के पद	लालदास	6-7
6	,,	सूरदास	7,9,10-11
7	गगरी भरन के पद	सोनादास	8
8	भक्ति के पद	,,	8-9

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
9	हठयोग के पद	कबीर	9-10
10	शृंगार का पद	कुंभनदास	11

436/4673

1	नित्य के पद	कृष्णदास	1,11,18-19
2	,,	नंददास	2,4,9,17
3	,,	रसिक प्रीतम	2,9,17,20
4	,,	परमानन्ददास	2,7,9-12,14, 15,18,19,21,22
5	,,	सूरदास	3,4,10,13,17,18, 20,21
6	,,	गोविन्ददास	3,12,13,17,18
7	,,	चतुर्भुजदास	3,5-6,19
8	,,	विष्णुदास	5
9	,,	कुंभनदास	5,8,9,12-13,15
10	,,	छीत स्वामी	8
11	,,	वल्लभ	10
12	,,	रामदास	14
13	,,	श्रीभट	20

442/5023

1	भक्ति के पद	मीरां	239-40
2	,,	कबीर	240-243,245-258
3	,,	रूपदास	243-245

443/4675

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
1	नित्य के पद	परमानन्द	1,5,6,10-13,15 16-18,20-25,29, 31,35,37
2	,,	कन्हरदास	2
3	,,	गोविन्द	3,12,19,20,22, 24,26,30,32 33
4	,,	छीतस्वामी	3,8 25
5	,,	सूरदास	3,5-7,11,27, 30,33,38
6	,,	रसिकप्रीतम	4,16 29,34,35
7	,,	नंददास	5,22,25,27,29, 33-35
8	,,	कृष्णदास	6,17,23,26,28,32
9	,,	चतुर्भुजदास	6-7,9-10,19,23, 26,29
10	,,	विष्णुदास	8
11	,,	कुंभनदास	13,24,26,31,35,37
12	,,	मुरारीदास	16
13	,,	रामदास	17-18
14	,,	आसकरन	31,34,36
15	बरषोत्सव के पद एवं ग्रन्थ	सूरदास	38-41,42-44,46, 47,50,52 53
16	,,	चतुर्भुजदास	41,42,48,49
17	,,	परमानन्ददास	42-45,49,52
18	,,	नन्ददास	43,51,54

क्र सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
19	वर्षोत्सव के पद आदि	श्रीविट्ठल	48
20	,,	रघुनाथदास	50
21	,,	कृष्णदास	53
22	,,	रामदास	53-54
23	,,	कल्याण मुकंद	54
24	,,	किशोरीदास	55
25	दान के पद	कुंभनदास	55-59,60
26	,,	सूरदास	59,60
27	,,	भासकरन	60
28	,,	परमानंद	60
29	,,	गोविन्ददास	60-62
30	वामन के पद	सूरदास	62-63
31	,,	परमानन्ददास	62-63
32	सांझि के पद	श्यामघन	63-65
33	,,	आनंदघन	65
34	,,	व्यास	65-66
35	नवविलास के पद	रसिकदास	66-69
36	कडखा के पद व दशेरे के पद	नंददास	69
37	,,	सूरदास	69-70
38	,,	हरिनारायण	70
39	,,	कुंभनदास	70
40	,,	गोविन्द	70
41	,,	चतुर्भुजदास	70
42	रास के पद	कृष्णदास	71,72
43	,,	व्यास	72
44	,,	कुंभनदास	72

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
120	मलार के पद	गोविन्द	117
121	,,	कुंभनदास	117-18
122	हिंडोरे के पद	कृष्णदास	118-19,122
123	,,	गोविन्द	119-20
124	,,	कुंभनदास	119
125	,,	सूरदास	120
126	,,	नंददास	121-22
127	,,	परमानंददास	121
128	,,	रसिक प्रीतम	121-22
129	विभिन्न पद	कुंभनदास	122
130	,,	छीतस्वामी	122
131	,,	परमानंददास	122-23
132	,,	आसकरन	123

447/6017

1	भक्ति के पद	व्यास	19-21
2	,,	हितहरिवंश	2-3,21-24
3	,,	कृष्णदास	26
4	,,	रसिकदास	1,3-4,6
5	,,	सूरदास	1
6	,,	चतुर्भुजदास	5
7	,,	हरिदास	5

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
		448/6017	
1	भक्ति के पद	हितहरिवंश	26-27,39-41,47, 55,56,61,62,65-67, 70,79,82 131
2	,,	नंददास	27,30,36,42,43,45, 47,50,54-55,64, 69,70,86,130
3	,,	बिहारीदास	27,28,34,36-37,79
4	,,	श्रीभट	29
5	,,	बिट्ठलविपुल	29,62-63
6	,,	श्रीवल्लभ	29,32,37, 54,74,81
7	,,	सूरदास	31,33,43,44,48-49,52,74,78,130
8	,,	नागरीदास	32-33,35,71
9	,,	चतुर्भुजदास	36
10	,,	जगन्नाथ	38-39-51-52
11	,,	गंगाराम	39
12	,,	व्यास	40,65,70,72-73
13	,,	लछीराम	41.58-59,74,76
14	,,	आसकरन	44
15	,,	रामराय	42,45
16	,,	मदनगोपाल	45,60
17	,,	कान्हरसिक	46
18	,,	मुरारीदास	47,50
19	,,	रिषिकेश	51

क्र सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
20	भक्ति के पद	हरिदास	57,58,64,77,81, 87,128
21	,,	मनोहर	59
22	,,	गोविन्द	60,129
23	,,	परमानन्द	64,68
24	,,	कृष्णदास	69,130,133
25	,,	केवलराम	75
26	,,	तानसेन	75,132
27	,,	आनंदघन	77,128,129
28	,,	शिवराम	80
29	,,	सुन्दर	82,133-134
30	,,	मीरां	82-83
31	हितरूपकृत्यभाषा	हितरूप	83-85
32	हिमरितु के पद	हितहरिवंश	85-86
33	राम जन्म बधाई	अग्रदास	87-88,90-91
34	,,	नददास	89
35	,,	तुलसीदास	89,91
36	,,	सूरदास	90
37	,,	गोविन्ददास	90
38	प्रियाजू की बधाई	हितहरिवंश	92-93,96-109
39	,,	व्यासदास	93-94,111-12
40	,,	किशोरीदास	95-103
41	,,	नागरीदास	104,106-108
42	,,	सूरदास	105,112-13,115-16
43	,,	गरीबदास	109-10,113
44	,,	सुन्दर	114,115
45	,,	कृष्णदास	116

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
46	रथजात्रा के पद	वल्लभ	117,118
47	,,	नागरीदास	117
48	,,	हितहरिवंश	118-120
49	,,	विट्ठलविपुल	120-122
50	,,	सूरदास	122
51	,,	हरिदास	122,124-25,128
52	,,	कृष्णजीवन	122-23
53	,,	चतुर्भुज	124
54	,,	व्यास	126-127
55	हिंडोरा के पद	हितहरिवंश	134-139,146-50, 154,161 164
56	,,	कृष्णदास	135-136 151-52 158,160-64
57	,,	बिहारीदास	139-40
58	,,	हरिदास	140-47,159-60
59	,,	वल्लभरसिक	141-45 (144वां अप्राप्त)
60	,,	गोकुलनाथ	152
61	,,	रामराइ	153
62	,,	सूरदास	153-54 157,160
63	,,	कुंभनदास	154-157
64	,,	परमानंददास	156-57
65	,,	गोविन्द	159
66	,,	धोंधी	161
67	,,	दयासखी	161-162
68	,,	कल्यान	162
69	,,	सुन्दर	163

449/6057

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
1	भक्ति के पद	सूरदास	1,6-11
2	,,	परमानंददास	1,2,10
3	,,	विट्ठल	2,10
4	,,	हितहरिवंश	2,13-14
5	,,	श्रीभट्ट	2-3
6	,,	व्यास	3-5,11
7	,,	नंददास	5,7,9,12,19
8	,,	चतुर्भुजदास	5-6
9	,,	व्रजनिधि	7
10	,,	वल्लभ	9
11	,,	बैजुबावरा	10
12	,,	तानसेन	10-11,14,16,18
13	,,	आनंदघन	11,15-17,20,22
14	,,	भगवान	11-12
15	,,	छीतस्वामी	12-13
16	,,	नागरीदास	14,18-19 22
17	,,	लछीराम	14
18	,,	सेवाराम	15
19	,,	गोविन्द	16
20	,,	धीरज	17
21	,,	तुलसीदास	17-18
22	,,	हरिदास	18
23	,,	सूरज	19

क्र सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
	462/4896		
1	नीतिवर्णन	केशोराम	64-66
2	,,		66-71
3	भजन	सुन्दरदास	71-73
4	,,	तुलसीदास	66,73-76
	465/6050		
1	राधासौन्दर्य-वर्णन		1-4
2	शृंगार-वर्णन		2-3
3	भक्ति के कवित्त		4
4	,,	नंदराम	5
5	,,	रसखान	5-7
6	,,	पद्माकर	7-8
7	,,	किरपालीन	8-9
8	,,		9-12
9	,,	सूर	12-13
10	सांसारिक का वर्णन	कबीर	13-14
	470/5995		
1	भजन	जुगतानन्द	46
2	,,	चरणदास	47-50,51-55
3	,,	मीरां	56-57
			(गुटके के प्रारभ में 2 पत्र मीरां सम्बन्धी हैं)

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक

471/6124

1	अद्भुत रस के पद	हितहरिवंश	1-2
2	दिवारो के दिन की लीला	विजयसखी (हितहरिवंश)	3-4
3	सिद्धेश्वरी-लीला	कृष्णदास	4
4	,,	परमानंद	4-6
5	स्तुति (राधा की)	हितहरिवंश	6
6	गोपाष्टमी-लीला	हितहरिवंश	7-8
7	श्रीजी को आंखमिचौनी		9-10
8	धनतेरस-लीला	रूपलाल	10-11
9	,,	हितहरिवंश	11
10	द्वितीय धनतेरस	नागरीदास	11-12
11	श्रीजी को चन्दखेलन	विजयसखी	12-14
12	नवीन दधिमंथन-लीला	चतुर्भुजदास	15-16
13	,,	सूरदास	15
14	,,	नंददास	15
15	,,	कृष्णदास	16
16	ठाकुरजी-प्रियाजी मिलके बैटे ता समय के पद	हरिदास	17
17	फुटकर पद	विजयसखी	18-20
18	,,	बंशीअली	21
19	,,	सूरदास	21

474/4678

1	लालजू की बधाई	हितहरिवंश	1-4,6-7,10 11,17 19-21,23-25

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
2	लालजू की बधाई	गरीबदास	4
3	,,	मानदास	4
4	,,	सूरदास	5,8-9,13-14,24
5	,,	रामराय	5,22-23,26
6	,,	चतुर्भुजदास	5-7,20,189
7	,,	परमानंददास	5-6,11-12, 17-20,26
8	,,	आनंदघन	7-8,16
9	,,	अग्रदास	9-10
10	,,	व्यास	11-14
11	,,	जनगोविन्द	12
12	,,	रसिक	13-14
13	,,	माधोदास	15-16,20-21
14	,,	दिव्यगुपाल	16-17
15	,,	कृष्णदास	20,56
16	,,	हरिनारायण	20
17	,,	नंददास	27
18	लाडलीजी की बधाई	गरीबदास	31
19	,,	हितहरिवंश	31-32,35,37-39; 56-57
20	,,	कृष्णदास	33-34
21	,,	कुंभनदास	34
22	,,	गोवर्धन	34
23	,,	चतुर्भुज	34-36
24	,,	नंददास	36-37
25	,,	कल्यान	39
26	,,	व्यास	39-40
27	,,	गदाधर	40
28	,,	नागरीदास	40
29	,,		41-44

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
49	दोपदान गोवर्धन के पद	परमानंददास	67
50	,,	कुंभनदास	67-68
51	,,	विट्ठल	69
52	चौपरि के पद	विट्ठल	69-70
53	हिंडोरा के पद	बिहारीदास	70
54	,,	हरिदास	70
55	,,	रसिकदास	70-71
56	,,	हितहरिवंश	71 75,78-79
57	,,	नागरीदास	71
58	,,	सूरदास	71,74,78-79
59	,,	नंददास	72,77-78,80-81
60	,,	वल्लभ	72-74
61	,,		75-76
62	,,	कल्यान	79
63	,,	कृष्णदास	79-80
64	,,	घोंधी	80
65	प्रार्थना के पद	कृष्णदास	82
66	रास के पद	विट्ठल	85.176-77
67	,,	विहारीदास	85-86,177-78
68	,,		87-90
69	,,	जगन्नाथ	90
70	,	कृष्णजीवन	91,93-94
71	,,	रामराय	101,106
72	,,	आनंदघन	102-105,115
73	रामलीला के पद	अग्रदास	102
74	शृंगार के पद	तानसेन	102.104,139,181

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठांक
98	वात्सल्य-वर्णन के पद	तुलसीदास	144
99	भक्ति के पद		144-45
100	फुटकर श्लोक	जयदेव	146
01	भक्तमाल के पद	माधोदास	146
110	भक्ति के पद	सुन्दरदास	147-48
103	होली के पद		148
104	रामविवाह के पद		149
04	भक्ति के पद	सूरदास	149-150
106	,,	श्रीभट	169
107	,,	रतनसखि	169
108	,,	सूरदास	169-70
109	,,	माधोदास	170
10	,,	अग्रदास	170
11	,,	लछीराम	171
11	,,	नंददास	172,182-118
13	,,	हरिदास	172,175-76
114	,,		173-74
15	,,	तुलसीदास	174
16	शृंगार के पद (राधाकृष्ण)	गोविन्ददास	183
117	,,	सिंहा	184
118	,,	कुंभनदास	185
119	,,	शिवराम	185-86
120	कंस-वध के पद	ब्रह्मदास	190
121	शृंगार के पद	गंगाराम	190-9

ग्रन्थकर्त्ता एवं टीकाकारानुक्रमणिका

परिशिष्ट (३)

———